VOLUME - 5
ISSUE - 2
December - 2021

ISSN No. : 2456-2424
Impact Factor = 3.01

EMERGING RESEARCH JOURNAL

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

JABALPUR PUBLIC COLLEGE
RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

49, Karmeta Patan Road, Ahead of Radio Station,
Near R.T.O. Office, Jabalpur - 482002 (M.P.)
E-mail : erj.jpc@gmail.com
Website : www.erjjpc.org.in, www.jpc.org.in

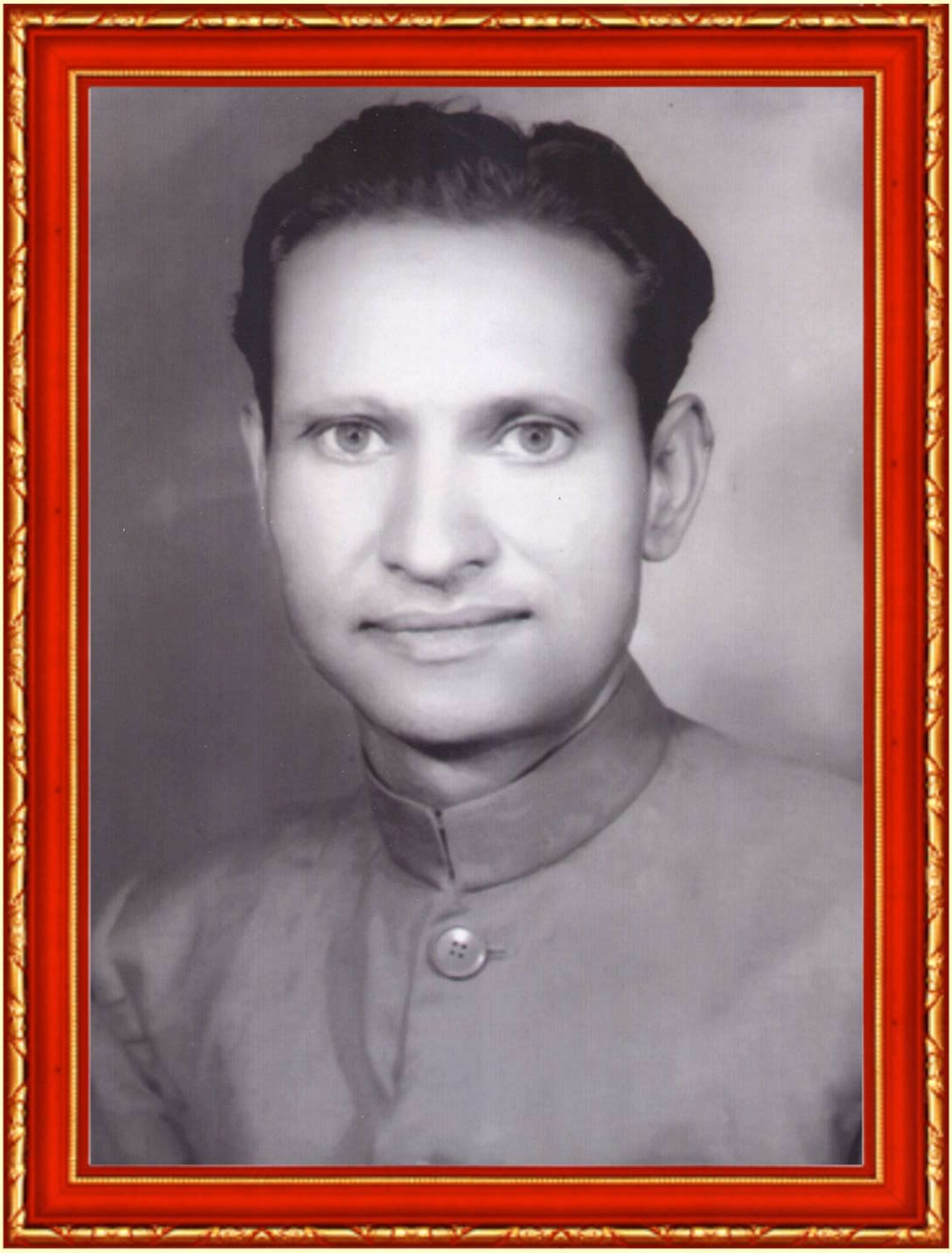

LATE SHRI SHIV NARAYAN VERMA

ISSN No. : 2456-2424
Impact Factor = 3.01

Emerging Research Journal

Vol. - 5 | Issue - 2 | December 2021

A Multi-Disciplinary International Research Journal

Emerging Research Journal is a high quality Journal devoted to the field of science, social science, education, commerce & Management. "Emerging research Journal" is an official Publication of the national society of Shiv Narayan Foundation. The Journal publisher original records, review articles, short communications, scientific survey, etc. Emerging Research Journal provides a forum for all above discipliner for development and research techniques and produces of laboratory investigations. It aims to Provide a highly readable and valuable addition to the literature which will serve as an indispensable reference for years to come. The Journal's core aims therefore, is to provide a platform for the researchers, scholars and research findings with the rest of the world there by facilitating informed decision which will improve society as a whole.

ISSN No. : 2456-2424 : Dec. 2021, Volume-5, Issue-2 / Impact Factor = 3.01

G.K. JUDAH
Retd. Principal
Christian H.Sec. School, Jabalpur

RESOURCE PERSON
Board of Sec. Education, Bhopal
Mob. : 9754588896

Message

Now a days the emphasis has been given on selected educational hub so the endeavour of this emerging research journal continuously and regularly providing ample opportunities to the students, researcher to develop language and computing skills conceptual understanding environmental awareness and the vital ingredients of 'Learning Concept'.

I will all out success to the dynamic manager Mr. Praveen Verma and dedicated principal & staff members to published such a esteemed joural which is playing a key role in spreading its fragrance in all field of education. May the alimighty lord shower thy abundant blessings upon them and grant them thy knowledge wisdom and understanding.

God bless "Emerging Research Journal" Shiv Narayan Foundation and Jabalpur Public College.

With Blessing and Greetings.

Gyanendra Kumar Judah

PATRONS

Shri Praveen Verma
Director, Jabalpur Public College
Jabalpur, (M.P.)

Dr. Kapil Dev Mishra
Vice Chancellor, RDVV
Jabalpur (M.P.)

Dr. Balbir Singh
USA
bsingh1932@msn.com

Father G.V. Vazhan Arasu
Principal, St. Aloysius College,
Jabalpur (M.P.)

Prof. S.K. Mehta
Retd. Principal,
State Institute of Science Education (SISE)
Jabalpur, Madhya Pradesh,
7587523884

Shri G.K. Judha
Retd. Principal,
Christian H.S. School, Jabalpur
Madhya Pradesh
9754588896

EDITOR IN CHIEF

Shri Bhupendra Nigam

EDITOR

Dr. Nivedita Paul

MANAGING EDITORS

Dr. Chitranshi Verma **Dr. P.L. Mishra** **Dr. Shweta Pandey**
Dr. Sudha Dwivedi **Dr. Priyanka Tamrakar**

ADVISORY BOARD

Dr. K.M. Bhandarkar, Gondia (M.H.)
Dr. V.K. Gupta, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. V.M. Shashi Kumar,
Thiruvananthapuram, Kerala
Dr. V.K. Gupta, Kurukshetra (Haryana)
Dr. Damodar Jain, Bhopal (M.P.)
Dr. Prem Khatri, Nepal
Dr. Ashutosh Dubey, Jabalpur (M.P.)
Dr. Arun Shukla, Jabalpur (M.P.)
Dr. Raina Tiwari, Jabalpur (M.P.)
Dr. Nilima Bhagwati, Assam
Dr. K.K. Sharma, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. Alka Nayak, Dean (Education), R.D.V.V.
Jabalpur (M.P.)
Dr. Sunil Pahwa, Principal,
G.S. College, Jabalpur (M.P.)
Dr. S.D. Singh, Mathura (U.P.)
Dr. Bhawana Soneji, Jabalpur (M.P.)
Dr. Rashmi Singh, Jabalpur (M.P.)

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers, Editors in Chief and the members of the Editorial Board do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

अनुक्रमणिका

क्र. पेज नं.

शिक्षा / Education

1. **श्रीमती भारती शर्मा** 1–6
विज्ञान शिक्षा में नवाचारी प्रथाएँ

2. **डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव** 7–12
विभिन्न विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

3. **डॉ. रश्मि गुप्ता** 13–18
जबलपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

4. **डॉ. सुधा द्विवेदी** 19–21
शिक्षक शिक्षा में प्रशासन की भूमिका (नई शिक्षा नीति के अंतर्गत)

5. **डॉ. प्रियंका ताम्रकार एवं प्रो. निवेदिता पॉल** 22–25
कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों पर विद्यालयीन वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

6. **डॉ. (श्रीमती) सुषमा पिल्लै** 26–28
शिक्षा में उत्कृष्टता और शिक्षक शिक्षा

7. **डॉ. रश्मि शुक्ला** 29–32
उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जीवन शैली और शैक्षिक उपलब्धि पर वर्तमान सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

8. **श्रीमती प्रियंका चौहान** 33–39
जबलपुर शहर के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन

9 **Mr. Kamlesh Dahikar** 40-44
A Study of Cyber security Challenges and its Emerging Trends on latest Technology

प्रबंधन / Management

10. **Dr. Nikita Shukla** 45-54
Analysis of Investment in Mutul Funds in India

11. **Miss Neha Aggarwal** 55-62
FDI In Education Sector of India-Impact And Benefits.

हिन्दी / Hindi

12. **श्री प्रवीण कुमार** 63–65
फीजी में हिन्दी के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन

13. **श्री रामलाल कुर्मी** 66–71
रागों की भाषा

ललित कला / Fine Art

14. **डॉ. साजन कुरियन मैथ्यू** 72–76
रेखा–चित्रगत आशुलिपि

15. **श्रीमती शिवानी जैन** 77–79
लोककला हमारी संस्कृति की संवाहक

16. **श्री अमित कुमार सिन्हा** 80–84
म.प्र.के चित्रित शैलाश्रय

विज्ञान शिक्षा में नवाचारी प्रथाएँ

*श्रीमती भारती शर्मा

आलेख सार

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो अधिगम को सुगम बनाती है। साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्य, विश्वास की प्राप्ति कराती है। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को साक्षर करना ही नहीं है वरन् उन्हें सृजनात्मक, ज्ञानी, समाज और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी भी बनाना भी हैं। छात्रों की सफलता अपने अध्यापकों पर और उनके द्वारा अपनाये गए नवाचारी प्रविधियों पर निर्भर करती हैं। आज के शैक्षणिक परिवेश में जिस प्रकार 'नवाचार' की अवधारणा अपने व्यापक रूप में प्रकट हुई है, 'नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है वरन् किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है।' आज शिक्षण पद्धतियों में बदलाव करके, उसमें नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ प्रयोग में लाकर छात्रों से मधुर बर्ताव, छात्रों के प्रति सुखद व सकारात्मक व्यवहार छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों में बढ़ावा तथा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। इस लेख में यह बताने का प्रयास किया है कि जब अध्यापक विज्ञान शिक्षण में नवाचारी युक्तियों को अपनाते हैं तो छात्र पढ़ने में सक्रिय भागीदारी करते हैं, उन्हें पाठ रुचिकर लगता है, जिज्ञासा पैदा होती है, तार्किक क्षमता बढ़ती है, साथ ही यह शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होती है।

कुंजी शब्द–विज्ञान शिक्षा, नवाचारी प्रथाएँ

प्रस्तावना

'विज्ञान एक विषय नहीं एक व्यवहार है जिसके विभिन्न चरण व पद हैं जिन्हें प्राप्त करने के बाद एक मनुष्य विज्ञान की समझ बना पता है।' विज्ञान एक ऐसा विषय है जिससे मनुष्य ब्रह्मांड के बारे बहुत कुछ जान सकता है। शिक्षक, विज्ञान के विषयों के शिक्षण से छात्र को वैज्ञानिक तथा तकनीकी ऊँचाइयों पर ले जा सकता है। विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों को विज्ञान शिक्षक ही व्यवहार में ला सकते हैं। वैश्विक स्तर पर विज्ञान शिक्षण की आवश्यकता को जानने वाले उच्च शिक्षित तथा अनुभवी विज्ञान शिक्षकों के द्वारा ही छात्रों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी मूल्यों का ज्ञान दिया जा सकता है।

सामान्य रूप से देखा जाता है कि विज्ञान अध्ययन पाठ्यपुस्तक में दी गई विषय वस्तु तक ही सीमित रह जाता है व इसके आगे की जाने वाली गतिविधियों अथवा इस ज्ञान से अपेक्षित व्यवहार से तारतम्य टूट जाता है, जिससे विज्ञान अध्ययन केवल परीक्षा पास करने पर सीमित हो जाता है। यहाँ आवश्यकता है कि विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों, इन्हें प्राप्त करने हेतु किए जा रहे प्रयासों, उपलब्ध साधनों एवं प्राप्त हो रहे परिणामों के बीच का अन्तर कम किया जाए।

विज्ञान की विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने, बच्चों में रूचि जागृत करने व इसे बनाए रखने के लिए विज्ञान को दैनिक जीवन से जोड़ना आवश्यक है जिससे कि बच्चों में खोज की प्रवृति विकसित हो व बच्चे इसके लिए अनवरत् प्रयास करते रहें व सीखते रहें। कक्षा में क्या पढ़ाना है, क्यों पढ़ाना है व कैसे पढ़ाना है, कौन सी नवाचारी शिक्षण रणनीतियाँ अपनानी होंगी ? कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर यदि एक कक्षा में जाने से पहले यदि शिक्षक के पास मौजूद है तो वह नीरस से नीरस व् कठिन से कठिन विषय को भी रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकता है तथा कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा शिक्षण कार्य

***सहायक प्राध्यापक, राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान एवं अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.**

कराया जा सकता है।

विज्ञान शिक्षा के उद्देश्य सीधे इसकी छः वैधताओं के मापदण्डों से जुड़े हुए हैं। ये वैधताएँ हैं – संज्ञानात्मक, विषयवस्तु, प्रक्रिया, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय एवं नैतिक। अतः यह छात्र को इस लायक बना दे कि वह –

- अपने संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप विज्ञान के तथ्यों व धारणाओं को समझने और इसे प्रयुक्त करने के काबिल हो जाये।
- उन तरीकों और प्रक्रियाओं को समझ सकें जिनसे वैज्ञानिक ज्ञान का सृजन किया जा सकें तथा इसका वैधीकरण भी किया जा सकें।
- विज्ञान के ऐतिहासिक एवं विकास संबंधी परिप्रेक्ष्य को समझ सके। साथ ही विज्ञान को एक सामाजिक उद्यम की तरह देख सके।
- स्वयं को स्थानीय तथा वैश्विक परिवेश से जोड़ सके और विज्ञान प्रौद्योगिकी तथा समाज के बीच की अंत:क्रिया को व उपजे मुद्दों को समझ सके।
- रोजगार की दुनिया में पैर टिका पाने के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक और व्यावहारिक कुशलता हासिल कर सके।
- अपनी स्वाभाविक जिज्ञासा, सौंदर्यबोध और रचनात्मकता से विज्ञान व प्रौद्योगिकी को परिभाषित कर सके। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहयोग, जीवन के प्रति सरोकार और पर्यावरण सुरक्षा जैसे मूल्यों की महत्ता को समझ सके। वैज्ञानिक स्वभाव विकसित करना सीख जाये अर्थात् वस्तुनिष्ठता, आलोचनात्मक सोच और भय एवं अंधविश्वास से मुक्ति सीख जाये।

विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों में तत्संबंधित कार्यात्मक ज्ञान तथा कौशलों का विकास करने के लिए अक्सर प्रदान करता है। ये कौशल विभिन्न वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से सम्बद्ध होते हैं जो उन्हें विज्ञान और तकनीकी में प्रगति करने के लिए प्रेरित करते हैं। विज्ञान शिक्षण ऐसा हो कि वह छात्रों में वैज्ञानिक कौशल, अभ्यासों को प्राप्त करने का उत्साह बढ़ा दें।

अतः विज्ञान शिक्षण ऐसा हो जो छात्रों में स्व–अनुशासन, वैज्ञानिक साक्षरता, जिम्मेदारी अंतर्विष्ट करा दे। यह सब कुछ प्राप्त करने के लिए विज्ञान के अध्यापकों को अधिगम प्रक्रियाएँ कुछ इस प्रकार की अपनानी होंगी जो छात्रों में रुचि उत्पन्न कर सके। विज्ञान शिक्षण उबाऊ व बोझिल न लगकर रोमांचकारी हो। विज्ञान शिक्षण किसी भी समाज के विकास और अभिवृद्धि के लिए एक इंजन की भांति होता हैं। विज्ञान शिक्षण के सभी उद्देश्यों को गवाचारी अभ्यासों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

नवाचार (नव+आचार) अर्थात नया विधान। इसका अर्थ किसी उत्पाद प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन लाने से है। 'किसी उपयोगी कार्य के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता हैं। नवाचार कोई नया कार्य करना ही मात्र नहीं है वरन् किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है'। (प्रोफेसर उदय पारिख एवं टी.पी. राव)

व्यक्ति और समाज में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा को समयानुकूल बनाने के लिए शैक्षिक विधाओं में नवाचार ने अपनी उपयोगिता और सार्थकता सिद्ध कर दी है 'शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता बल्कि उन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित तरीके से इन्हें प्रयोग में लाना होता है ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित

परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाये रख सके卐-- ट्रायटेन

इस आकार नवाचार एक नवीन विद्या है, एक व्यवहार है अथवा वस्तु या फिर कोई नया तरीका है जो नवीन और वर्तमान का गुणात्मक स्वरूप है।

हमारे सामने एक बात आती है कि नवाचार की आवश्यकता क्यों है? यदि हमें अपने छात्रों की उन्नति करनी है तो हमें छात्रों का नामांकन, उपस्थिति और ठहराव बढ़ाने के साथ-साथ ही रोचक शिक्षण की पद्धतियों में परिवर्तन लाना ही होगा। आज शिक्षण पद्धतियों में बदलाव छात्रों को विद्यालय लाने के तरीकों में परिवर्तन आवश्यक है। शिक्षक स्वतंत्रता पूर्वक जो भी पढ़ायेंगे/ बच्चों को सिखायेंगे वह निश्चित तौर पर नवाचार के दायरे में आयेगा क्योंकि दो व्यक्तियों की सोच कभी भी एक सी नहीं हो सकती। जो भी संसाधन उपलब्ध हैं उनका उचित नियोजन करके अध्यापक अपनी कक्षा की गतिविधियों में 'नवाचार' ला सकते है।

विज्ञान शिक्षण में नवाचारी पद्धतियों को निम्नलिखित उप शीर्षकों के अंतर्गत व्याख्या की जा सकती है--

विज्ञान शिक्षण के पाठ्यचर्या में नवाचार

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन)(1952-53) ने पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, 'पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से ही नहीं है जो विद्यालय में परंपरागत ढंग से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें विद्यालय की सभी गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

पाठ्यचर्या ऐसी हो जो केवल विषय-वस्तु पर ही जोर न डालें बल्कि विज्ञान सीखने के तरीकों को भी प्रकाश में लाये क्योंकि ये ज्यादा स्थायी होती हैं और छात्रों को विज्ञान व तकनीकी की लगातार तेजी से बदलती दुनिया से सामना करने में कारगर होती हैं। तथ्य, सिद्धान्त और विभिन्न परिघटनाओं को समझने के लिए विषय-वस्तु का उपयोग विज्ञान की नब्ज है। यह सभी नवाचार से ही संभव है।

विज्ञान शिक्षण तथा अधिगम में नवाचार

विज्ञान शिक्षण विधियों का उद्देश्य बालकों को केवल मात्र कुछ बातों का ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है अपितु अध्यापक एवं छात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों में सजीवता लाना भी हैं।

अध्यापक ऐसी शिक्षण विधियों का चयन करे जिससे छात्रों की आवश्यकता, रुचि, दृष्टिकोण, व्यक्तिगत विभिन्नताएँ आदि को ध्यान में रखा जाये। 'शिक्षण विधि ऐसी हो जिससे छात्रों की विषय में रुचि बढ़े। इसके लिए अध्यापक विभिन्न नवाचारी रणनीतियाँ अपनाएँ जो छात्रों में समायोजन बढ़ा सके, मानसिक विकास कर सके, छात्रों की संज्ञानात्मक तथा सामाजिक समस्याओं को समझ सके तथा छात्रों की विषयगत अधिगम के लिए प्रेरित कर सके' [न्वाचुक 2009]

विज्ञान के प्रभावशाली शिक्षण के लिए तथा छात्रों की मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक स्तर की जानकारी विज्ञान अध्यापक के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। विज्ञान शिक्षण के लिए नवाचारी प्रयोग, रणनीतियाँ प्रयोग में लानी होंगी जिससे छात्रों में रुचि, जिज्ञासा बढ़े तथा सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास हो।

दी गई चुनौतियों के उत्तर ढूँढने की प्रक्रिया में बच्चों द्वारा किये गये पूरे प्रयास - अवलोकन/ प्रयोग आदि को शिक्षक अपनी अवलोकन पुस्तिका में लिखते जाएँ। बच्चों की अवलोकन/प्रयोग पुस्तिका देखते समय शिक्षक यह ध्यान रखें कि यदि बच्चों का अवलोकन मानक उत्तर से भिन्न है तो शिक्षक उसे गलत कहने से बचें। बेहतर यह होगा कि शिक्षक

बच्चों को साथ मिलकर मानक उत्तर से विचलन के कारणों का पता लगाएँ। वैज्ञानिक प्रयोग के परिणाम बहुत सारे कारकों पर निर्भर करता है। उक्त प्रक्रिया को करने से बच्चों को खुद की समझ बनाने में बहुत सुगमता होगी तथा वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के व्यावहारिक पक्ष से भी अवगत हो सकेंगे।

बच्चों के समक्ष शिक्षक यह स्पष्ट करें कि विज्ञान के नियमों को कभी भी स्थिर व सार्वजनिक सत्य की तरह नहीं देखा जा सकता है। यहाँ तक कि विज्ञान के सार्वभौम और सत्यापित समझे जाने वाले सत्यों को भी अन्तरिम ही माना जाता है। नये प्रयोगों और विश्लेषण के आधार पर उनमें बदलाव होने की संभावना हमेशा ही रहती है।

बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, खोजी प्रवृत्ति के विकास, तथ्यों के प्रेक्षण, विश्लेषण आदि के विकास के लिए कक्षा-कक्ष कौन से तरीके अपनाये जा सकते हैं ? विज्ञान में खोज और जिज्ञासा का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे एक सामान्य समस्या समाधान की प्रक्रिया के साथ तुलना करते हुए समझा जा सकता है।

नवाचार द्वारा बच्चों में जिज्ञासा पैदा कर उनका सीखना आसान कर सकते हैं और तब पायेंगे कि काम आसान होता जा रहा है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को विज्ञान सम्बन्धी अवधारणाओं, सैद्धान्तिक तथ्यों की समझ विकसित करने हेतु उपकरण व सामग्री क्रय करने की अधिक आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है, बल्कि परिवेश में उपलब्ध सामग्री के साथ ही बच्चों के काम करने की आवश्यकता है। दसवीं तक की विज्ञान की पाठ्यचर्या को मुख्यत: विद्यार्थियों में विज्ञान, तकनीकी और समाज के अंतर्संबधों के प्रति जागरूकता लाने की ओर उन्मुख होना चाहिए साथ ही पर्यावरण व स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के साथ व्यावहारिक कुशलता भी विकसित होना चाहिए।

इस प्रकार छात्रों में रुचि, जिज्ञासा बढ़ेगी तथा सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होगा।

नवाचार शिक्षण पद्धतियाँ (Innovative Teaching Practices)

वर्तमान समय में शिक्षा पूर्णतया नि:शुल्क एवं बालकेन्द्रित है। हमारी सरकार के द्वारा विद्यालय को सभी भौतिक सुविधायें उपलब्ध करायी जा चुकी हैं, जैसे - विद्यालय भवन, विद्युत व्यवस्था, पाठय-पुस्तकें, स्कूल यूनीफार्म, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री के लिए धनराशि आदि।

यह सत्य है इन सभी सुविधाओं से विद्यालयों में छात्र नामांकन संख्या में अति वृद्धि हुई है। परन्तु गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहाँ संख्यात्मक वृद्धि होती है, वहां गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनाई जाये। इसमें से कुछ इस प्रकार हैं -

1. प्रयोगशाला विधि - यह स्वयं करके सीखने के सिद्धांत पर आधारित है।
2. अनुसंधान विधि - इससे छात्रों में खोज प्रवृत्ति का उदय होता है।
3. समस्या समाधान विधि - इससे में छात्रों में विचार तथा निर्णय शक्ति का विकास होता है।
4. प्रयोग प्रदर्शन विधि - इससे शिक्षण कराने में बालकों में करके सीखने के गुण का विकास होता हैं
5. प्रयोजना विधि - इसमें कोई कार्य बालकों के सामने समस्या के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और उस समस्या को बालक स्वयं हल करने का प्रयास करते हैं।
6. प्रक्रिया विधि - बाल केन्द्रित विधि है जिसमें बालक को प्रधानता दी जाती हैं। बालक स्वत: स्वाभाविक रूप से

क्रियाशील होता हैं।

7. सम्प्रत्यय निर्माण – यह किसी देखी गई वस्तु की मानसिक प्रतिमा के द्वारा वस्तुओं, घटनाओं तथा गुणों का उल्लेख करना होता हैं।

8. ब्रेन स्टॉरमिंग – इसमें छात्रों को समस्या दे दी जाती है और उनसे कहा जाता है कि वे समस्या पर वाद––विवाद कर उनका विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन करें।

9. प्रोजेक्ट विधि – प्रोजेक्ट (योजना) विधि अनुभव केन्द्रित होती है। यह बालकों के समाजीकरण पर विशेष बल देती है।

10. केस स्टडी विधि – शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को शिक्षण में महत्व देते है।

11. विज्ञान शिक्षण के लिए मॉक (MOOC) एक नई अधिगम की विधि हैं। यह सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देती है। जिसमें छात्र वीडियो देखता है और पारस्परिक समूहों में अभ्यास करता है।

इन नवाचारी शिक्षण पद्धतियों से शिक्षण कार्य करने में अध्यापक एवं बच्चों दोनों के लिए ही शिक्षण अधिगम एक रूचिपूर्ण प्रक्रिया बन सकेगी। इन पद्धतियों में शिक्षक एक सलाहकार/सुगमकर्ता के रूप में कार्य करेया तथा छात्र को कार्य करके सीखने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के जो प्रमुख उद्देश्य हैं, कि बच्चों के पुस्तकीय ज्ञान को उनके बाहरी जीवन से जोड़ा जाये, यह उद्देश्य भी इन पद्धतियों से प्राप्त हो सकेगा। भयमुक्त वातावरण में छात्र स्वतंत्र होकर अपना कार्य सुगमता से कर सकता है जिससे उनमें अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने, स्व–मूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविश्वास आदि कौशलों का विकास हो सकेगा।

- सूचना एवं संचार तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर खोले हैं। कम्प्यूटर और इंटरनेट के बढ़ते हुये उपयोग से विज्ञान शिक्षण में सुगमता हुई है। विभिन्न भाषाओं में गुणवत्ता पूर्ण सॉफ्टवेयर उपलब्ध करने से शिक्षण में और भी आसानी हो जाएगी।
- डायरेक्ट टू होम DTH द्वारा विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से छात्र विशेषज्ञों से आवश्यक प्रश्न पूछ सकते हैं, भाषण सुन सकते हैं और बहस, प्रश्न उत्तर सत्र में हिस्सा ले सकते हैं। कुछ चुने हुए स्कूलों में टॉक टू बैक व रीसीव ओनली टर्मिनल्स शुरू किए जा सकते हैं जिनका पड़ोस के स्कूल भी उपयोग कर सकते हैं।
- विज्ञान संचार में सामुदायिक रेडियो का महत्व है। कुछ चुने हुए स्कूलों में निम्न रेंज पर सामुदायिक रेडियो स्टेशन शुरू किए जा सकते हैं और स्थानीय जरूरतों के मुताबिक छात्रों को विज्ञान कार्यक्रम बनाने व प्रसारित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। एडू सेट का ऑडियो चैनल इन कार्यक्रमों को दूर–दूर तक प्रसारित कर सकता हैं। इस गतिविधि में सहभागिता, विज्ञान सीखने के लिए बड़ी भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष –

नवाचारी प्रयोग छात्रों और अध्यापकों के लिए शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया के लिए सशक्त उपकरण हैं। इसके द्वारा छात्र सक्रिय रहता है तथा यह करके सीखने पर जोर देता है। इस प्रकार के नवाचारी प्रयोग, विधियाँ विज्ञान शिक्षण की पाठ्यचर्या, अध्यापन, अधिगम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह गतिविधि आधारित तथा बाल केन्द्रित शिक्षा पर जोर डालती है जैसे– माइंड मैप, केस स्टडी, समस्या आधारित अधिगम, जिससे छात्र गतिविधियों द्वारा स्थायी ज्ञान प्राप्त कर

सकेगा। साथ ही सूचना, व संचार तकनीकी का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। अत: विज्ञान शिक्षकों को इनका प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए, जब अध्यापक तथा छात्र नवाचारी प्रयोगों को पूर्ण रूप से विज्ञान शिक्षण और अधिगम में शामिल कर लेंगे तो निश्चित रूप से छात्रों का उपलब्धि स्तर बढ़ेगा।

संदर्भ :-

1. कुलश्रेष्ठ ए के, कुलश्रेष्ठ एन के, (2011), विज्ञान शिक्षण, मेरठ, आर लाल बुक डिपो
2. Oyelekan, oloyede Solomon, igbokwe emoyoke faith olorundare, adekunle Solomon, "Science Teachers' Utilisation of Innovative Strategies for Teaching Senior School Science in llorin, Nigeria", Malaysian online Journal of Educational Sciences, Vol 5-issue 2, 2017
3. R. Jayashree, "A Study on Innovative Teaching Learning Methods for Undergraduate Students", International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI), Vol.6, no. 11, 2017, pp.32-34
4. यादव, नरेश (प्र.सं,) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005[pp55-56,93,101-106]134-135

वेब साइट:

- https://educationmirror.org
- http://www.primarykamaster.com
- https://www.teachersofindia.org
- https://www.ncert.nic.in
- https://www.hi.wikipedia.org
- https://sites.google.com/site/eshikshabharat
- https://www.eklavya.in

•••••

विभिन्न विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

*डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 छात्र एवं 200 छात्राओं का चयन किया गया। डाटा संकलन के लिये डॉ. कु. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित विद्यालयीन वातावरण मापनी एवं जी.पी. ठाकुर एवं एम.एस प्रसाद द्वारा निर्मित स्व-बोध मापनी को लिया गया। यह परिणाम प्राप्त हुआ कि किशोर-किशोरियों के विद्यालयीन वातावरण एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जब किशोर अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं, आकांक्षाओं की पूर्ति का अभाव महसूस करता है। इस अवस्था में किशोर प्रत्येक बात को आलोचनात्मक दृष्टि से देखता है। इसी कारण वह समाज के परम्परागत रीति- रिवाजों को पसन्द नहीं करता है। यह अवस्था शारीरिक व मानसिक परिवर्तन की अवस्था होती है, जो जोशपूर्ण होने के साथ-साथ आदर्श व यथार्थ के अन्तर का अध्ययन करती है। अत: कहा भी जाता है कि किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, बल, तूफान व विरोध की अवस्था है। स्टेनले हॉल के शब्दों में -किशोरावस्था एक नया जन्म है, क्योंकि इसी में उच्चतर एवं श्रेष्ठतर मानवीय विशेषताओं के दर्शन होते हैं। जरशील्ड के अनुसार - 'किशोरावस्था से तात्पर्य उस अवस्था से है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था की ओर गमन करता व बढ़ता है।' किशोरावस्था प्राय: 13 से 20-21 वर्ष के बीच की अवस्था को माना जाता है। किशोरों में स्वतंत्रता की भावना होने के कारण वे किसी बन्धन को स्वीकार नहीं करते हैं। वे रीति- रिवाजों व अवैज्ञानिक कार्यों को भी पसन्द नहीं करते। बी.एन.झा के अनुसार -जीवन में नवीन दृष्टि का संचार होने के कारण उनमें स्व-बोध की प्रबल प्रवृति दृष्टि गोचर होती है।

किशोर अपने को बन्धन मुक्त रखना चाहता है। उसमे स्व-बोध की भावना अत्यधिक रहती है। स्व-बोध का अर्थ है कि 'व्यक्ति स्वयं अपने आपको कितना मापता है या कितना जानता है तथा अपने ही विचारों में व्यक्ति स्वयं को कितना महत्वपूर्ण मानता है। वह स्वयं के कार्यों को कितना महत्वपूर्ण मानता है तथा अपनी उपलब्धियों के बारे में क्या अनुभव करता है।'

स्व-बोध की भावना व्यक्ति को स्वयं के प्रति गर्व अनुभव करने, सिर ऊँचा रखने में सहायता प्रदान करती है।

जन्म के पश्चात् आयु में वृद्धि के साथ-साथ वह पास- पड़ोस के सम्पर्क में आता है जहाँ उसमें मित्रता, सहयोग व प्रतिद्वंद्विता की भावना का विकास होता है। इसके पश्चात् 3-4 वर्ष की आयु में बालक विद्यालय के सम्पर्क में आता है। समाज में विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ समाज के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जाती है व समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयास किये जाते हैं। यदि विद्यालय का वातावरण अच्छा है और वहाँ छात्रों को स्नेह व स्वतंत्रता

*उप-प्राचार्य, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर

प्राप्त होती है, छात्रों व अध्यापकों के मध्य परस्पर अन्त: क्रिया होती है साथ ही छात्रों के मध्य परस्पर सहयोग की भावना होती है तो उन विद्यालयों के छात्रों में अच्छे मूल्यों, आदतों, स्व-बोध, अच्छा अनुशासन व सामाजिक स्वीकृति की भावना का विकास अधिक होता है। इन विद्यालयों के छात्र समाज के योग्य सदस्य होते हैं उनमें समाज का हित सर्वोपरि होता है और वे श्रम का मूल्य समझते हैं। इस प्रकार समाज की गतिविधियों के संचालन में विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है क्योंकि विद्यालय में ही छात्रों में स्वस्थ नागरिकता के गुणों का विकास होता है और एक बड़ी सीमा तक समाज की उन्नति व अवनति विद्यालयों पर ही निर्भर होती है। मनुष्य के पास भाषा, बुद्धि के साथ-साथ चिन्तन करने की योग्यता भी होती है। चिन्तन द्वारा व्यक्ति अपने शारीरिक एवं व्यवहारिक दोनों रूपों के बारे में विचार करने के साथ- साथ यह भी विचार करता है कि दूसरों के सामने वह कैसा दिखाई देता है तथा समाज के लोग उसे किस प्रकार से देखते हैं। इस प्रकार चिन्तन आत्म और आत्म या स्व प्रत्यय से महत्वपूर्ण ढंग से संबंधित है। इस प्रकार का चिन्तन व्यक्तित्व के विकास को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है तथा स्व एवं स्व प्रत्यय का विकास व्यक्ति की सामाजीकरण की प्रकिया को भी प्रभावित करता है। स्व के निम्न पहलुओं पर मनोवैज्ञानिकों की सहमति है-

1. एक व्यक्ति स्वयं अपने आपका किस प्रकार- प्रत्यक्षीकरण करता है।
2. एक व्यक्ति अपना मूल्यांकन कैसे करता है।
3. एक व्यक्ति स्वयं अपने संबंध में कैसा चिन्तन करता है।
4. एक व्यक्ति स्वयं कैसे विभिन्न क्रियाओं द्वारा स्वयं की रक्षा करता है।

स्व- बोध -

स्व-बोध का शाब्दिक अर्थ स्वयं का ज्ञान व सम्मान करना होता है यह स्वयं के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाता है, अर्थात स्वयं को जानने व सम्मान देने के प्रवृत्ति तथा दूसरों के द्वारा स्वयं को जानने व सम्मान से देखे जाने की प्रवृत्ति ही स्व-बोध की भावना कहलाती है। स्व-बोध की उपस्थिति में व्यक्ति समाज में उच्च पद व उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। वास्तव में स्व-बोध संपूर्ण व्यक्ति का एक प्रमुख भाग है जो कि व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है। स्व-बोध के विकास से तात्पर्य व्यक्ति की आत्म-संतृप्ति से है। स्व-बोध स्वयं की श्रेष्ठताओं व योग्यताओं का मूल्यांकन करना है जो कि स्वयं के प्रति अभिवृत्ति से प्रकट होता है। यह एक आत्मगत् अनुभव होता है जो व्यक्ति अपने विशिष्ट व्यवहार द्वारा प्रकट करता है। इसके दो प्रमुख पक्ष होते हैं-

1. आत्म -प्रत्यक्षीकृत स्व
2. सामाजिक - प्रत्यक्षीकृत स्व

आत्म-प्रत्यक्षीकृत स्व-

इसके अंतर्गत स्वयं का सम्मान, स्वयं को मापना आत्म प्रत्यक्षित स्व कहलाता है।दुबे, रीता एवं सहयोगियों (2010) ने किशोर -किशोरियों के स्व-बोध का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य किशोर -किशोरियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व में अन्तर का अध्ययन करना था। यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किशोर व किशोरियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व में अन्तर नहीं था।

उद्देश्य –

1– विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

2– शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना –

1– छात्र/छात्रा /विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2– शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर विद्यालयीन वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि–

शोध कर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिये सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया है।

उपकरण –

1– विद्यालयीन वातावरण मापनी –डॉ.(कु.) अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा

2– स्व–बोध (आत्म सम्मान)मापनी – श्री जी.पी. ठाकुर एवं एम.एस. प्रसाद

न्यादर्श –

न्यादर्श –1

विद्यार्थी	संख्या
छात्र (शासकीय)	200
छात्राएं (शासकीय)	200
छात्र (अशासकीय)	200
छात्राएं (अशासकीय)	200
योग	**800**

अंतिम न्यादर्श

विद्यालयीन वातावरण		छात्र	छात्राएं	योग
अच्छा	शासकीय	50	50	100
	अशासकीय	50	50	100
सामान्य	शासकीय	50	50	100
	अशासकीय	50	50	100
			योग	**400**

शोध कार्य विधि–सर्वप्रथम विद्यालयों की सूची तैयार की गयी। विद्यालयों में जाकर छात्र–छात्राओं से सर्वे विधि द्वारा प्रदत्त सकंलन का कार्य किया गया। पहले विद्यालयीन वातावरण मापनी भरवायी गयी व विभिन्न विद्यालयों के विद्यालयीन वातावरण के स्तर को ज्ञात किया गया। तत्पश्चात स्व बोध मापनी का प्रशासन किया गया। तदुपरांत गणना का कार्य किया गया। गणना के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों (मध्यमान,प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण) द्वारा विश्लेषण किया गया।प्राप्तांकों के आधार पर परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या की गई।

परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या –विभिन्न विद्यालयीन वातावरण वाले विद्यालयों के छात्र, छात्राओं एवं विद्यार्थियों केव्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या निम्न है–

तालिका क्रमांक 1
विभिन्न विद्यालयीन वातावरण वाले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के तुलनात्मक परिणाम

समूह	विद्यालयीन वातावरण	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
शासकीय	बहुत अच्छा	60	151.48	18.40
	सामान्य	60	143.12	20.44
अशासकीय	बहुत अच्छा	60	146.37	13.73
	सामान्य	60	141.72	15.55

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	'एफ' अनुपात	'पी' मूल्य
समूहों के मध्य	3	3385.71	1128.57	3.54	<0.05
समूहों के अंतर्गत	236	75257.28	318.89		

स्वतंत्रता का अंश–3,236

0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान – 2.65

0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान – 3.88

उपरोक्त तालिका में विभिन्न विद्यालयीन वातावरण के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के परिणामों से प्रदर्शित होता है कि चारों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से अंतर है। प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 3.54 आया है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के न्यूनतम निर्धारित मान की अपेक्षा अधिक है। बहुत अच्छे विद्यालयीन वातावरण के शासकीय विद्यालयों के छात्रों का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे अच्छा जबकि सामान्य विद्यालयीन वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे कम है। अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यालयीन वातावरण एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का छात्रों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका क्रमांक 2

विभिन्न विद्यालयीन वातावरण वाले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के तुलनात्मक परिणाम

समूह	विद्यालयीन वातावरण	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
शासकीय	बहुत अच्छा	60	152.68	16.25
	सामान्य	60	141.35	14.65
अशासकीय	बहुत अच्छा	60	148.78	13.73
	सामान्य	60	144.32	15.96

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	'एफ' अनुपात	'पी' मूल्य
समूहों के मध्य	3	4464.93	1488.31	6.46	< 0.01
समूहों के अंतर्गत	236	54377.80	230.41		

स्वतंत्रता का अंश - 3, 236

0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान - 2.6

0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान - 3.88

उपरोक्त तालिका में विभिन्न विद्यालयीन वातावरण के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के परिणामों से स्पष्ट होता है कि चारों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से अंतर है। प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 6.46 आया है जो 0.01 स्तर पर सार्थकता के निर्धारित न्यूनतम मान से अधिक है। बहुत अच्छे विद्यालयीन वातावरण के शासकीय विद्यालयों की छात्राओं का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे अच्छा जबकि साधारण विद्यालयीन वातावरण वाले शासकीय विद्यालयों की छात्राओं का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे कम है।

अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यालयीन वातावरण एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का छात्राओं के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका क्रमांक 3

विभिन्न विद्यालयीन वातावरण वाले शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के तुलनात्मक परिणाम

समूह	विद्यालयीन वातावरण	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन
शासकीय	बहुत अच्छा	120	152.08	17.30
	सामान्य	120	142.23	17.73
अशासकीय	बहुत अच्छा	120	147.58	15.25
	सामान्य	120	143.02	15.74

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	'एफ' अनुपात	'पी' मूल्य
समूहों के मध्य	3	7484.32	2494.77	9.12	< 0.01
समूहों के अंतर्गत	476	130149.93	273.42		

स्वतंत्रता का अंश - 3, 476

0.05 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान - 2.62

0.01 स्तर पर सार्थकता का निर्धारित न्यूनतम मान - 3.85

उपरोक्त तालिका में विभिन्न विद्यालयीन वातावरण के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व के तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि सभी समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से अंतर है। प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 9.12 आया है जो कि 0.01स्तर पर सार्थकता के निर्धारित न्यूनतम मान 3.85 की अपेक्षा अधिक है। बहुत अच्छे विद्यालयीन वातावरण वाले शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे अच्छा जबकि सामान्य विद्यालयीन वातावरण वाले अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व सबसे कम है।

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यालयीन वातावरण एवं शाला प्रबंधन की प्रकृति का विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- भार्गव, महेश (1985) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', हरप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा, चतुर्थ संस्करण, पृ.सं. 287.
- हरलॉक, ई.बी. (2003) ''विकास मनोविज्ञान''अनुवादक: गोवर्धन भट्ट, हिन्दी माध्यम, कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली वि.वि., पृ.सं. 324-339, 392-394
- ऋचा चौधरी (2010) ''विकासात्मक मनोविज्ञान'', पहला संस्करण, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ.सं. 213-217
- Sherif M. and Sherif C. W. (1969) 'Social Psychology' Harper and Row, New york, P.N. 82-94
- श्रीवास्तव, डी.एन. (2009) ''व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'' श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, पृ.सं. 40-47, 97, 112-114
- सिंह, अरूण कुमार एवं सिंह, आशीष कुमार (2012) ''व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पंचम संशोधित संस्करण, पृ.सं. 61-62
- Bonny, M.E. (1951) " A sociometric study of the peer acceptance of rural students in 3 consolidated high school", Edu. Admin. Supervision, 41, P.N. 234-240.
- Mpofu E. (1999) 'Social acceptance of early adolescents with physical disabilities : Am Arbor, MT UMI Dissertation Services, Cambridge University Press, Newyork. (books.google.co.in) P.N. 300
- Wentzel, K.R. (1999) 'Relations of Social goal pursuit to social acceptance, classroom behaviour and perceived social support; Journal of Edu. Psy. Vol 86 (2) Jan, P.N. 173-182

••••

जबलपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

*डॉ. रश्मि गुप्ता

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना है शोध पत्र में यह भी देखने का प्रयास किया गया है कि संयुक्त परिवार का एवं एकल परिवार का विद्यार्थियोंके मूल्यों पर क्या प्रभाव है। क्या संयुक्त परिवार के बच्चे अधिक संस्कारवान है या एकल परिवार के ? दोनों ही प्रकार के परिवारों का उनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर क्या असर पड़ता है ? नैतिक मूल्य एवं संस्कार का उनकी शैक्षिक गतिविधियों एवं शाला में उनके व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ता है ? परिवार के प्रभाव का सकरात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव देखने का प्रयास प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

कुंजी शब्द - उच्च माध्यमिक विद्यालय, एकल एवं संयुक्त परिवार, नैतिक मूल्य

परिवार प्रत्येक बच्चे की पहली पाठशाला होती है और माता ही उसकी सबसे बड़ी और पहली शिक्षिका अथवा गुरू होती है परिवार प्रारंभ से ही एक सार्वभौमिक संस्था रही है और जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति परिवार का ही एक हिस्सा या सदस्य बना रहता है परिवार वह स्थान है जहाँ एक बालक का सामाजीकरण होता है कहा भी जाता है कि जो मनुष्य परिवार व समाज में नहीं रहता वो या तो ''पशु है अथवा देवता'' अब प्रश्न यह उठता है कि वो परिवार कौन सा परिवार हो जहाँ बालकों में नैतिक मूल्यो का एवं संस्कारो का भी विकास उनके जीवन एवं व्यक्तिव्त के विकास के साथ-साथ हो। परिवार के प्रकारों में दो प्रकार आते है प्रथम तो एकल परिवार-जिसमे माता-पिता और एक या दो बच्चे और दूसरा है, संयुक्त परिवार जहां-माता-पिता और उनके दो बच्चों सहित दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची एवं इन सभी के बच्चे।

अब सवाल ये उठता है कि कौन से प्रकार के परिवार बालकों में नैतिक मूल्य अधिक पाए जाते हैं एवं अधिक सकारात्क होते हैं क्योंकि एकल परिवार में बच्चे माता-पिता की प्रत्यक्ष निगरानी में रहते है तो उनके बिगड़ने की संभावना लगभग कम रहती है जबकि संयुक्त परिवार में माता-पिता को छोड़कर अन्य सभी लोगों के साथ बच्चे रहते है और लाड़ प्यार में क्या कर रहे हैं इसका माता-पिता ध्यान नहीं दे पाते, तो सम्भवत: यही कारण हो सकता है कि संयुक्त परिवार में मूल्यों का विकास सही ढंग से नहीं हो पाता। किन्तु कोई भी तथ्य यथार्थ रूप से प्रभाणित नहीं किया जा सकता अत: प्रस्तुत अध्ययन ही इस बात को प्रमाणित कर पाएगा कि कौन से परिवार के बच्चों में मूल्यों का आधिक्य पाया जाता है।

शोध समस्या के उद्देश्य:-

1. परिवार की संरचना के आधार पर विद्यार्थियों पर नैतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में ईमानदारी मानवता निष्ठावान एवं व्यवहारिकता आदि नैतिक मूल्य घटकों का अध्ययन करना।

***प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर**

परिकल्पना:-

1. एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विभिन्न घटकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

1.(a) एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (A) ईमानदारी (Honesty) के मध्यभानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

1.(b) एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (B) निष्ठावानता (Sincierity) के मध्यभानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

1.(c) एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (C) मानवीयता (Humanity) के मध्यभानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

1.(d) एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (D) व्यावहारिकता (Curtesy) के मध्यभानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श चयन -

आंकड़ों का संग्रह यादृच्छिक चयन के आधार पर किया गया। जबलपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् (कक्षा 9वीं) के 200 विद्यार्थियों का चयन शोध अध्ययन के लिये किया गया।

शोध विधि:-

शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

परिणाम, व्याख्या एवं विश्लेषण

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विभिन्न घटकों के प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं (t) की गणना को दर्शाती तालिकाएं:-

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (A) ईमानदारी (Honesty) के प्राप्ताकों को दर्शाती तालिका क्रमांक 1.1

समूह	चर	N	df	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	मनक त्रुटि (SE)	f का गणना द्वारा प्राप्त मान	निष्कर्ष
एकल परिवार	Honesty	114	198	11.79	1.96	.2796	.254	सार्थक
संयुक्त परिवार		86		11.86	1.94	.2793		अंतर नहीं है।

दण्डारेख क्र. 1.1

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के घटक ईमानदारी के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.1 के अनुसार ज का मान गणना द्वारा 0.254 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक अंतर को नहीं दर्शाता है। अत: बनाई गई परिकल्पना क्र.1 (a) ''एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (A) ईमानदारी (Honesty) के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।'' सत्यापित हुई। दण्डारेख क्रमांक 1.1 से भी उपरोक्त कथन की पुष्टि होती है।

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विभिन्न घटकों में से घटक (B) निष्ठावनता (Sincierity) के प्राप्ताकों को दर्शाती तालिका क्रमांक 1.2

समूह	चर	N	df	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	मनक त्रुटि (SE)	f का गणना द्वारा प्राप्त मान	निष्कर्ष
एकल परिवार	Sincierity	114	198	12.37	1.52	.255	1.942	सार्थक
संयुक्त परिवार		86		11.86	2.08	.266		अंतर है।

दण्डारेख क्र. 1.2

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के घटक निष्ठावनता के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

तालिका 1.2 से दृष्टव्य है कि गणना द्वारा प्राप्त श्जश् का मान 1.942 है जो कि सार्थकता के स्तर .05 पर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर को दर्शाता है अत: बनाई गई परिकल्पना क्र. 1.(b) ''एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के घटक (B) निष्ठावानता (Sincierity) के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।'' असत्यापित। हुई दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य का अंतर भी उपरोक्त कथन की पुष्टि करता हैं एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में निष्ठावानता के मध्यमान भी सार्थक रूप से भिन्न पाए गये हैं।

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्याथियों के नैतिक मूल्यों के विभिन्न घटकों में से घटक (C) मानवीयता (Humanity) के प्राप्ताकों को दर्शाती तालिका क्रमांक 1.3

समूह	चर	N	df	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	मनक त्रुटि (SE)	f का गणना द्वारा प्राप्त मान	निष्कर्ष
एकल परिवार	Humanity	114	198	12.17	1.80	.251	.42	सार्थक
संयुक्त परिवार		86		12.18	1.69	.249		अंतर नहीं है।

दण्डारेख क्र. 1.3

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के घटक मानवीयता के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

तालिका क्र. 1.3 से दृष्टिगोचर हो रहा है। कि एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यो के घटक (C) मानवीयता (Humanity) के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। साथ ही श्जश् का मान भी .05 सार्थकता के स्तर पर .042 प्राप्त हुआ है जो कि यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्य नैतिकता मूल्य घटक (C) मानवीयता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: बनाई गई परिकल्पना क्र. 1(c) '' एकल एंव संयुक्त परविार के नैतिक मूल्य के घटक (C) मानवीयता के मध्यमानों कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।'' सत्यापित हुई।

अत: कहा जा सकता है कि एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के मानवीयता के मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न नहीं है व उनमें कोई सार्थक अंतर नहीं है। दण्डारेख क्र. 1.3 से भी उपरोक्त कथन की पुष्टि होती है।

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के घटक D व्यवहारिकता (Curtesy) के प्राप्तांकों का दशाती है तालिका क्रमांक 1.4

समूह	चर	N	df	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	मनक त्रुटि (SE)	f का गणना द्वारा प्राप्त मान	निष्कर्ष
एकल परिवार	Curtesy	114	198	12.35	1.65	.244	1.243	सार्थक
संयुक्त परिवार		86		12.04	1.79	.247		अंतर नहीं है।

दण्डारेख क्र. 1.4

एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के घटक व्यवहारिकता के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

उपरोक्त तालिका क्र. 1.4 से दृष्टव्य है कि गणना द्वारा प्राप्त ज का मान 1.243 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक नहीं है। अत: दोनों समूहो में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अत: बनाई गई परिकल्पना क्र. .1 ;कद्ध ''एकल परिवार व संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के घटक क् व्यवहारिकता ;ब्नतजमेलद्ध के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। मान्य हुई, अत: कहा जा सकता की एकल व संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के व्यवहारिकता के मध्यमानों में सार्थक रूप से भिन्नता नहीं है। दण्डारेख क्र. 1.4 से भी उपरोक्त कथन की पुष्टि होती है

निष्कर्ष :-

प्राप्त परिणामों के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के विभिन्न घटकों यथा ईमानदारी (भ्वदमेजल), निष्ठावानता (पदबपमतपजल), मानवीयता (भ्नउंदबपजल) एवं व्यवहारिकता (ब्नतजमेल) आदि में से ईमानदारी, व्यवहारिकता एवं मानवीयता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। किन्तु निष्ठावानता में एकल परिवार के विद्यार्थियों का मध्यमान संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. श्रीवास्तव, ए. के. (1903) रोल बेस स्ट्रेस एण्ड मेन्टल हेल्थ ऑफ वाइट कलर इम्प्लाइज, इंडियन जर्नल ऑफ क्लीनिकल साइकोलॉजी (10) 343 - 347
2. सिंह, अरूण कुमार मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली
3. कपिल,एच. के. (2012) असुसंधान विधियाँ एच. पी भार्गव बुक हाउस, आगरा।
4. आलपोर्ट, जी.वी. (1970) पर्सनैलिटी साइकोलॉजिकल इन्ट्रोडक्शन हेनगर्ग हॉल न्यूयॉर्क,

•••••

शिक्षक शिक्षा में प्रशासन की भूमिका (नई शिक्षा नीति के अंतर्गत)

*डॉ. (श्रीमती) सुधा द्विवेदी

लेख सार

शिक्षा मानव जीवन के उत्थान का वह प्रसून है जिससे मानवीय गुणों का विकास होता है एवं मानव उन लक्ष्यों के प्राप्त कर लेता है जो महापुरूषों के अंतस: में विद्यमान होते है। शैक्षिक परिदृश्य गुणात्मक विकास में सहयोग प्रदान करते है। मानव के स्वयं के विकास के साथ-साथ ही उसके संगठन तथा प्रशासन की अवधारणा जुड़ी है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 21वी सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दी है। अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। 34 वर्षो पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है इस उद्देश्य को पूर्ण करने के प्रति हम सभी पूर्ण आशान्वित है एवं इसमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षक ब्राहम्णत्व के पर्याय से आवृत्त है। अध्यापक शिक्षा वह क्रिया है जो ज्ञान, विकास और दृष्टिकोण, कौशलों प्रवृत्तियों व व्यवहार में परिवर्तन पर आधारित होती है जो कार्यशालाओं व स्कूली परिस्थितियों में अंत: क्रिया के माध्यम से दी जा सकती है। इसमें केवल विशेषज्ञों से ज्ञान प्राप्त करने पर ही जोर नहीं रहना चाहिए बल्कि व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, अनुभावात्मक अधिगम को प्रोत्साहन, शिक्षकों को सक्रिय शिक्षार्थियों में बदलना, व्यवहार की सहकर्मी आधारित समीक्षा भी व्यापक रणनीति का हिस्सा बन सकती है।

मानव के स्वयं के विकास के साथ-साथ ही उसके संगठन तथा प्रशासन की अवधारणा जुड़ी है। शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य कार्य अधिकतम उपलब्धि करके राष्ट्र तथा समाज का विकास करना है। शैक्षिक प्रशासन द्वारा शिक्षा के अपव्यय को न्यूनतम कर अधिकतम उपलब्धि कराई जाती है। शैक्षिक प्रशासन सामान्य प्रशासन के विस्तृत क्षेत्र का एक अंग माना जाता है। चूँकि शिक्षकों का देश, विदेश, समाज, संस्कृति, इतिहास, दर्शन आदि से अत्यंत घनिष्ठ संबंध रहा है। 'प्रशासन' शब्द एडमिनिस्ट्रेशन का हिन्दी रूपांतर है। एडमिनिस्ट्रेशन की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द मिनिस्टर से मानी जाती है, जिसका अर्थ है, दूसरों की सेवा में रत रहने वाला इस प्रकार प्रशासन के संबंध में कहा जा सकता है कि अधीनस्थ लोगों की सेवा प्रभावशाली ढंग से करने की कला है।

शैक्षिक प्रशासन का संबंध मुख्यत: शिक्षा से ही होता है अत: शिक्षा के क्षेत्र में संगठन जिस ढाँचे को खड़ा करता है शैक्षिक प्रशासन उसे कार्यान्वित करने में सहायक होता है जिससे शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति अवश्य की जा सकती है। शैक्षिक प्रशासन एक मानवीय प्रक्रिया होती है। इसमें व्यावहारिकता महत्वपूर्ण होती है। इसका स्वरूप केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीकरण दोनो होता है।

***प्रोफेसर, जबलपुर पब्लिक कॉलेज, करमेता, जबलपुर**

आर्डवे टीड ने 1957 में शैक्षिक प्रशासन को क्षेत्र को पांच भागों में विभाजित किया –

1. उत्पादन (Production)
2. जन प्रयोग का आश्वासन (Assuring Public Use)
3. वित्त एवं लेखा कार्य (Finance and Accounting)
4. कार्मिक वर्ग (Personal)
5. समन्वयन (Co-Ordination)

प्रशासन के कार्य के अंतर्गत उद्देश्य निर्धारण, नियोजन, व्यवस्थापन, कार्य संचालन, मूल्यांकन, नियंत्रण, समन्वय करना एवं दिशा निर्देश देना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का उद्देश्य असमानताओं को दूर करने विशेष रूप से भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जाति समुदायों के लिए शैक्षिक अवसर की बराबरी करने पर विशेष जोर देना था इस नीति ने प्राथमिक स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए आपरेशन ब्लेकबोर्ड लांच किया।

संशोधित 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' 1992 के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार लाया गया एवं इसका लक्ष्य शिक्षा में नवीन परिवर्तन लाना था।

समाज की बदलती परिस्थितियों एवं उसकी जरूरतों को देखते हुए इसमें उचित परिवर्तन लाया गया एवं भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नवीन परिवर्तन लाया गया। नवीन परिवर्तन हेतु भारतीय शिक्षा प्रणाली में 2 को स्कूली शिक्षा के संचालन का माध्यम बनाया गया। इसके द्वारा महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

नई शिक्षा नीति 2020 स्कूलों में 10+2 (सिस्टम) प्रणाली खत्म, लागू होगी 5+3+3+4 की नई व्यवस्था समझे क्या है ये पहले तीन साल बच्चे आंगनवाड़ी में प्री-स्कूलिंग शिक्षा लेगें। फिर अगले दो साल कक्षा एक एवं दो में बच्चे स्कूल में पढ़ेगें। इन पांच सालों की पढ़ाई के लिए एक नया पाठ्यक्रम तैयार होगा। केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दी है नई शिक्षा नीति 34 वर्ष पुरानी ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986'' को प्रतिस्थापित करेगी।

नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के. कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था इस समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा प्रस्तुत किया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति होगी।

इस शिक्षा नीति में छात्रों में रचनात्मक सोच तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा NCTE वर्ष 2022 तक शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (NPST) का विकास किया जाएगा। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा NCERT के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास किया जाएगा।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 21वी सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु जिस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दी है। अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी। 34 वर्षो पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है इस उद्देश्य को पूर्ण करने के प्रति हम सभी पूर्ण आशान्वित है एवं इसमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

जय हिन्द

संदर्भ सूची:-

1. नई शिक्षा नीति 1986 पत्रिका
2. नई शिक्षा नीति 1992 पत्रिका
3. नई शिक्षा नीति भारत का राजपत्र

•••••

कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों पर विद्यालयीन वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

** डॉ. प्रियंका ताम्रकार*
*** प्रो. निवेदिता पॉल*

शोध सार

प्रस्तुत शोध में जबलपुर शहर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों पर विद्यालयीन वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन में विद्यालयीन वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि को लिया गया है। शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है तथा विद्यालयीन वातावरण के मापन हेतु डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु कक्षा 11वीं प्राप्तांक को लिया गया है। न्यादर्श हेतु जबलपुर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्र-छात्राओं को लिया जिसमें शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालयों के 25-25 छात्र-छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया तथा उद्देश्य प्राप्ति हेतु सांख्यिकी विश्लेषण किया गया तथा पाया गया विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है तथा विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण स्तर में सार्थक अंतर हैं।

कुंजी शब्द - विद्यालयीन वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि

शिक्षा व्यक्ति की योग्यता एवं रूचि के अनुसार स्वतंत्र ढंग से विकास करने का अवसर प्रदान करती है। अनेक शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा को मानव के समग्र विकास तथा प्रगति का महत्वपूर्ण साधन माना है, जिसके फलस्वरूप इन शिक्षाविदों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तनों में अपना योगदान दिया है प्रसिध्द शिक्षाशास्त्री डॉ. माइकल सेडलर ने अपने कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की जिसके अथक प्रयासों के कारण भारत में माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा, स्त्री शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, प्रौद्योगिक व व्यवसायिक शिक्षा में विशेष प्रगति हुई। अरथर मेहनू के शब्दों में ''कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोजन का प्रतिवेदन सुझाव और सूचना का अनन्त स्त्रोत रहा है। भारतीय शिक्षा के इतिहास में इसका असीम महत्व है।''

भारत देश में प्राचीन समय से ही शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा को प्रकाश स्त्रोत अंतर्दृष्टि, अंतर्ज्योति और मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता है।

शिक्षा कामधेनु और कल्पतरू के समान व्यक्ति की सब मनोकामनाओं को पूर्ण करती है और उसका सर्वांगीण विकास करती हैं।

विज्ञान के इस युग में प्राचीन मान्यताएँ बदल रही है फिर भी यह सर्वमान्य तथ्य है कि ''विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णधार है।'' वे राष्ट्र की प्रगति के सशक्त संबल है यही छात्र अपनी योग्यताओं के आधार पर आगे चलकर योग्य वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, चिकित्सक, इंजीनियर, वकील एवं शिक्षक बनेगें, ये ही देश को प्रगति के क्षेत्र पर ले जाने में

***सह प्राध्यापक, जबलपुर पब्लिक कॉलेज जबलपुर**
****प्रोफेसर, जबलपुर पब्लिक कॉलेज जबलपुर**

सहायक सिध्द होगें। भावी विद्यार्थियों के इस उन्नत व भावी भविष्य के लिए एक दृढ़ नींव की आवश्यकता होती है जो विद्यार्थियों को विद्यालय के माध्यम से प्राप्त होती है।

वर्तमान समय में बदलते मूल्यों के चलते विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहे हैं जिसके कारण विद्यार्थियों का मस्तिष्क व ध्यान अन्य मनोरंजक व क्रियाकलापों में फंसा रहता है जिसके कारण विद्यार्थी अपनी विषयी शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान नहीं देते फलस्वरूप जिसका परिणाम उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में दिखाई पड़ता है अत: ऐसी स्थिति में विद्यालय का यह अहम् कर्तव्य बनता है कि विद्यालय उन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का कारण है। इनकी असफलता व निम्न शैक्षणिक उपलब्धि के कुछ कारण अवश्य होगें। इन्हीं असफलताओं को देखकर शोधकर्ती के मन में इसके कारणों को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

शोध अध्ययन का महत्व - वर्तमान समय में शिक्षा का इतना अधिक प्रसार हो गया है जिसके कारण देश में इतने अधिक विद्यालयों की स्थापना हो रही है ये विद्यालय अधिकतर निजी क्षेत्रों में स्थापित किए जा रहे हैं जो बहुत बड़े पैमाने पर, शांत क्षेत्र पर अत्याधिक योग्य शिक्षक, उपर्युक्त सभी सुविधाएँ, पुस्तकालय, खेल का मैदान छात्र शिक्षक आपसी संबंधों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है जिसके कारण विद्यालयों का वातावरण स्वस्थ्य रह सके। इस व्यवस्थित वातावरण के कारण विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि बहुत अधिक प्रभावित हो सके। इसकी विशेष व्यवस्था की जा रही है। इसका शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान है।

परंतु जिन विद्यालयों की स्थापना वातावरण को ध्यान में न रखकर की गई है। जो कौतूहल वाले क्षेत्र, उपर्युक्त सुविधाओं का अभाव अयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति ऐसे विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न कोटि की रहती है। इस संबंध में चेपसपचे श्रण्भ्;2010द्ध ने विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन को महत्वपूर्ण माना।

आज के परिवेश में जहाँ शिक्षा का इतना अधिक प्रचार व प्रसार हो रहा है, अत: किस प्रकार विद्यालय अपने विद्यालयीन वातावरण को अनुकूल और व्यवस्थित करें जिससे विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को उच्च किया जा सके। यहीं प्रस्तुत समस्या की उत्पत्ति होती है और इस लघु शोध द्वारा यहाँ यही जानने का प्रयास किया गया है तथा इसी समस्या के अध्ययन के लिए यह शोध कार्य किया जा रहा है।

चर - (I) स्वतंत्र चर - विद्यालयीन वातावरण

(II) आश्रित चर - शैक्षणिक उपलब्धि

शोध कार्य का उद्देश्य -

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव

में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोधकार्य में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

उपकरण –

1. विद्यालय परिवेश वातावरण मापनी डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित।
2. शैक्षणिक उपलब्धि के प्रदत्तों हेतु विद्यालयों के अभिलेख से कक्षा 10वीं के वार्षिक परिणामों के प्रतिशत के आधार पर रखकर प्रदत्त प्राप्त किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

न्यादर्श – न्यादर्श में जबलपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का चयन किया जो कि निम्न तालिका के अनुसार है रू.

न्यादर्श तालिका

समूह	लिंग	संख्या	कुल
शासकीय विद्यालय	छात्र	50	100
	छात्रा	50	
अशासकीय विद्यालय	छात्र	50	100
	छात्रा	50	
		कुल विद्यार्थी	**200**

कार्यविधि – सारणी क्रमांक – 01

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11वीं के कुल विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण स्तर के प्राप्तांकों की प्रतिशत संबंधी सारणी

तालिका क्रमांक – 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	122.64	61.98	2.34	सार्थक अंतर है
अशासकीय	100	120,6	61.11		

स्वतंत्रता के अंश – 198 सार्थकता स्तर 0.05 के लिए मान – 1.97

परिणाम – उपरोक्त तालिका क्रं 1 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण में अंतर है।

तालिका क्रमांक – 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	69.04	12.90	5.36	सार्थक अंतर है
अशासकीय	100	60.24	10.12		

स्वतंत्रता के अंश – 198 सार्थकता स्तर 0.05 के लिए मान – 1.97

परिणाम – उपरोक्त तालिका क्रं. 2 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर है।

परिणामों की व्याख्या –

उपरोक्त तालिका 1 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है। विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातवरण के स्तर में अंतर पाया गया है। संबंधी परिणामों से स्पष्ट होता है शासकीय विद्यालयों का वातावरण में अशासकीय विद्यालयां की तुलना में अधिक स्वतंत्र होता है। क्योंकि शासकीय विद्यालयों सरकारी नीतियों द्वारा संचालित होते है। जबकि अशासकीय विद्यालयों का प्रबंधन निजि संस्थाओं के द्वारा किया जाता है। विद्यालयीन वातावरण में अंतर होने का यह संभावित कारण हो सकता है। तालिका क्र. 2 के परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर पाया गया है संबंधी परिणामों से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर भिन्न होता है ऐसी स्थिति में वे भविष्य को लेकर अधिक सजग होते है। इसलिये वे स्वअनुशासित एवं स्वअभिप्रेरित होते है। जिसका प्रभाव उनकी उपलब्धि पर पड़ता है। शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होने का यह संभावित कारण हो सकता है।

निष्कर्ष –

(1) शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में अंतर है।

(2) शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है।

संबंधित पूर्व शोध Philips J.H.(2010) से ज्ञात होता है कि विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

संदर्भग्रन्थः–

(1) कपिल, एच. के. अनुसंधान विधियाँ भार्गव बुक हाउस संस्करण

(2) सुखिया, एस.पी., विद्यालय प्रकाशन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर,, आगरा ISBN-81.7457.0365 छब्बीसवां संस्करण

(3) आर, शर्मा एवं वी. सक्सेना, शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा

(4) पाण्डे, पार्थसारथी एवं नीता, मापन एव मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ISBN-13-9789381602904

●●●●●

शिक्षा में उत्कृष्टता और शिक्षक शिक्षा

*डॉ. (श्रीमती) सुषमा पिल्लै

शोध-सार

'भारत के भाग्य का निर्माण इसके कक्षा-कक्षों में हो रहा है।'(अधिनियम - 1964-66)

कोठारी आयोग का उक्त कथन विद्यार्थियों हेतु शिक्षा, के साथ ही विद्यालयीन उपादेयता को स्वयंसिद्ध करता है सर्वज्ञात है कि शिक्षा 'स्व' से 'सर्वस्व' तक की प्रक्रिया है इसीलिए प्रत्येक देश अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक अस्मिता की अभिव्यक्ति व समय की चुनौतियों हेतु विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली विकसित करता है क्योंकि शिक्षा वह प्रकाश - पुंज है। जो मनुष्य में विवेक जागृत कर उसे प्रगति मार्ग पर प्रशस्त कर उसे समग्रता-प्रदान कर सच्चे अर्थ में मानव बनाती है।

वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है कोरा वैज्ञानिक भौतिक ज्ञान-व्यक्ति की इसी मनोवृति ने अनेकानेक समस्याओं को जन्म दिया है, और वर्तमान युगीन समस्याओं का सबसे बड़ा समाधान सूत्र हैं - व्यक्ति में 'आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण' यही आज की सबसे बड़ी अपेक्षा हैं और इस अपेक्षा पूर्ति के लिए आवश्यकता हैं, प्रचलित जीवनशैली को बदलने की और नवीन जीवनशैली को समझने की इसके लिए आवश्यक है एक नयी विद्या शाखा के विकास और उसके लिए सुव्यव स्थित वैज्ञानिक उपक्रम अपनाने की क्योंकि यह सामंजस्य ही भारत को पुन: विश्व गुरू बना पायेगा। आज हमारा समाज एक संधिकाल से गुजर रहा हैं, और हम सभी गहन संक्रमण काल से ऐसे में आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का सामंजस्य ही वह माध्यम है जो मानवीय उत्कर्ष की प्रक्रिया के पाँच पक्षों (शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक) के दायरे के अन्तर्गत मानव

में निहित सर्वोत्तम तत्वों का प्रस्फुटन इस प्रकार कर सकगें। जिससे उसके व्यक्तित्व को पूर्णता प्राप्त होगी और उसका सर्वागीण (शरीर, मन, आत्मा) विकास संभव हो पायेगा। जिसकी पूर्ति का माध्यम एक शिक्षक ही होता है।

आध्यात्म, विज्ञान का सामंजस्य स्थापित हो पायेगा मूल्यों और नैतिकता के पोषण द्वारा नैतिकता तो भारतीय जीवन का नियमन हैं मूल्य प्रत्येक मानव में संस्कार के रूप में पोषित, परिमार्जित हो व्यावहारिक स्वरूप में उसकी अस्मिता बन युग तत्व को अनुप्राणित कर दिशा देने के साथ युगबोध को विस्तीर्णता दे। जीवन का नियमन कर सृजन को दृष्टि प्रदान करते है।

शिक्षक द्वारा बालक को मूल्यों की ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिसके माध्यम से उसके अंतरू निहित गुण इस प्रकार विकसित होए जो कि बालक के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाकर उसे समाज का एक महत्वपूर्ण व उपयोगी विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण कड़ी व समाधान मानव ही होता है। अंग बना देते और निकट भविष्य में वह इस योग्य बने कि सच्चे अर्थों में उसका समाज में स्पष्ट रूप में व्यक्तित्व उभरकर आयेगा और वह समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो पायेगा क्योंकि किसी भी राष्ट्र या समाजमूल्य ऐसी आत्मिक शक्तियाँ होती है जिनको विद्यार्थी के जीवन में संस्कार रूपी

*सहायक प्राध्यापक, सेंट अलायसिस कॉलेज, जबलपुर

बीजों के माध्यम से रोपित अभिसिंचित पल्लवित, परिपोषित करके बालक के आचरण (स्वयं के द्वारा किया गया काम) व्यवहार (दूसरों के लिए किया गया काम) चिंतन और चरित्र और चरित्र में वांछित बदलाव लाने के उत्तरदायित्व के निर्वाहन में शिक्षक के हाथ में एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से वह अपने विद्यालय में अपने उद्देश्यानुरूप छात्र के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाकर उसका परिमार्जन कर उसमें अनेकानेक सदगुणों का अभिसिंचन द्रुतगति व स्थायित्व के साथ कर सकता है क्योंकि – 'अध्यापक है, युग निर्माता छात्र–राष्ट्र के भाग्यविधाता जे.एस. रॉस के अनुसार विद्यालय का उदान हैं शिक्षार्थी एक कोमल पौधा तथा शिक्षक एक 'सर्तक माली' जो समय–समय पर आवश्यकतानुसार पौधे के विकास के लिए उसे कोडने, धूप दिखाने, सिंचाई की उचित व्यवस्था करता है' जिससे वह एक कोमल पौधा से फल व छाया देने वाले वृक्ष में रूपान्तरित हो देश व समाज के हित में काम आ सके और बीज जितना पुष्ट होगा वृक्ष भी उतना बलवान होगा।

शिक्षा एक प्रतिपादन है जिसका मूर्तरूप शिक्षक होता है वह अपने में एक संपूर्ण मानवीय सत्ता होने के साथ ही समाज की हर सत्ता से इसीलिए ऊपर है क्योंकि बालक उससे ही संस्कार की शिक्षा व भाषा व्यवहार ग्रहण कर उसका अनुकरण करता है इसलिये शिक्षक विद्यार्थी के लिए एक अग्रदूत की भूमिका निभा सकता है, चूँकि मूल्य शिक्षा कृति प्रधान होती है।

परिवार द्वारा मूल्यों का आभ्यन्तीकरण–बालक जन्म लेते ही सर्वप्रथम परिवार से जुड़ता है परिवार सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था की इकाई है, जहाँ उसे व्यक्तित्व का विकास और आचरण, नैतिकता, अनुशासन का आधारभूत ज्ञात प्राप्त होता है बालक के जीवन में परिवार की भूमिका प्रथम समाजीकरण अभिकरण के रूप में होती है जिसके सदस्य एक अनोखे संवेगात्मक बन्धन के जटिल जाल द्वारा बँधे होते है तथा एक सामाजिक इकाई का निर्माण करते हैं वास्तव में मूल्यों की शिक्षा बालक के घर से प्रारम्भ होती हैं जहॉ वह माता–पिता व मेहमानों के व्यवहार व कार्यों का अनुकरण कर तथा उन पर दूसरों की प्रतिक्रिया सुन अनौपचारिक रूप से मूल्यों की शिक्षा पाता है ?

परिवार वह स्थान है जहॉ महान गुण उत्पन्न होते हैं, प्रेम का विकास होता है, न्याय और अन्याय सत्य और असत्य, में अन्तर करके बालक अच्छी आदतें ग्रहण करता है।

रेमाण्ट (मूल्य शिक्षा – पे.नं. 77)

आधुनिक तथा पुरातनता में समन्वय – भारतीय शैक्षिक दर्शन में सदा ही सत्यम, शिवम्, सुन्दरम के सानिध्य में मानवीय व्यक्तित्व के निर्माण पर बल दिया जाता है जिसका आधार धर्म है क्योंकि भारतीय संस्कृति के उदय और अस्तित्व के मूल में धर्म सदाशय रूप में निहित है भारतीय संस्कृति में मानवीय आदर्शों का समावेश धर्म के संपर्क से ही संभव हो पाया है धर्म, सभ्यता और संस्कृति में परस्पर सापेक्षता पायी जाती है संस्कृति ही व्यक्ति को संस्कारित या परिमार्जित करती है अंग्रेजों के आगतन के पूर्व भारतीय शिक्षा भारतीय संस्कृति के मानकों, आदर्शों के अनुरूप तथा मूल्य परक थी। अत: अलग से मूल्य शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं थी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली विदेशी शासकों की देन है। 19वीं शताब्दी के नवजागरण काल से शिक्षा के पश्चिमी मानक संस्थायीकरण '**स्कूल**' ने समाज में प्रवेश किया जिसके अंतर्गत मैकाले नें अंग्रेजी शासन को सुचारू रखने क्लर्क पैदा करने की शिक्षा पद्धति अपनायी जिसके अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था की गई कि भारतीय शरीर से तो भारतीय रहे किन्तु मन, मस्तिष्क व्यवहार से अंग्रेज बन जाये इस परिस्थिति ने ही परिवर्तन लाने के अथक प्रयास किये जा रहे हैं क्योंकि इसके कारण ही हमारी संस्कृति के सत्य को आज की शिक्षा ने भुला दिया है और सनातन धर्म, वैदिक संस्कृति आयुर्वेद, आध्यात्म विद्या, खगोल विद्या, शुद्ध स्नेह युक्त पारिवारिक–सामाजिक व्यवस्था आदि प्राचीनतम विरासत से हमने मुँह मोड़कर उसके स्थान पर पाश्चात्य भेाग–विलासमय, मर्यादाहीन संस्कृति को अपना बना

लिया है जिसके कारण हमारा प्राचीन भारतीय शैक्षिक उद्देश्य 'सा विधा या विमुक्तये' आज 'सा विद्या या नियुक्तये' में रूपान्तरित होता जा रहा है जिससे अत्यन्त विस्फोटक व भयावह स्थिति का जन्म हो रहा हैं जो आज समाज में मूल्यहीनता का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हो रहा है।

ज्ञातव्य है कि प्रत्येक संस्था के अपने लक्ष्य व आदर्श होते है जिनकी प्राप्ति हेतु उचित प्रबंध की आवश्यकता होती है। विद्यालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। अत: इसकी एक सुसंगठित प्रबन्धात्मक व्यवस्था होनी चाहिए एक प्रभावशली प्रबन्ध विद्यालय में उचित व्यवस्था करता हैए यह उचित व्यक्तियों को उचित स्थान पर उचित समय, उचित ढंग से रखता है। विद्यालय प्रबन्ध एक व्यापक तथा गतिशील तत्व है इसका अर्थ परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है क्योंकि यह गतिशील है जैसे-जैसे नयी तकनीकों का आविष्कार होता जाता है प्रबन्ध विशेष प्रक्रिया है जिसका कार्य विद्यालय के मानवीय भौतिक संसाधनों को ऐसी गतिशील संगठन इकाइयों में परिवर्तित करना है जिसके द्वारा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस प्रकार कार्य किया जा सके जिनके लिए प्रबन्ध किया जा रहा है अर्थातृ छात्रों तथा छात्राओं के लिए उन्हें सन्तुष्टि प्राप्त हो सके तथा जो कार्य कर रहे है उनमें उच्च नैतिक स्तर बनाये रखते हुए उत्तरदायित्व निभाने की भावना बनी रहे।

अत: वर्तमान में ये प्रयत्न विश्व के सभी देशों में शिक्षा के क्षेत्र में होने चाहिए कि गुणवत्तापूर्ण व मूल्यवान शिक्षक तैयार हों जो अपने देश के विकास की धुरी बने।

संदर्भ :-

- गुप्त, नत्थूलाल, 2002, मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- जैन, धर्मपाल, 2004, मूल्य आधारित शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष-9, अंक 52-53, जनवरी-अप्रैल 2005, पृ.सं. 63-64।
- पाण्डेय, रामशकल, 2000, मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
- प्रिया, नीरज, 2006, शिक्षक - सामाजिक परिवर्तन का अभिकता। भारतीय आयुनिक शिक्षा, वर्ष - 24, अंक - 3, जनवरी - 2006, पृ.सं. 15-26।

•••••

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जीवन शैली और शैक्षिक उपलब्धि पर वर्तमान सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन

*डॉ. रश्मि शुक्ला

शोध सार

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों के बीच जीवन कौशल शैली की वर्तमान स्थिति औसत से अधिक पाई गई। स्कूलों में लागू जीवन कौशल शैली विकसित करने के तरीकों का पता लगाने के लिए, जीवन कौशल शैली की जागरूकता, जीवन कौशल शैली गतिविधियों में भागीदारी, निगरानी और मूल्यांकन के बीच सहसंबंध और आश्रित चर, जीवन कौशल शैली (एलएसएस) को महत्वपूर्ण पाया गया। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जब छात्र जीवन कौशल शैली के बारे में अधिक जागरूक होते हैं, तो उनके बीच जीवन कौशल शैली अधिक विकसित होगा य जब छात्रों की जीवन कौशल शैली गतिविधियों में भागीदारी बढ़ जाती है, तो उनके जीवन कौशल शैली में अधिक विकास होगा और जब छात्रों के जीवन कौशल की अधिक निगरानी और मूल्यांकन होता है, तो उनके बीच जीवन कौशल शैली अधिक विकसित होगा। इसका कारण यह हो सकता है कि यदि छात्र जीवन कौशल शैली की अवधारणा के बारे में अधिक जानते हैं और अपने जीवन कौशल शैली को ग्रेड कर रहे हैं, तो यह उनके जीवन कौशल शैली को विकसित करने में योगदान करने के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण होगा।

कुंजी शब्द – जीवन शैली एशैक्षिक उपलब्धि एसूचना एवं संप्रेषण तकनीकी

कौशल शैली एक अच्छी तरह से कुछ करने के लिए एक सीखने की क्षमता है। कौशल शैली को युवा की उम्र और विकास से सबंधित क्रमिक चरणों में सीखा जाता हैं। कौशल शैली विशेष कार्य करने या विशेष लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता है। उनका सार प्रभावशीलता है। कौशल सामान्य रूप से परिपक्वता की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं और एक प्राकृतिक और सहज तरीके से अभ्यास किया जाता है, उनकी रुचि, योग्यता आदि के अनुसार विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम पर निर्भर करते है। जन्मजात होने के नाते, उन्हें नौकरी पर या लगातार अभ्यास और आत्म-शिक्षा के माध्यम से बेहतर किया जा सकता है, हालांकि समय-समय पर उम्र, अनुभव और आगामी विशेषज्ञता के साथ समय-समय पर पुन: उन्मुखीकरण के लिए उत्तरदायी है। समय के साथ परिर्वन के कारण शिक्षा से समाज की मांगें बदली हैं।

आज, दुनिया को सभी दौर के मनुष्यों की आवश्यकता है जो दक्षता के साथ एक समय में कई कार्यों को पूरा कर सकते हैं। राबर्ट कैनेडी (2000) ने कहा है कि यह दुनिया युवाओं के गुणों की मांग करती है। जीवन का समय नहीं बल्कि मन: स्थिति, इच्छाशक्ति का स्वभाव, कल्पनाशीलता, समयबद्धता पर साहस की प्रबलता, साहस की भूख सहजता के प्यार पर। व्यक्ति को समय में रचनात्मक कार्यों को पूरा करने के दौरान खुद को बनाए रखने के लिए पर्याप्त सक्षम होना चाहिए। यह इंगित करता है कि जीवन पहले की तुलना में अधिक तनावपर्ण हो गया है। दुनिया के सक्षम नागरिकों को विकसित करने के लिए, परिवार और शिक्षा को बच्चे को इस तरह से पोषण देना होगा कि वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम व्यक्ति बन जाए। आज, बच्चा शिक्षा प्रणाली में अपना या अपने जीवन का अधिक समय बिता रहा है। बच्चे

***सहायक प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर**

में कौशल शैली और ज्ञान विकसित करना शिक्षा की जिम्मेदारी है जो उसे या उसके जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए सक्षम बनाता है। अत: शिक्षा प्रदान करना समाज की आवश्यक जिम्मेदारी है।

जीवन कौशल शैली को अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्तियों को रोजमर्रा की जिंदगी की मांगों और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाता है। अनुकूल चीज का मतलब है कि एक व्यक्ति

दृष्टिकोण में लचीला है और विभिन्न परिस्थितियों में समायोजित करने में सक्षम है।

सर्वेक्षण साहित्य का अध्ययन

- वेबस्टर और वाटसन (2012) ने एक प्रभावी साहित्य समीक्षा को परिभाषित किया है कि कौशल ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए एक दृढ़ आधार बनाता है। यह सिद्धांत विकास की सुविधा देता है, उन क्षेत्रों को बदं करता है जहां अनुसंधान का ढेर मौजूद है, और उन क्षेत्रों को उजागर करता है जहां अनुसंधान की आवश्यकता है। संबंधित साहित्य और शोध अध्ययनों की महत्वपूर्ण समीक्षा के आधार पर एक व्यापक सर्वेक्षण, इस क्षेत्र में इच्छित अनुसंधान का अवलोकन प्रदान करता है। यह सबूत भी प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से किए गए काम से परिचित है, जो कि ज्ञात है और फिर भी अभी तक अज्ञात और क्षेत्र में अप्रकाशित है। इसलिए शोध के विषय से संबंधित अवधारणाओं विचारों और सिद्धांतों से अवगत कराने के लिए शोध के विषय से संबंधित साहित्य के गहन अध्ययन की आवश्यकता है। इसलिए, पुस्तको, रिपोर्टों, दस्तावेजों, पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध लेख, सार और शोध के रूप में उपलब्ध संबंधित साहित्य की समीक्षा, प्रकाशित और अप्रकाशित, दोनों शोध में एक आवश्यक कदम के रूप में प्रासंगिक हो जाती है।
- वी. पी. – पिल्लई, आरआर (2015) ग्रामीण स्कूल में किशोरों पर जीवन कौशल का प्रभाव पर एक अध्ययन में किशोरों के बीच जीवन कौशल के ज्ञान का विश्लेषण करने के उद्देश्य से और जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण के प्रभाव का उनके ज्ञान के स्तर पर नमूना पर आयोजित किया गया। केरल में एक तटीय विद्यालय के 57 उच्च विद्यालय के छात्रों प्रयोगात्मक समूह में 30 छात्रों और नियत्रंण समूह में 27 छात्रों के साथ, किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

शोध के उद्देश्य

- जबलपुर शहर के शासकीय अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्र शिक्षकों के लिए जीवन कौशल शैली मापांक तैयार करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- पुरुष और महिला उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्र शिक्षकों के सचांर कौशलशैली के औसत स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

अनुसंधान क्रिया विधि

- अनुसंधान पद्धति किसी भी शोध का दिल है और अनुसंधान पद्धति समस्या की प्रकृति पर निर्भर करती है। समस्या के गहन अध्ययन के लिए उपयुक्त कार्यप्रणाली का चयन करना आवश्यक है।
- किसी भी शोध का केंद्रीय पहलू इसकी कार्यप्रणाली में सन्निहित है। अनुसंधान के इस अध्याय पद्धति में वर्तमान

अनुसंधान के लिए शोधकर्ता द्वारा अनुसंधान डिजाइन, नमूना, उपकरण और तकनीक, डेटा संग्रह की प्रक्रिया और डेटा विश्लेषण के बारे में जानकारी शामिल है। वर्तमान शोध का उद्देश्य जबलपुर शहर के शासकीय अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र शिक्षकों के लिए चयनित जीवन कौशल शैली पर मापांक विकसित करना और प्रयास करना है। शोधकर्ता ने छात्र शिक्षक के लिए एक जीवन कौशल शैली शिक्षा मापांक तैयार किया। इसके लिए, शोधकर्ता अनुसंधान पद्धति का अनुसरण करते हैं जो इस अध्याय में दिखाया गया है।

आंकड़ों का संकलन एवं व्याख्याओं एवं विश्लेषण

- डेटा विश्लेषण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो शोधकर्ता द्वारा किए गए प्रयोग का अनुभवजन्य रूप से समर्थन करता है। इस अध्याय का मुख्य उद्देष्य संक्षिप्त तकनीकों ठोस और सही डेटा प्रदान करना और उपयुक्त तकनीकों के माध्यम से विश्लेषण करना है। वर्तमान अध्याय परिकल्पना के अनुसार डेटा के विश्लेषण और व्याख्या से संबंधित है।

आंकड़ों के संकलन की प्रक्रिया

Sr.No.	Pre-test	Life Skills
1.	Life skills scale	Communication skill, self-awareness skill, Interpersonal skill
2.	Creative Thinking test	Creative thinking
3.	Situational test	Communication skill, self-awareness skill, Interpersonal skill, Creative thinking skill

विश्लेषण की विधि

- वर्तमान शोध कार्य प्रायोगिक अनुसंधान है। एकल पूर्व परीक्षण और परीक्षण के बाद के डिजाइन को अपनाया गया था। जीवन कौशल शैली पैमाना, रचनात्मकता परीक्षण और स्थितिजन्य परीक्षण (हस्तक्षेप के पूर्व चरण और उत्तर-चरण में प्रयुक्त) एक लिकेर्ट टाइप फाइव पाइंट स्केल था और इसलिए डेटा को पूर्व जीवन कौशल शैली और जीवन कौशल शैली पोस्ट के रूप में मापा गया था। हस्तक्षेप कार्यक्रम। उचित सांख्यिकीय प्रक्रिया के माध्यम से जांच की गई जीवन कौशल शैली पैमाने, रचनात्मकता परीक्षण और स्थितिजन्य परीक्षणो ं के माध्यम से मात्रात्मक डेटा एकत्र किया गया था।

संचार कौशल शैली का अध्ययन

- लिंग के संबंध मे ं सचांर कौशल शैली के अध्ययन के लिए, शोधकर्ता ने परिकल्पना भ्व1 का परीक्षण किया।
- भ्व01रू पुरुष और महिला उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्र शिक्षको ं के सचं ार कौशलशैली के औसत स्कोर के बीच कोई महत्वपर्ण अंतर नहीं होगा।
- संबंधित नमूने में पुरुष और महिला दोनों छात्र शिक्षक शामिल हैं। पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों की उपरोक्त परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए, मीन, एसडी, एसईडी और पुरुष और महिला छात्र शिक्षको ं के संचार कौशल शैली के टी-अनुपात की गणना की गई है, जिसे तालिका - 4.1 में दिखाया गया है।

पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों की परिकल्पना कें परीक्षण

तालिका

Gender	Total (N)	Meam	SD	SED	t-ratio	Remark
Male	16	64.25	3.51	1.719	0.312	Not
Female	14	64.79	5.53			significatant

निष्कर्ष

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों के बीच जीवन कौशल शैली की वर्तमान स्थिति औसत से अधिक पाई गई। स्कूलों में लागू जीवन कौशल शैली विकसित करने के तरीकों का पता लगाने के लिए, जीवन कौशल शैली की जागरूकता, जीवन कौशल शैली गतिविधियों में भागीदारी, निगरानी और मूल्यांकन के बीच सहसंबंध और आश्रित चर, जीवन कौशल शैली (एलएसएस) को महत्वपूर्ण पाया गया। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जब छात्र जीवन कौशल शैली के बारे में अधिक जागरूक होते हैं, तो उनके बीच जीवन कौशल शैली अधिक विकसित होगा य जब छात्रों की जीवन कौशल शैली गतिविधियों में भागीदारी बढ़ जाती है, तो उनके जीवन कौशल शैली में अधिक विकास होगा और जब छात्रों के जीवन कौशल की अधिक निगरानी और मूल्यांकन होता है, तो उनके बीच जीवन कौशल शैली अधिक विकसित होगा। इसका कारण यह हो सकता है कि यदि छात्र जीवन कौशल शैली की अवधारणा के बारे में अधिक जानते हैं और अपने जीवन कौशल शैली को ग्रेड कर रहे हैं, तो यह उनके जीवन कौशल शैली को विकसित करने में योगदान करने के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

- आजाद, एम. और अधिकारी, ए. (2008)। एचआईवी और एड्स के मुद्दों को संबोधित करें और लाइफ स्किल एजुकेशन के माध्यम से स्कूल के कमजोर किशोरों को सशक्त करें - राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली के सहयोग से मोडिकेयर फाउंडेशन का एक अनूठा अध्ययन।
- बंबाका, एम. और पैट्रिकसन, एम. (2008)। पारस्परिक संचार कौशल जो सगंठनात्मक प्रतिबद्धता को बढ़ाते हैं। संचार प्रबंधन जर्नल 12, 51-72।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू. और कहन, जे.वी. (1992)। शिक्षा में अनुसंधान (छठा संस्करण)। नई दिल्ली - प्रेंटिस-हॉल ऑफ इंडिया।
- उत्तम, जे.डब्ल्यू. और कहन, जे.वी. (2006)। शिक्षा में अनुसंधान (10 वां संस्करण) नई दिल्लीरू अप्रेंटिस-हॉल ऑफ इंडिया।
- भारत एस. और कुमार, के। (2010)। स्कूलों में जीवन कौशल शिक्षा के साथ किशोरों को सशक्त बनाना- स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम - क्या यह काम करता है? भारतीय जे मनोरोग में, 2010 अक्टूबर-दिसंबर 52 (4)रू 344-349।

•••••

जबलपुर शहर के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन

*श्रीमती प्रियंका चौहान

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में जबलपुर शहर के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन किया गया है शोध का उद्देश्य जबलपुर शहर के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना था। न्यादर्श में जबलपुर नगर के अंतर्गत आने वाले हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के कला/विज्ञान संकाय के 200 छात्र छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के मापन के लिये श्यासुन्दर त्रिपाठी द्वारा निर्मित राष्ट्रीय जागरूकता मापनी का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान मानक विचलन एवं क्रातिक अनुपात सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया निष्कर्ष द्वारा यह स्पष्ट हुआ कि हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थत अंतर नहीं होता है।

कुंजीशब्द-किशोरावस्था के विद्यार्थी, राष्ट्रीय जागरूकता

भारत देश की रीढ़ की हड्डी युवा वर्ग को कहा जाता है, देश को बनाने के लिए युवा वर्ग मुख्य भूमिका निभाता है। किसी भी देश का भविश्य देश युवकों को द्वारा सुन्दर बनता है हमारा भारत देश तो युवाओं का देश है हमारे देश की जन संख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है। युवा उनको कहा जाता है जिनकी उम्र 12 से 20 साल के बीच में होती है।

किशोरावस्था के विद्यार्थी विकासशील देश को विकसित देश बनाने के लिए उसे सामाजिक आर्थिक राजनैतिक सभी विशयों में समान रूप से रूचि लेना आवश्यक है। एक मजबूत राष्ट्र के विकास के लिए युवाओं में एक फौलादी जिगर दृढ़ इच्छा शक्ति, पराक्रम, धैर्य, संयम की जबरदस्त मांग होती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि ''युवा राष्ट्र की वास्तिवक शक्ति है स्वामी विवेकानंद ने देश के युवाओं को हमेशा बढ़ावा दिया उनके विचार आज भी युवकों के मन को प्रभावित करते है कि यह ही कारण है कि विवेकानंद को कई युवा अपना आदर्ष मानते है। यह काल सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ-साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौंदर्य की रूचि उपन्न होती है, और बालक इसी समय नए-नए और ऊँचे-ऊँचे आदर्षो को अपनाता है। बालक भविश्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। अनुसंधान कार्य में प्रारंभिक किशोरावस्था को शामिल किया गया है। किशोरावस्था विकास की अवधि है, जिसके दौरान बढ़ते व्यक्ति बचपन से वयस्कता में संक्रमण करते है। किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी के एडोलसेंस का हिन्दी रूपान्तर है। एडोलसेन्स शब्द लैटिन भाषा के एडोलसियर से बना हैं, जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना। बालक का जीवन दो नियमों के अनुसार विकसित होता है, एक सहज परिपक्वता का नियम और दूसरा सीखने का नियम। बालक के रूचि विकास के लिए सीखने का कार्य अच्छा होना चाहिए, बालक सहज रूप से अपनी सभी मानसिक अवस्थाएँ पार करता है, तभी वह स्वस्थ और योग्य नागरिक

***सहायक प्राध्यापक, जबलपुर पब्लिक कॉलेज, जबलपुर**

बनता है कोई भी व्यक्ति न तो एकाएक बुद्धिमान होता है, और न परोपकारी बनता है। उसकी बुद्धि अनुभव की वृद्धि के साथ विकसित होती है, और उसमें परोपकार, दयालुता, बहादुरी, राष्ट्रीय एकता, जागरूकता के गुण धीरे–धीरे ही आते है, उसकी इच्छाओं का विकास क्रमिक होता है।

देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आवश्यक है, कि कुछ ठोस कदम उठाए जाए, देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए भगत सिंह, चंद्र शेखर आजाद, राज गुरू जैसे लाखों लोग शहीद हो गए उनकी कुर्बानी व्यर्थ न जाने दी जाए। राष्ट्रीय जागरूकता की आवश्यकता एक जुट होकर बुराईयों का सामना करने की आवाज उठाने की इसी प्रकार से साथ जागरूकता लाने की है। युवा चाहे तो क्या नहीं कर सकते? लेकिन आवश्यकता है तो केवल राष्ट्र के प्रति जागरूक होने की, तत्पश्चात सब कुछ संभव है।

वर्तमान में राष्ट्रीय जागरूकता की आवश्यकता भारतीय जनता के समान भाग्य व सम्मिलित शक्ति में आस्था उत्पन्न करने हेतु, न्याय में विश्वास करने हेतु, शोषण के विरूद्ध अपने आवाज, साहसपूर्ण उठाने की क्षमता प्रत्येक युवा में उत्पन्न करने हेतु, प्रजातंत्रीय प्रक्रियाओं के प्रति आस्था उत्पन्न करने आवश्यक, विभिन्न प्रषासनिक संस्थाओं की कार्य प्रणाली को दोश मुक्त व द्रुवगामी बनाने हेतु, राष्ट्रीय एकीकरण के लिए आवश्यक है।

शैक्षणिक महत्वः

किशोरावस्था शारीरिक और मानसिक विकास संबंधी परिवर्तनों का युग है। राष्ट्र के प्रति अपनी जागरूकता और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए किशोरों को उचित रूप से निर्देशित किया जाना चाहिए। यह केवल तभी संभव है, जब शिक्षक को किशोरों के जागरूकता के स्तर के बारे में जानकारी हो। शिक्षक अपनी विचार शक्ति को समृद्ध कर सकते है और स्वस्थ बातचीत के माध्यम से बच्चे के मन में व्याप्त भ्रमों को हल कर सकते हैं। यह अध्ययन स्कूल और समाज के लिए मददगार साबित होगा, क्योंकि यह उन्हें राष्ट्रीय जागरूकता के स्तर और किशोरो के बीच भारतीय लोकतंत्र के प्रति रवैये के बारे में वर्तमान स्थिति का विचार प्रस्तुत करेगा। इसे अध्यान में रखते हुए, जबलपुर शहर के स्कूल में प्रवेश कर सकते हे। वर्तमान स्थिति का बेहतरी इस प्रकार राष्ट्रीय जागरूकता के स्तर में वृद्धि और किशोर छात्रों के बीच भारतीय लोकतंत्र के प्रति रवैया। यह अच्छे नागरिक की शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करने में भी मदद करेगा।

शर्मा, पुष्पलता, श्रीवास्तव निशा 2014 ने अपने शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि राष्ट्रीय एकता पर नेतृत्व क्षमता एवं क्षेत्र, संकाय का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

पॉल, निवेदिता 2021 ने अपने शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि कला और विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उद्देश्य –

1 जबलपुर शहर के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना।

2 जबलपुर शहर के हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना।

3 जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना।

चर

1. स्वतंत्र चर- किशोरावस्था के विद्यार्थी
2. आश्रित चर- राष्ट्रीय जागरूकता

परिकल्पना:

1. जबलपुर शहर के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. जबलपुर शहर के हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श:

न्यादर्श हेतु जबलपुर नगर के अंतर्गत आने वाले हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की श्रेणी में अलग-अलग विभाजित किया गया इसके पश्चात शोध अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि द्वारा लॉटरी पद्धति से विद्यालयों का चयन किया गया इस प्रकार प्रदत्तों के संकलन के लिये कुल 12 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को न्यादर्श में शामिल किया गया है। चयन किये गये न्यादर्श को निम्न चार्ट द्वारा प्रदर्षित किया जा सकता है।

न्यादर्श तालिका

विद्यालय का प्रकार

हिन्दी माध्यम — अंग्रेजी माध्यम

हिन्दी माध्यम				अंग्रेजी माध्यम			
कला/वाणिज्य		विज्ञान		कला/वाणिज्य		विज्ञान	
छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
25	25	25	25	25	25	25	25

कुल विद्यार्थी-200

अनुसंधान उपकरण:

इस शोध कार्य हेतु उपकरण के रूप में श्याम सुन्दर त्रिपाठी द्वारा निर्मित राष्ट्रीय जागरूकता मापनी (हिन्दी) का प्रयोग किया गया।

सांख्किीय गणना:

प्रस्तुत शोध कार्य में साख्यिकीय गणना केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, माध्य तथा मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना सत्यापन एवं विश्लेषण:

तालिका क्रमांक -01

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन क्रांतिक अनुपात संबंधी

सारणी

माध्यम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिन्दी	100	27.65	6.40	0.02	सार्थक अंतर
अंग्रेजी	100	29.74	5.19		नहीं है

स्वतंत्रता के अंश -198 सार्थकता स्तर 0.05 के लिए मान -1.97

उपरोकत तालिका क्रमांक 0.1 से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्रांप्ताकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमाष: 27.65 एवं 6.40 है इसी प्रकार अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्रांप्ताकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश: 29.74 एवं 5.19 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के राष्ट्रीय जागरूकता के प्रांप्ताकों के मध्यमान के मध्य अंतर के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.02 है जो कि सांख्यिकी दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.05 सार्थकता स्तर के दिए गए सारणी मान 1.97 से अत्याधिक कम है अत: कहा जा सकता है हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत् किशोरवस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

अत: बनाई गई शून्य परिकल्पना 2.01 ''जबलपुर शहर के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' अमान्य नहीं होती है।

ग्राफ क्रमांक -01

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

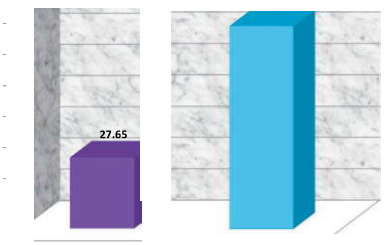

तालिका क्रमांक -02

हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के माध्यमान, मानक विचलन क्रांतिक अनुपात संबंधी सारणी

संकाय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान	50	31.06	4.34	0.14	सार्थक अंतर
कला/वाणिज्य	50	28.42	5.66		नहीं है

स्वतंत्रता के अंश -98 सार्थकता स्तर 0.05 के लिए मान -1.98

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 02 से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश: 31.06, 4.34 है इसी प्रकार हिन्दी माध्यम के कला संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान 28.42 व मानक विचलन 5.66 है। अत: दोनों समूहों के राष्ट्रीय जागरूकता के प्रांप्ताकों के मध्यमान के मध्य अंतर के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.14 है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के अंश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए सारणी के मान 1.98 से कम है। अत यह कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अत: निर्मित शून्य परिकल्पना ''जबलपुर शहर के हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' अमान्य नहीं होती है।

ग्राफ क्रमांक -02

हिन्दी माध्यम के कला/वाणिज्य और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

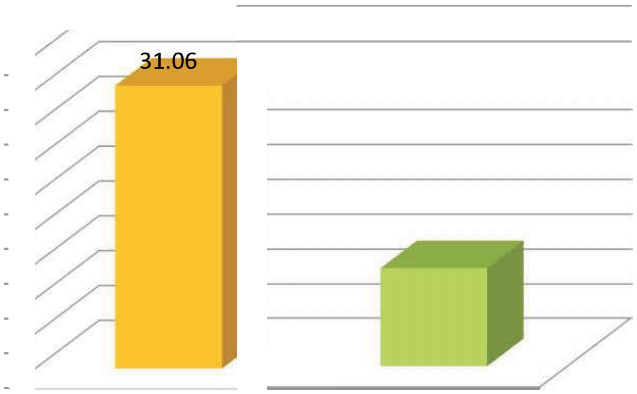

तालिका क्रमांक 03

जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के माध्यमान, मानक विचलन क्रांतिक अनुपात संबंधी सारणी

संकाय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान	50	27.48	6.28	0.39	सार्थक अंतर
कला/वाणिज्य	50	27.82	6.58		नहीं है

स्वतंत्रता के अंश -98 सार्थकता स्तर 0.05 के लिए मान -1.98

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 03 से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी माध्यम के विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश: 27.48, 6.28 है इसी प्रकार अंग्रेजी माध्यम के कला संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान 27.82 व मानक विचलन 6.58 है।

अत: दोनों समूहों के राष्ट्रीय जागरूकता के प्रांप्ताकों के मध्यमान के मध्य अंतर के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.39 है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के अंश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए सारणी के मान 1.98 से कम है। अत यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: बनाई गई शून्य परिकल्पना ''जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' अमान्य नहीं होती है।

सारणी क्रमांक -03

जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों का ग्राफीय निरूपण

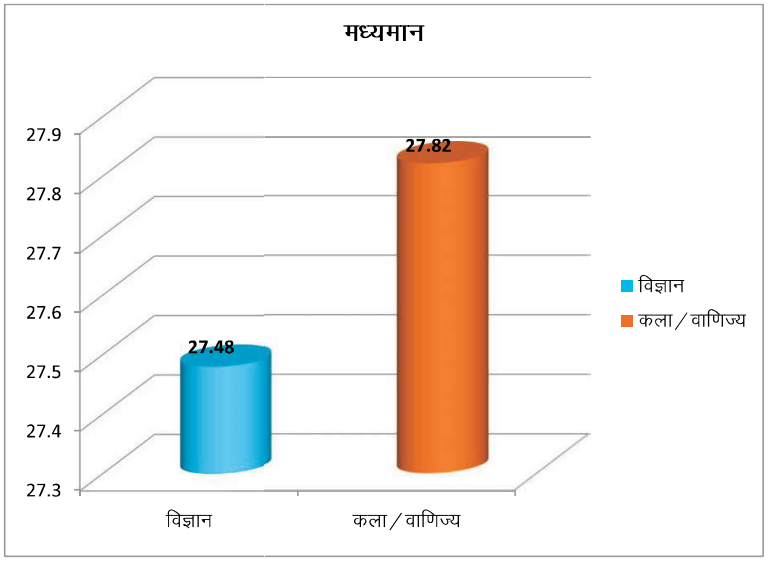

निष्कर्ष:

1. जबलपुर शहर के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
2. जबलपुर शहर के हिन्दी माध्यम के कला और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
3. जबलपुर शहर के अंग्रेजी माध्यम के लिए और विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय जागरूकता में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
4. संबंधित पूर्व शोध शमा, पुष्पलता एवं श्रीवास्तव निशा (2014) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय एकता पर नेतृत्व क्षमता एवं क्षेत्र संकाय का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। पॉल निवेदिता 2000 नें अपने शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि कला और विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय जागरूकता में सार्थक अंतर नही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. पाठक, पी.जे. (2010) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' (किशोरावस्था) श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा नवीन, संस्करण
2. कपिल, हंस कुमार (1998) ''सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में)'' श्री विनोद पुस्तक मंदिर पुस्तक प्रकाशन, आगरा, तेरहवां संशोधित संस्करण
3. श्रीवास्तव निशा, ''महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर नेतृत्व क्षमता के प्रभाव का अध्ययन'' ** Research link - 123, Vol. XIII(4), June-2014, Page 111-113, RNI No., MPHIN-2002-7041, ISSN No. 0973-1628

4- Nisha Shrivastava, "A Study of the effect of political value on national interation college, students" BRICS Journal of Educational research, Value 4(3) Page 68-72

5- B.M. Sharma, "A Study of Political awareness among senior secondary school students" vol. 1, issue 07 Oct. 2014, ISSN 2348-6775 (Online) 2349-5480 (Print)

6- Tarek Sayed Abdalazim, "Assessment of students awareness of the national heritage" article - 130620, Received 9 Nov. 2016, Published online 31 March 2017 volume-3

7- Yasir Nawa, "Role of talk show raising political awareness among youth", E-ISSN 2281-4612, Val. 3- No. 1, ISSN 2281-3993

8- Paul, Nivedita - 2000" A study of national awareness And attitude towards Indian Democracy Among Adolescent student".

•••••

A STUDY OF CYBER SECURITY CHALLENGES AND IT'S EMERGNING TRENDS ON LATEST TECHNOLOGIES

***Mr. Kamlesh Dahikar**

ABSTRACT

Cyber Security plays an important role in the field of information technology .Securing the information have become one of the biggest challenges in the present day. When-ever we think about the cyber security the first thing that comes to our mind is 'cyber crimes' which are increasing immensely day by day. Various Governments and companies are taking many measures in order to prevent these cyber crimes. Besides various measures cyber security is still a very big concern to many. This paper mainly focuses on challenges faced by cyber security on the latest technologies .It also focuses on latest cyber security techniques, ethics and the trends changing the face of cyber security.

Keywords : *Cyber security, cyber crime, cyber ethics, social media, cloud computing, android apps.*

1. INTRODUCTION

Today man is able to send and receive any form of data may be an e-mail or an audio or video just by the click of a button but did he ever think how securely his data is being transmitted or sent to the other person safely without any leakage of information?? The answer lies in cyber security. Today internet is the fastest growing infrastructure in every day life. In today's technical environment many latest technologies are changing the face of the mankind. But due to these emerging technologies we are unable to safeguard our private information in a very effective way and hence these days cyber crimes are increasing day by day. Today more than 60 percent of total commercial transactions are done online, so this field requires a high quality of security for transparent and best transactions. Hence, cyber security has become a latest issue. The scope of cyber security is not just limited to securing the information in IT industry but also to various other fields like cyber space, etc.

Even the latest technologies like, cloud computing, mobile computing, E-commerce, net banking, etc. also needs high level of security. Since these technologies hold some important information regarding a person, their security has become a must thing. Enhancing cyber security and protecting critical information infrastructures are essential to each nation's security and economic wellbeing. Making the internet safer (and protecting internet users) has become integral to the development of new services as well as governmental policy. The fight against cyber crime needs a comprehensive and a safer approach. Given that technical measures alone cannot prevent any crime, it is critical that law enforcement agencies are allowed to investigate and prosecute cyber crime effectively. Today many nations and governments are imposing strict laws on cyber securities in order to prevent the loss of important information.

***Assistant Professor, Department of Education, Sardar Patel Univarsity, Balaghat (M.P.)**

Every individual must also be trained on this cyber security and save themselves from these increasing cyber crimes.

2. CYBER CRIME

Cyber crime is a term for any illegal activity that uses a computer as it's primary means of commission and theft. The U.S. Department of Justice expands the definition of cyber crime to include any illegal activity that uses a computer for the storage of evidence. The growing list of cyber crimes includes crimes that have been made possible by computers, such as-network intrusions and the dissemination of computer viruses, as well as computer-based variations of existing crimes, such as-identity theft, stalking, bullying and terrorism which have become as major problem's to people and nations. Usually in common man's language cyber crime may be defined as crime committed using a computer and the internet to steel a person's identity or sell contraband or stalk victims or disrupt operations with malevolent

3. TRENDS CHANGING CYBER SECURITY

Here, mentioned below are some of the trends that are having a huge impact on cyber security!

3.1 Web servers:

The threat of attacks on web applications to extract data or to distribute malicious code persists. Cyber criminals distribute their malicious code via legitimate web servers they've compromised. But data-stealing attacks, many of which get the attention of media, are also a big threat. Now, we need a greater emphasis on protecting web servers and web applications. Web servers are especially the best platform for these cyber criminals to steal the data. Hence one must always use a safer browser especially during important transactions in order not to fall as a prey for these crimes.

3.2 Cloud computing and it's services

These days all small, medium and large companies are slowly adopting cloud services. In other words the world is slowly moving towards the clouds. This latest trend presents a big challenge for cyber security, as traffic can go around traditional points of inspection. Additionally, as the number of applications available in the cloud grows, policy controls for web applications and cloud services will also need to evolve in order to prevent the loss of valuable information. Though cloud services are developing their own models still a lot of issues are being brought up about their security. Cloud may provide immense opportunities but it should always be noted that as the cloud evolves so as its security concerns increase.

3.3 APT's and targeted attacks

APT (Advanced Persistent Threat) is a whole new level of cyber crime ware. For years network security capabilities such as web filtering or IPS have played a key part in identifying such targeted attacks (mostly after the initial compromise). As attackers grow bolder and employ more vague techniques, network security must integrate with other security services in order to detect attacks. Hence one must improve our security techniques in order to prevent more threats coming in the future.

3.4 Mobile Networks

Today we are able to connect to anyone in any part of the world. But for these mobile networks security is a very big concern. These days firewalls and other security measures are becoming porous as people are using devices such as tablets, phones, PC's etc all of which again require extra securities apart from those present in the applications used. We must always think about the security issues of these mobile networks. Further mobile networks are highly prone to these cyber crimes a lot of care must be taken in case of their security issues.

4. ROLE OF SOCIAL MEDIA IN CYBER SECURITY

As we become more social in an increasingly connected world, companies must find new ways to protect personal information. Social media plays a huge role in cyber security and will contribute a lot to personal cyber threats. Social media adoption among personnel is skyrocketing and so is the threat of attack. Since social media or social networking sites are almost used by most of them every day it has become a huge platform for the cyber criminals for hacking private information and stealing valuable data.

In a world where we're quick to give up our personal information, companies have to ensure they're just as quick in identifying threats, responding in real time, and avoiding a breach of any kind. Since people are easily attracted by these social media the hackers use them as a bait to get the information and the data they require. Hence people must take appropriate measures especially in dealing with social media in order to prevent the loss of their information.

5. CYBER SECURITY TECHNIQUES

Some of the techniques are-

5.1 Access control and password security

The concept of user name and password has been fundamental way of protecting our information. This may be one of the first measures regarding cyber security.

5.2 Authentication of data

The documents that should be checked if it has originated from a trusted and a reliable source and that they are not altered. Authenticating of these documents is usually done by the anti virus software present in the devices. Thus a good anti virus software is also essential to protect the devices from viruses.

5.3 Malware scanners

This is software that usually scans all the files and documents present in the system for malicious code or harmful viruses. Viruses, worms, and Trojan horses are examples of malicious software that are often grouped together and referred to as malware.

5.4 Firewalls

A firewall is a software program or piece of hardware that helps screen out hackers, viruses, and worms that try to reach your computer over the Internet. All messages entering or leaving the internet pass through the firewall present, which examines each message and blocks those that do not meet the

specified security criteria. Hence firewalls play an important role in detecting the malware.

5.5 Anti-virus software

Antivirus software is a computer program that detects, prevents, and takes action to disarm or remove malicious software programs, such as viruses and worms. Most antivirus programs include an auto-update feature that enables the program to download profiles of new viruses so that it can check for the new viruses as soon as they are discovered. An anti virus software is a must and basic necessity for every system.

6. CYBER ETHICS

Cyber ethics are nothing but the code of the internet. When we practice these cyber ethics there are good chances of us using the internet in a proper and safer way. The below are a few of them:

- DO use the Internet to communicate and interact with other people. Email and instant messaging make it easy to stay in touch with friends and family members, communicate with work colleagues, and share ideas and information with people across town or halfway around the world
- Don't be a bully on the Internet. Do not call people names, lie about them, send embarrassing pictures of them, or do anything else to try to hurt them.
- Internet is considered as world's largest library with information on any topic in any subject area, so using this information in a correct and legal way is always essential.
- Do not operate others accounts using their passwords.
- Never try to send any kind of malware to other's systems and make them corrupt.
- Never share your personal information to anyone as there is a good chance of others misusing it and finally you would end up in a trouble.
- When you're online never pretend to the other person, and never try to create fake accounts on someone else as it would land you as well as the other person into trouble.
- Always adhere to copyrighted information and download games or videos only if they are permissible.

The above are a few cyber ethics one must follow while using the internet. We are always thought proper rules from out very early stages the same here we apply in cyber space.

7. CONCLUSION

Computer security is a vast topic that is becoming more important because the world is becoming highly interconnected, with networks being used to carry out critical transactions. Cyber crime continues to diverge down different paths with each New Year that passes and so does the security of the information. The latest and disruptive technologies, along with the new cyber tools and threats that come to light each day, are challenging organizations with not only how they secure their infrastructure, but how they require new platforms and intelligence to do so. There is no perfect solution for cyber crimes but we should try our level best to minimize them in order to have a safe and secure future in cyber space.

REFERENCES

1. A Sophos Article 04.12v1.dNA, eight trends changing network security by James Lyne.
2. Cyber Security: Understanding Cyber Crimes- Sunit Belapure Nina Godbole
3. Computer Security Practices in Non Profit Organisations - A NetAction Report by Audrie Krause.
4. A Look back on Cyber Security 2018 by Luis corrons - Panda Labs.
5. International Journal of Scientific & Engineering Research, Volume 4, Issue 9, September-2019 Page nos.78 - 71 ISSN 2229-5518, "Study of Cloud Computing in HealthCare Industry " by G.Nikhita Reddy, G.J.Ugander Reddy
6. IEEE Security and Privacy Magazine - IEEECS "Safety Critical Systems - Next Generation "July/ Aug 2019.

•••••

ANALYSIS OF INVESTMENT IN MUTUAL FUNDS IN INDIA

*Dr. Nikita Shukla

ABSTRACT

The study mainly deals with providing advisory services to investor. This study is to conduct an analysis of the pattern of investment made by the investors in the Mutual Funds and to suggest possible solutions to increase awareness among the investors in Mutual Funds.

Various suggestions have been provided for increasing the awareness and investment pattern. The firm should communicate to the investors about the opportunities and benefits of investing in Mutual Funds. It should communicate to the investors about the opportunities and benefits of investing in Mutual Funds. It should start an investor club to create awareness, etc.

The conclusion of this study is the project by stating the current scenario of Mutual Funds in Indian Market and the investors general perception about the Mutual Funds.

Keywords: Mutual funds, Investment, Risk.

INTRODUCTION

Economic Liberalization has accelerated the pace of development in the Indian Securities Market which has undergone a sea exchange during the last 2 decades. The role of securities Market in mobilizing and canalizing private capital for the Economic Development of the country has increased over the years and the Securities itself has undergone Structural transformation with the introduction of the computerized online interconnected Market System.

Over the years as investment in securities gathered momentum and the need for the national analysis. Only recently security analysis and portfolio management has emerged as an important tool for investors and it is evident that rational investment activity involves creation of an investment portfolio. A portfolio is a group of securities held together as an investment.

By constructing a portfolio investors attempt to spreads risk by not putting their eggs into 1 basket. Each individual security has its own risk and return characteristics which can be measured and express quantitatively. Each portfolio by combining the individual securities has its own specific risk and returns characteristics, which are not just the aggregate, the individual security characteristics. The return and risk of each portfolio has to be calculated mathematically and expressed quantitatively. This demands the process of selecting of optimum portfolio.

HISTORY OF THE INDIAN MUTUAL FUND INDUSTRY

The mutual fund industry can be broadly put into 4 phases according to the development of the sector. Each phase is briefly described as under.

*Assistant Professor, School of Commerce & Management Arka Jain University, Jamshedpur, Jharkhand

FIRST PHASE (1964-87):-

Unit trust of India (UTI) was established on 1963 by an Act of parliament. It was set up by the Reserve Bank of India and functioned under the Regulatory and administrative control of the Reserve Bank of India. In 1978 UTI was de-linked from the RBI and the Industrial Development Bank of India (IDBI) took over the regulatory and administrative control in place of RBI.

The first scheme launched by UTI was unit scheme 1964. At the end of 1988 UTI had Rs. 6,700 corers of Assets Under Management (AUM).

SECOND PHASE (1987-93) :-ENTRY OF PUBLIC SECTOR FUNDS

Energy of non-UTI Mutual Funds. SBI Mutual Funds was the first followed by canBank Mutual Fund (Dec-87),

Punjab National Bank Mutual Funds (Aug-89),

Indian Bank Mutual Funds (Nov-89),

Bank of India Mutual Funds (June-90),

Bank of Baroda Mutual Fund (Oct-92),

LIC in 1989 and GIC in 1990.

The end of 1993 marked Rs. 47,004 Cr as Assets Under Management.

THIRD PHASE (1993-2003):-

ENTRY OF PRIVATE SECTOR FUNDS

With the entry of private sector Funds in 1993, a new Era started in the Indian Mutual Fund Industry giving the Indian investors a wider choice of fund families. Also in 1993 was the year in which the first mutual fund regulation came into existence under which all Mutual Funds, except UTI were to be registered and governed. The Erstwhile Kothari Pioneer (now merged with Franklin Templeton) was the first private sector Mutual Fund Registered in July 1993. The 1993 SEBI (Mutual Fund) Regulations were substituted by a more comprehensive and revised Mutual Fund Regulation in 1996.

The industry now function under the SEBI (Mutual Funds) Regulations 1996. The number of Mutual Funds houses went on increasing with many foreign mutual funds setting up funds in India and also the industry has witnessed several mergers and acquisition.

As at the end of January 2003, there were 33 mutual funds with total assets of Rs. 1,21,805 corers. The UTI with Rs. 44,541 corers of assets Under Management was way ahead of the Mutual Funds.

FOURTH PHASE (SINCE FEBRURARY 2003):-

This phase had bitter experience for UTI. It was bifurcated into @ separate entities. 1 is the specified undertaking of the UTI with AUM of Rs. 29,835 corers (as on January 2003).

The specified undertaking of the UTI, functioning under an administrator and under the rules frames by Government of India and does not come under the preview of the Mutual Funds Regulations. The second in the UTI Mutual Funds LTD, sponsored by SBL, PNB and LIC. It is registered with SEBI and functions under the Mutual Funds Regulation.

With the bifurcation of the Erstwhile UTI which has in March 2000 more than Rs. 76,000 corers of AUM and with the setting of the UTI Mutual Fund, confirming to the SEBI Mutual Fund Regulations and with recent mergers taking place among different private sector funds, the Mutual Fund industry has entered his current phase of consolidation and growth. As at the end of September 2004, there were 29 Funds which manage assets of Rs. 1,53,108 corers under 421 schemes.

REVIEW OF LITERATURE

The review of previous studies helps to state the objectives clearly and concisely. It finds out some gap in earlier literature & provides new insight for conducting new enquiry.

Singh and Jha (2009) conducted a study on awareness & acceptability of mutual funds and found that before investing in mutual fund investors considers various factors. Mutual Fund investment is basically preferred by the investors due to return potential, liquidity and safety. He also found that the investors are less aware about the systematic investment plan.

Prashar (2010) in her paper studied the factors which affect the perception of investors while investing in mutual funds. She has highlighted her findings state wise. She has also suggested few marketing strategies which vary from one state to another.

OBJECTIVES OF THE STUDY:

- To understand the demography of the investors.
- To know the attitude of investors towards Mutual Funds & other investment avenues.
- To establish the relationship between investors and their investment patterns.
- To understand the reason for shortcomings in the investment and drawing necessary conclusions.

HYPOTHESIS:

The following hypothesis have been stated to embark upon the objectives of this paper :

- H1- Majority of people invest in midcap belong to the age group less than 30yrs.
- H2 -People invest in mutual funds majority for 3 years with salary.
- H3- Market risk is main reason behind not investing in mutual funds. Therefore people invest in fixed deposits, recurring deposits, etc.

RESEARCH METHODOLOGY:

This paper seeks to analyse the knowledge regarding investments in mutual funds and the behaviour of the investors.

Data Collection:

Primary data has been used for the study involved in this paper. The data regarding investments and mutual funds in India has been obtained from the survey through the questionnaire.

Sample Area:

The study area of this paper includes the Indian country as a whole.

Research Technique:

This paper is based on Analytical Research

SAMPLE DESIGN

Sample Unit - Sample unit consists of the customers in the age group of 18 - 45.

Sample Size - 52 people

Sample Area - Jamshedpur, Kolkata, Bangalore, Delhi, Hyderabad, Ranchi,

Sample Technique = Simple Random Sampling

Data Analysis and Interpretation

This paper aims to find out the relationship between the investors and their investment patterns, demography of the population of the investors, also to carry out the attitudes of the investors towards mutual funds & other investments avenues.

DATA ANALYSIS

As per the data collected it has been found that out of 100 respondents 32 respondents invest in mutual funds and 68 respondents do not invest 34 in mutual funds. There are a lot reasons which discourages people from investing in mutual funds.

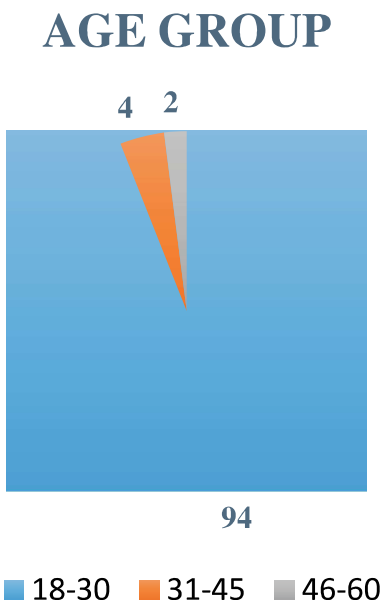

Fig : 1

In the above figure 6.1, we can see that 98% of people who are investing in mutual funds are under the age of 45 years. 94% of the people here are between the age of 18 - 30 years which means the young generation. 2% of the people in survey are above 45 years which is very low in comparison. Mutual funds are is more common among the younger generation.

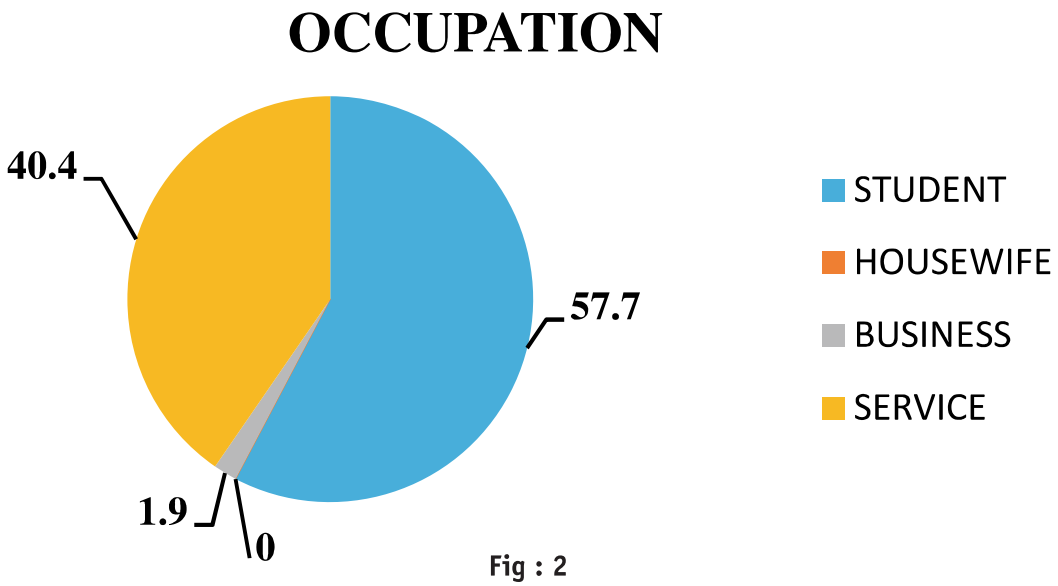

Fig : 2

In the figure 6.2, we see the different occupations of the people, where it shows that presently the younger generation also has the knowledge of investments and as per the data 57.7% of students are investing money in mutual funds therefore out of 100 respondents we get the major percent of respondents who invest in mutual funds. After that people of the service sector are investing. Lowest is the form of business sector.

Analysing both the fig 6.1 and 6.2, we can say that majority of the investors are from the age group of 18 - 30 years.

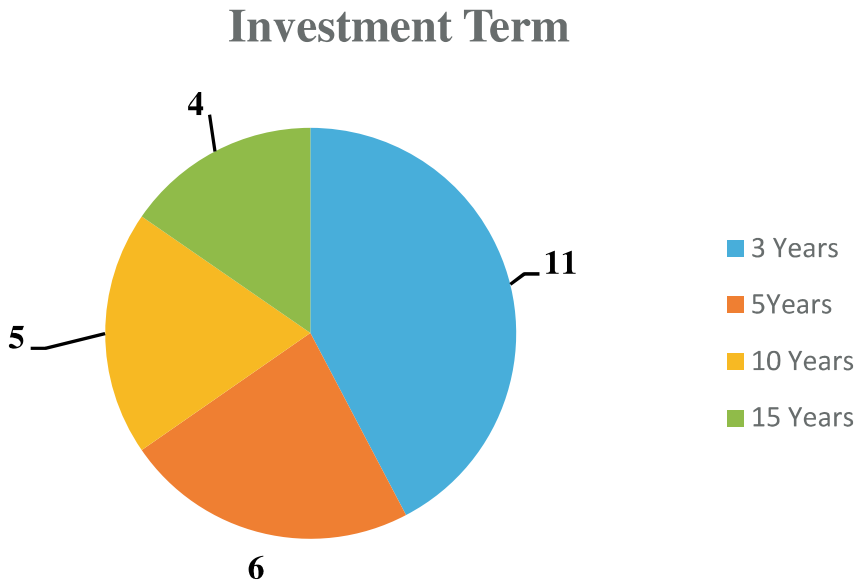

Fig 3

The above fig 6.3, shows the time period which the investors prefer to invest the money 3 years is the term which people with salary like to invest their money, people can change the term of their investment as per the type of occupation they do and other factors. It is always suggested to invest at least for 3 to 5 years to get decent interest of 8 to 10%.

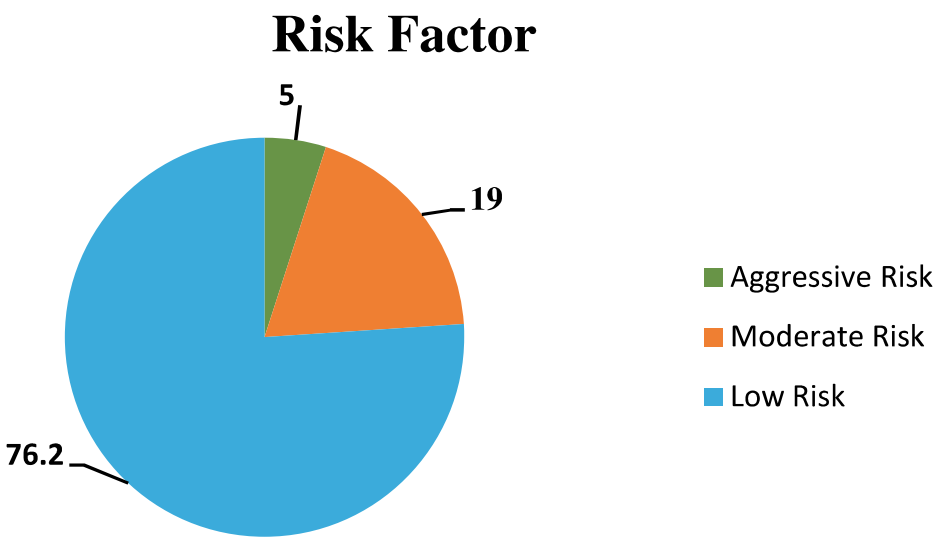

Fig 4

In the above figure it shows the nature of the funds. The small cap companies are having aggressive risk means highest risk; this says that aggressive nature risk will show the highest fluctuation in the market.

Moderate risk nature is shown by Mid cap companies (companies with a capitalization or value between $2 and $10 billion). The mid cap stocks tend to offer investors greater growth potential than the large cap stocks, but with less volatility and risk than small cap stocks.

Large-cap stocks-also known as big caps-are shares that trade for corporations with a market capitalization of $10 billion or more. Large-cap stocks tend to be less volatile during rough markets as investors fly to quality and stability and become more risk-averse. Large cap companies are always with the lowest risk.

Since, mid cap companies are with the medium risk, which also means even if it doesn't give profit like small cap it will not make the investors go through heavy losses.

Therefore, people with salary prefer investing in mutual funds which are having moderate risk in nature.

The above fig 6.5, we can see that out 52 people 34 are not investing in mutual funds. There are a lot reasons which discourages people from investing in mutual funds. Different people perceive mutual funds in a different manner. The reason for this are

Lack of adequate knowledge

Financial risk appetite of a person

Their occupation

Fig 5

The

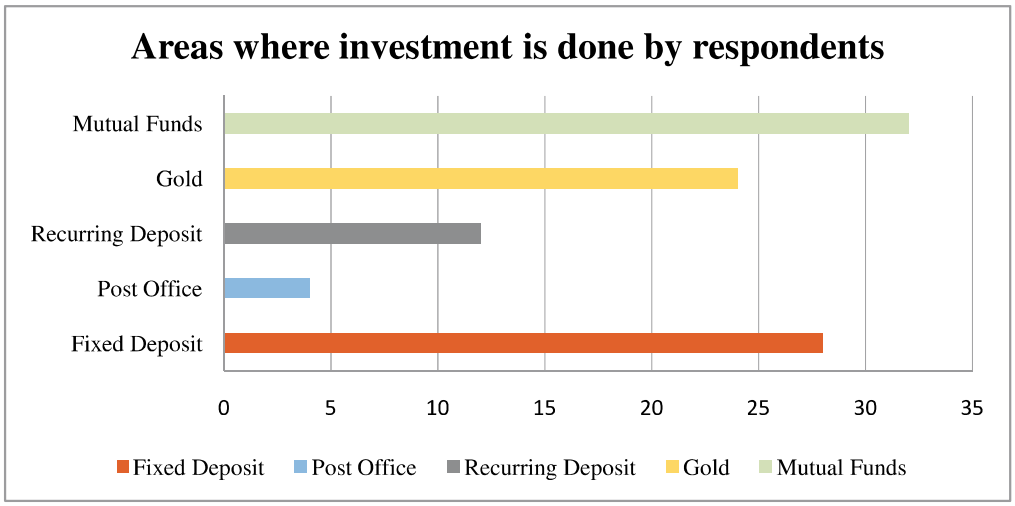

Fig 5

The above chart shows the different options of investments apart from mutual funds. These options are very familiar to the people in comparison to mutual funds. Benefits of investing in the above options are as follows:

Gold - There is strong global market demand for gold.

Gold is an ideal hedge for financial market risks.

Diversification with gold offsets inflation.

Gold is a highly liquid asset.

Fixed Deposit- Encourages Savings

Tax Benefits

Safe investments

Liquidity

Financially certain in nature

Flexible tax benefits

Recurring Deposits - No penalty if you miss a month

Start with minimum Rs 2000/month

Save for as low as 6 months

Simple documentation

Best for short-term goals.

Save bit by bit.

These are following major reasons which are particularly preventing people from investing mutual funds.

Market Risk - Mutual funds are subject to market, or systematic, risk. This is because there is no way to predict what will happen in the future or whether a given asset will increase or decrease in value. Because the market cannot be accurately predicted or completely controlled, no investment is risk-free.

Lack of knowledge - Investment in mutual funds requires some basic knowledge before investing and its sources. People are not much familiar to the mutual funds concept, therefore following the conventional ideas in order to avoid risk and loss of money.

INTERPRETATIONS

The study based on the data obtained by the survey regarding the money investment in India, shows that the behaviour of the people towards the different options of investment of money in order to save and earn interests. This survey showed mix review towards the mutual funds, for example

- People of the age group who prefer investing in mutual funds are between 18 - 30 years in majority.
- Investors invest in mutual funds prefer investing for the minimum time period of 3 years, and in the funds which have moderate risk of loss, basically in midcap companies.
- People who are avoid investing in mutual funds are investing in conventional options of investments like fixed deposits, gold etc.
- There are many reasons behind not investing in mutual funds but the major reason is that " Mutual funds are subjected to market risk" .
- People with salary avoid taking high risk.
- Financial institutions should provide knowledge about new investment ideas to make people aware.
- Investment of money in mutual funds is directly related to the knowledge about it and market status.

FINDING AND RECOMMENDATIONS

The following findings have been drawn from the study regarding the Mutual funds and its investments in India:-

- Majority of respondent are from services sector followed by businessman, the professional and others.
- Nearly half of the respondent is in the income is less than 20000.
- Majority of respondent neglect the mutual funds.
- Half of the respondents are regular investor.
- Many respondents prefer the safe and low risk investments
- Source of information plays a key role in investing in the mutual fund markets.
- Majority of respondents must consider the safety and income.

- Most of the people are investing in convectional ideas of money investments because mutual funds are subjected to market risk.
- The overall performance of mutual funds is average compare to other investment ideas.

The following recommendations have been drawn from the study regarding the Mutual funds and its investments in India.

- There should be awareness created to know about the Mutual Funds and some tools should be used to convince to invest in Mutual Funds.
- To provide good services at the time of redemption of the money.
- The investor is not having any knowledge about Mutual Funds. So the company should tell them and they may be ready to invest their money in Mutual Funds.
- The company can increase its market in the areas of Mutual Funds also. It can be done through targeting the equity market customers and convincing them to invest in Mutual Funds also.

CONCLUSION

In this study we can see the attitude of the investors towards Mutual funds and there is a general lack of complete knowledge about mutual funds & other investment avenues. A mutual fund brings peoples together and establish a relationship between investors and their investment pattern and invest their money in stock, bonds, and other securities. The advantages of mutual funds are professional management, diversification, low cost, regulatory oversight and liquidity and helps in understanding the reason for shortcomings in the investment and drawing necessary conclusion. Majority of people invest in midcap belong to the age group less than 30 years and they invest in mutual fund majority for 3years.

In this report here we can say that there is a lack of knowledge towards the Mutual Funds in stock market. Most of the investors thought that Mutual Funds are one-way ticket to a jackpot but it is not so.

REFERENCES:

- Aggrawal, D., (2007), 'Measuring Performance of Indian Mutual Funds', Prabhandan Tanikniqui, Vol. 1, No. 1, pp. 43-52.
- Gupta, M., and N. Aggarwal, (2007), 'Performance of Mutual Funds in India: An Empirical Study', The ICFAI Journal of Applied Finance, Vol.13, No. 9, pp. 5-16.
- Anand, S., and V. Murugaiah, (2008), 'Analysis of Components of Investment Performance--An Empirical Study of Mutual Funds in India', 10th Indian Institute of Capital Markets Conference, ICFAI: Hyderabad.
- Guha, S. (2008). Performance of Indian Equity Mutual Funds vis-a-vis their Style Benchmarks. The ICFAI Journal of Applied Finance, 49-81.
- Sehgal, S., and Janwar, M., (2008), "On Stock Selection Skills and Market Timing Abilities of Mutual Fund Managers in India", International Research Journal of Finance and Economics, Euro Journals Publishing, Issue 15, pp. 307-317.
- Singh, B. K. and Jha, A.K. (2009), "An empirical study on awareness & acceptability of mutual

fund", 49-55, Regional Student's Conference, ICWAI.

- Prabakaran, G., & Jayabal, G. (2010). Performance Evaluation of Mutual Fund Schemes in India: An Empirical Study. Finance India. XXIV(4), 1347-1364.
- Joshi, Himanshu. (2010). Comparative Performance Evaluation of Mutual Fund Schemes in Bearish Market in India. Synergy: I.T.S Journal of IT and Management. 8 (2), 17-26.
- Prashar, N. (2010),"Factors Affecting Perception of Mutual Fund Investors: A Comparative Study of Three States" In Mehta, S. and Amarnani, N. Book, Sustaining Shareholder Value-Role of Investors and Regulators, (pp.327-339) New Delhi: Excel Books.

•••••

FDI IN EDUCATION SECTOR OF INDIA IMPACT AND BENEFITS

*Miss Neha Aggarwal

ABSTRACT

India's desire for foreign money has risen as the country's economy has become more globalised. India having the highest number of young population of age group of 5-24 years and thus is becoming a more popular destination for foreign direct investment. In developing countries like India, the training business is becoming increasingly important. Because of its enormous potential, the advanced education sector has very bright prospects. The number of educational institutions in India has risen tremendously. Offering training to young people in India, particularly in rural areas, is a huge challenge. This article has important implications for educators who want to gain from FDI, as well as governments that must implement appropriate laws. The source of the investment has no bearing on its status as an FDI: it might be made "inorganically" by purchasing a firm in the target country or "organically" by expending the activities of an existing company in that nation.

Key words: Education sector, FDI, MHRD, investments

INTRODUCTION

India has an important position in the education industry of the world. India has one of the largest networks of higher education institutions in the world. But, there is still a lot of potential and a crucial need for further development in the education system.

Moreover, the government aims to raise its current gross enrolment ratio to 30 per cent by 2020 which will result in the boost to the growth of the distance education in India.

In the recent times, the education sector in India has witnessed a tremendously paradigm shift in recent times. Once viewed largely as a type of charitable or philanthropic activity, it has since turned into an 'industry' in its own right. So far, the basic primary education sectors as well as certain technical institutions for higher education, like the Indian Institutes of Technology (IITs) and the Indian Institutes of Management (IIMs) have been the proper centrepiece of the education sector of India.

• But, due to the rise in global competition along with the impertinent need to expand quality education at the grassroots level, government in India have slowly but definitely set some major reforms in the Indian education sector.

REVIEW OF LITERATURE

Mr. Debjyoti Dey and Ms. Sapana Mishra (2018), in their paper ' A Study on FDI in Education Sector and Its Impact on Gross Enrolment Ratio in Higher Education in India: An Econometric Approach'has tried to present FDI in education sector through complex statistics and econometrics. The

Assistant Professor, School of Commerce and Management, Arka Jain University, Jamshedpur, Jharkhand

objectives of the paper were:

1. To analyse the impact of FDI in education sector on Gross Enrolment Ratio in higher education in India
2. To determine the causal relationship between FDI in education sector and Gross Enrolment Ratio (GER) in higher education.

The calculations and discussion of the study indicated that there is a Long run relationship between FDI in education and Gross Enrolment Ratio in higher education. And the relationship was proved by co-integration test. The co integrating equation was tested by Fully Modified Least Squares (FMOLS) method. The dependant variable i.e. FDI in education sector was showing a positive and significant coefficient although the coefficient value was very less. Mafruza Sultana, VidushiKagdiyal, Vishal M Goyal, Sai PratyushChakkala and Rajeshri Parmar (2019), in their study 'Impact Of FDI On Indian Economy'has presented facts which tries to evaluate empirically, the relationship between foreign direct investment (FDI) and economic growth in India by using yearly data for a decade from 2006-07 to 2016-17.The study identified that the major factor influencing the inflow of FDI to India, which is poised of various variables collected under FDI and Indian economy

Objectives of the study:

- To study the need of FDI in education in India
- To analyze the current trends and patterns of flow of FDI towards education sector.
- To Study the Benefits after introduction of FDI in Education Sector in India.
- To suggest the removal of various barriers for FDI in Indian education system.

HYPOTHESIS:

- **H_{01}-** There has been an improvement in the overall education scenario in India after the introduction of FDI in Education Sector of India.
- **H_{02}-** There is a need of encouragement of Foreign Investors and FDI inflow for the benefit of Education sector in India.

RESEARCH METHODOLOGY

The Research Methodology consists of the research design and process of the study including the data collected from different sources in concern with education system of India as well as FDI inflow and outflow in the country.

RESEARCH DESIGN:

The research has been conducted by using the secondary data. The Research technique applied for the fulfilment of objectives of this paper is descriptive in nature. The study takes into consideration the entire country since education in a country is a centralised issue.

LIMITATIONS OF THE STUDY

- The study is based only of secondary data from various sources. No field work has been done.
- Since the data presented in the study is collected from other sources, it is limited to certain years. Very recent was not found.

- Since centralised statistics has been used, very in-depth study cannot be done.

DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION

There are 993 universities, 39,931 colleges and foundations altogether with 3.73 crore students currently enrolled in it. According to "ALL INDIA SURVEY ON HIGHER EDUCATION" CONDUCTED BY MHRD. Starting 2020, there are 39,931 colleges, 15,22, 346 schools and 10726 standalone establishments in India, according to the most recent measurements from the site of India's HRD service. These numbers would just have expanded at this point.

HYPOTHESIS TESTING (H01):

The statistics used for this purpose include the engagement of people in education in over the years. About 27% of Indian population is in the school going age group of 0-14 years. Chart 1 depicts the age wise demographics of Indian population. Over the past 50 years, number of individuals lying in age bracket of 15-64 years and 65+ years has risen, while number of individuals lying in age bracket 0-14 years has seen a fall.

Chart 1: Age wise Demographics in India and involvement in education over the years (%)

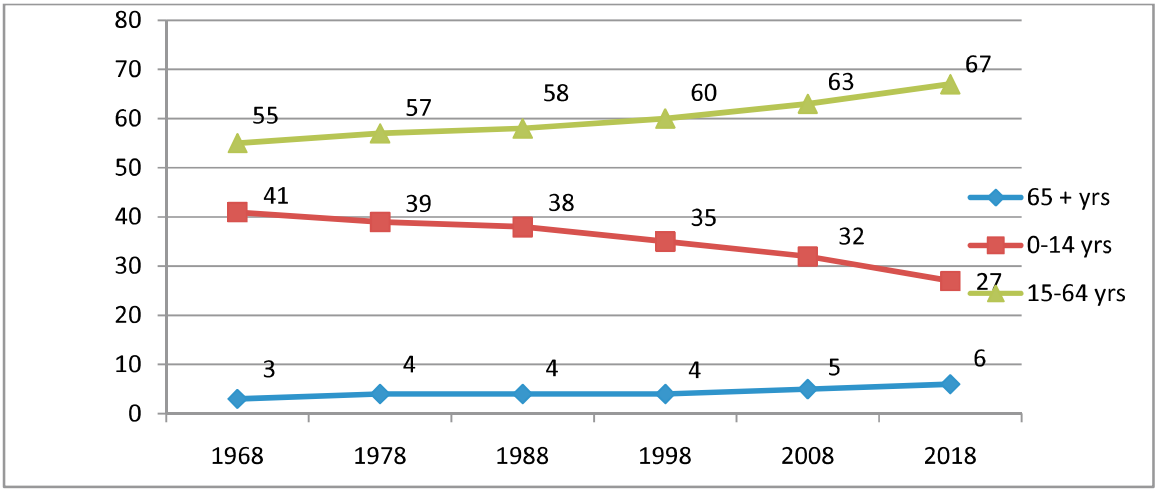

Chart 1. Source: World Bank Report

EDUCATION SECTOR AFTER THE INTRODUCTION OF FOREIGN DIRECT INVESTMENT

Education sector in India remains to be a strategic priority of the government. The Government of India has allowed 100 per cent Foreign Direct Investment (FDI) in the education sector through the automatic route since 2002. The sector has received cumulative FDI worth US$ 2.7 billion up to September 2019. Indian education sector witnessed 18 merger and acquisition deals worth Rs 342.4 crore (US$ 49 million) in 2017. As per Government of India, New National Education Policy to transform India's higher education system to one of the global best education systems very soon. During April 2000 to June 2019, the Indian education sector has attracted Rs. 15,459 crore through the FDI route. The FDI in the education sector in India has increased at a CAGR of 54.65% from Rs.168 crore in 2011 to Rs.5,479 crore in 2019. Further during 3M-FY20, the FDI inflow in education sector is Rs.194 crore. The Government of India (GOI) has allowed100% Foreign Direct Investment (FDI) in the education

sector. Under the automatic route but still the foreign inflow in the education sector has stood at 1.81 % during FY19 as the purpose of this sector is not to earn profit but to remain non - profit sector.

Chart 2: Foreign Direct Investment in Education Sector in India

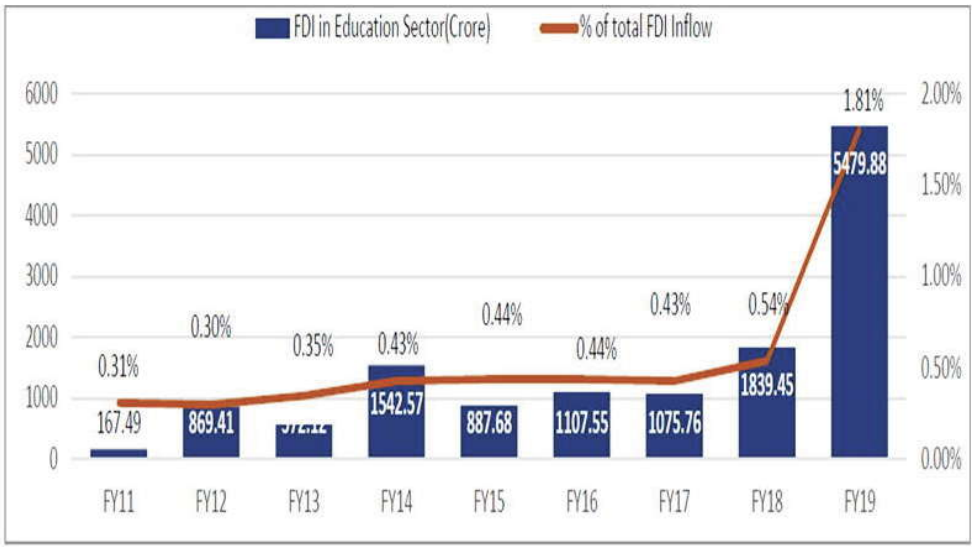

Chart2. Source: Department of Industrial Policy and Promotion (DIPP)

The above chart represents data from the financial year 2011 since FDI in the education sector in India was introduced only after the 12th 5 year plan came into motion. Before that, there has been negligible or no FDI participation in the education sector of the country.

Number of colleges and universities

Owing to increase in demand for higher education in semi- urban areas, the number of universities and similar institutes rose 31%, while the number of colleges increased 4% over the past 5 years.

Increase in no. of Colleges and Universities

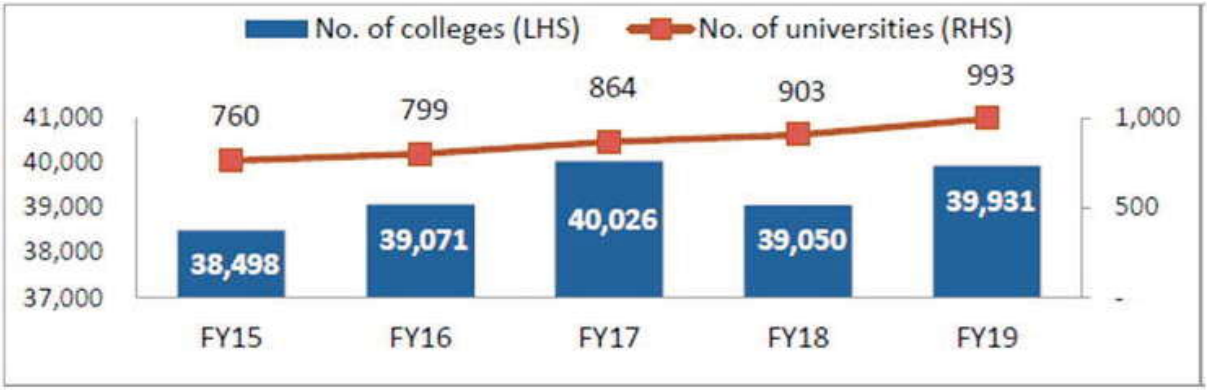

Chart. Source: MHRD Survey Report FY 19

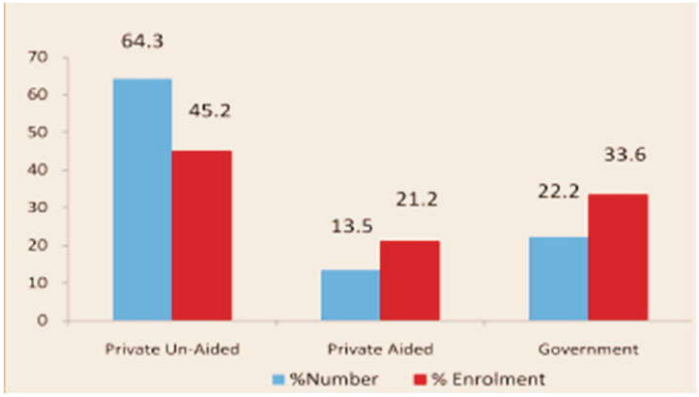

Chart1. Gross Enrolment in various institutions. Source : mhrd.gov.in

There are more than 77.8% colleges running in Private sector; aided and unaided taken together, and it caters 66.4% of the total enrolment. This chart shows enrolment in Private and Government Colleges .

H_{01}- There has been an improvement in the Education scenario after the introduction of FDI in Education Sector of India.

Analysis: Chart 1. depicts how the number of individuals lying in age bracket 0-14 years has seen a fall that can be attributed to various social as well as economical issues. But with the passage of time, the education level among the various age brackets in the country has improved over the last fifty years. A rise in the age group 16-54 years can been seen especially after the year 1991 that is the year when new economic policy was introduced in the country.

Chart 2, 3 & 4 depicts how with the rise in FDI inflow in the Education Sector of the country over the years, we have seen a gradual rise in number of schools and universities as well. The Government of India has considered FDI in the education sector as a not profit investment and owing to that the investment may not seemed to be vast but it has certainly contributed in the growth of private aided and unaided institutes in India and hence simultaneously contributing to the GER and the overall educational scenario of the country.

6.2 HYPOTHESIS TESTING(H0)

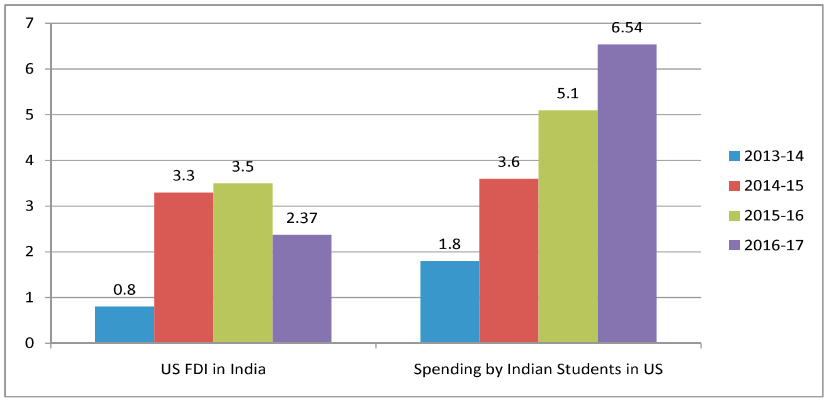

Chart 2.Source :All India Survey Of Higher Education

In the above chart, (in $) input data is taken from various sources,It is clear that Indian students spending in US is comparatively higher than US investing in India.

From the chart below, government has set a target to be achieved by Indian education system which was 15% in 2011 and has to grow up to 30% in 2020.

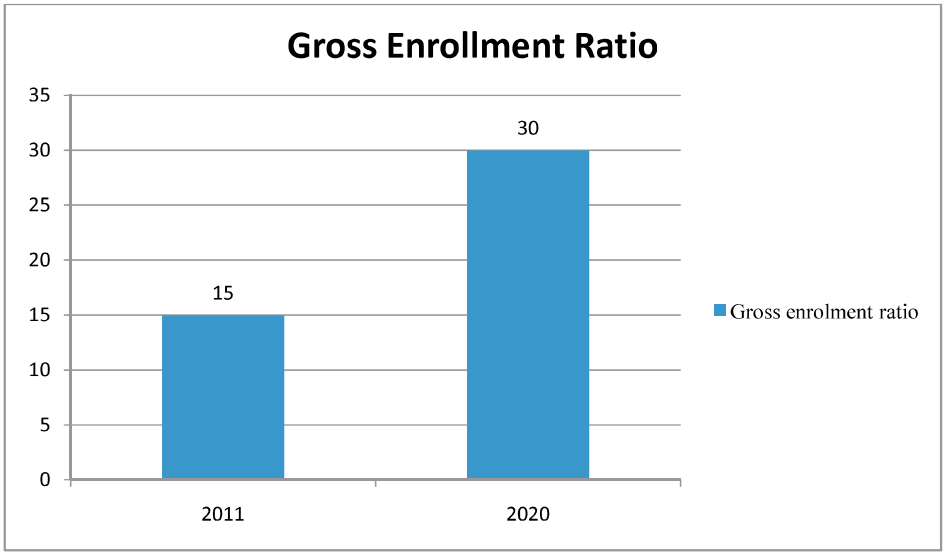

Chart3. Source : www.mhrd.gov.in

H02- There is a need of encouragement of Foreign Investors and FDI inflow for the benefit of Education sector in India.

ANALYSIS:

Chart 5 shows how Indian students spent a whopping Rs 80,000 crore for higher studies in United States, which is double the annual budget of the Indian government for higher education at Rs 35,000 crore. It is three times the fund the Central government has earmarked for IITs, NIITs, IIMs and Central universities.A report says that an increase of 5.4 per cent were witnessed over the last year, adding that this marks the fifth consecutive year that the total number of Indians pursuing their higher education in the USA has grown. The report was quoted by Hindustan Times. Notably, Indian students are nearly 18 per cent of all international students in the USA, sitting next only to China. India provided the second highest amount of graduate students and fourth-most undergraduates.

People choosing foreign countries over native countries is a major problem which is holding back the development of Education Sector in India. With the recent investment plans and strategies, the government aims in increasing the gross enrolment ratio from 15% to nearly double 30% at the end of 2020.

For completing such targets as mentioned above, Education sector needs investment from foreign countries apart from their own country's investment. Despite the size of flair market, Currently India is unable to meet the demand for education. Funds raised by the government stands 37% in primary, secondary and higher education, to overcome this, the gap between the demand and supply should be bridged by inviting the foreign investments in the market.

From the above analysis and interpretation of graphs, it can be conferred that both the hypothesis H01and H02 has proven to be true keeping in mind the obtained results.

RECOMMENDATIONS:

- Without a doubt there is a potential for critical overflow profits by FDI We have to set up establishments which can bring new culture and framework for making better ability pool. For this to happen, we need top establishments of the world to open their focuses in India. India must act in self-interest.
- Indian advanced education is at an edge of cutting edge quality change like Indian industry in mid 1990s with liberalization of economy. There ought to be a suitable administrative structure that would guarantee quality and benchmarks in educational modules, courses, educators, assessment and appraisal frameworks and so forth.
- India needs foreign direct investment to improve their education, through technical innovations and to stand first in gross enrolment ratio as well as 100% literacy rate should be enhanced. Regulatory bodies need to be framed by the Indian government .Regulating the entry and operations of foreign providers thus helping the Indian education to grow where professionals are appointed and improving the infrastructure is required.

Keeping the above points into consideration, it can be said that if flow of Increased FDI is enabled with a proper structure and a reliable regulatory body governing it, it can certainly contribute towards the OVERALL ECONOMY DEVELOPMENT of the country in numerous ways.

CONCLUSION

Pulling in FDI into India has turned into an essential segment of the financial advancement systems for India. FDI has been a thriving component that has fortified the financial existence of India. "Speculator cordial" environment will offer India some assistance with establishing itself as a favoured destination of outside financial specialists. India has colossal potential for engrossing more prominent stream of FDI in years to come.

At last it is not wrong to state that India badly need funds for the development of education sector as it is beyond the capability of country to cater the need of finance. In order to tackle this situation 100% FDI has been allowed by the Govt. but besides its advantages and it is having certain severe disadvantages which needs strict action on the part of Indian govt. A regulatory body should be framed otherwise India might face some bad consequences in context of culture and autonomy of foreign education providers.

FUTURE SCOPE OF THE STUDY

- The study can be done using primary data and conducting field research as well.
- An in-depth state wise study can be done to better understand the implications of FDI in education sector of different states.
- Implementation of better statistical tools can be used in order to get accurate data in numerical aspects.

BIBLIOGRAPHY

JOURNALS:

1. Kalpana Singh, and Dr. AlkaAwasthi, (2016) -"Impact of foreign direct investment on higher education"- International journal of research: Granthalaya.
2. Rida Shaikh & Ajay Shukla (2016); 'A Study of Education Sector in India'AEF Report, Ashoka College ofEducation, Nasik, India ISBN 978-93-5215-58, 2016, Page no. 03-07
3. T.Greeshma and S.Ujwala (2016); 'Role of FDI in Indian Higher Education Sector' IOSR Journal ofBusiness and Management (IOSR-JBM), ISSN 2319-7668, May 2016, Page no. 31-36.
4. Dr. R. R. Pansare and Dr. Manisha Shinde (2017); 'A Study of Changing Scenario in Education Sector with Reference to FDI in India'Pune Research Times ISSN 2456-0960(O) January 2017 Page no. 02-05
5. Md. Sajid Akhtar Khan and Dr. K. K. Jha (2016); 'To Study the Status ofFDI in Indian Education Sector: Its Problem and Prospects'International Journal of Engineering and Management Research ISSN 2250-0758 (O) ISSN 2394-6962 (P) March- April 2016 Page no. 555-563
6. Md. Sajid Akhtar Khan &Dr. (Prof.) K.K. Jha (2016), 'To study the Status of FDI in Indian Education Sector: Its Problem and Prospects'International Journal of Engineering and Management Research,ISSN (O): 2250-0758, ISSN (P): 2394-6962, Page Number: 555-563

REPORTS :

1. Higher education needs more FDI: Deloitte report published in 2016.
2. AISHE- All India survey on higher education website.
3. UNESCO United nations educational, scientific and cultural organisation.
4. University grants commission.

•••••

फीजी में हिंदी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन

*श्री प्रवीण कुमार

शोधसार

फीजी में हिंदी पत्रकारिता का दीर्घकालीन गौरवशाली इतिहास है। पिछले कई वर्षों से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने एक ओर दीर्घकाल तक प्रवासी भारतीयों को फीजी, भारत तथा विदेश के समाचारों से अवगत कराया है। समय पर उनका मार्गदर्शन किया है, वहीं दूसरी ओर फीजी के भारतवासियों को संगठित भी किया है। अपने देश, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के प्रति उनके मन में सम्मान जगाया है। फीजी सरकार द्वारा प्रकाशित पत्र 'फीजी फोकस' भी द्विभाषिक रूप में नियमित प्रकाशित हो रहा है।

फीजी एक बहुजातीय देश है जहाँ भारतीयों के अतिरिक्त वहाँ के मूल निवासी कई बीती फीजियनद्ध रहते हैं। आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड के लोग भी पर्याप्त संख्या में फीजी में हैं। सबकी भाषा एवं धर्म अलग-अलग है किंतु हिंदी भाषा जाति तथा धर्म के बंधन से ऊपर उठकर सभी भारतीयों के लिए ही नहीं फीजी के समस्त निवासियों के बीच सम्पर्क की भाषा बनी हुई है। इस देश में हिंदी पत्रकारिता के गौरवशाली 106 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

सन् 1913 में डॉ. मणिलाल ने भारतीयों को संगठित करने के लिए 'द सेटलर' पत्रिका प्रकाशन अंग्रेजी से प्रारंभ किया था। किंतु शीघ्र ही उन्हें यह अनुभव हो गया कि देश के कोने-कोने में बसे हुए भारतीयों तक संदेश पहुँचाने के लिए अंग्रेजी उतनी कारगर नहीं हो सकती जितनी कि उनकी अपनी भाषा हिंदी। इसीलिए 'द सेटलर' का हिंदी संस्करण भी निकालना प्रारंभ कर दिया। ये 'द सेटलर' पत्रिका का यह हिंदी संस्करण फीजी में हिंदी पत्रकारिता का शुरुआती कदम था। धीरे-धीरे इस पत्र की लोकप्रियता बढ़ने लगी और वह समस्त भारतीयों को समाचार के माध्यम से संगठित करने लगा। इस पत्र के हिंदी संस्करण के संपादन का दायित्व संभाला पं. शिवराम शर्मा ने हिंदी के प्रति बढ़ती हुई रुचि तथा हिंदी में समाचार जानने और पढ़ने की लालसा ने कई भारतीयों को हिंदी पत्र निकालने के लिए प्रेरित किया।

दूसरे दशक में फीजी में कई हिंदी पत्रों के प्रकाशन की शुरुआत हुई। इन पत्रों में 'फीजी समाचार', 'भारतपुत्र' 'वृद्धि तथा 'वृद्धि वाणी' लोकप्रिय हुए, किंतु फीजी समाचार के अतिरिक्त कोई अन्य पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका। फीजी समाचार का प्रकाशन इंडियन प्रिंटिंग तथा पब्लिशिंग कम्पनी द्वारा 1923 में शुरू हुआ और इसके प्रथम संपादक थे - बाबू राम सिंह। यह पत्र 1957 ई. तक प्रकाशित हुआ और इसके अंतिम संपादक रहे नौसेरी प्रांत के पं. चंद्रदेव सिंह। आपको हिंदी, कार्ड बीती तथा अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान था। वे फीजी रेडियो के लिए कहानी तथा प्रहसन आदि भी लिखा करते थे।

फीजी में 1930-40 के मध्य तीन हिंदी समाचार-पत्र प्रकाशित हुए। पहला पत्र हिंदी मासिक 'वैदिक संदेश' था जिसका प्रकाशन आर्य समाज के कार्यकर्ता पं. श्रीकृष्ण शर्मा करते थे। दूसरे मासिक पत्र 'सनातन धर्म' का प्रकाशन 1927 ई. में सनातन धर्म महासभा द्वारा किया गया, किंतु आपसी विरोध और द्वेष के कारण दोनों पत्र शीघ्र ही बंद हो गए। दिनांक 11 मई 1935 को 'शांतिदूत' साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन फीजी टाइम्स एण्ड हेराल्ड नामक ब्रिटिश प्रकाशन संस्था द्वारा प्रारंभ किया गया। यह समाचार पत्र विगत 80 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रहा है। विदेश की हिंदी पत्राकारिता में जो

***शोधार्थी, हिंदी विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर**

स्थान फीजी से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक समाचार पत्र 'शांतिदूत' ने स्थापित किया है वह विदेश का कोई भी हिंदी पत्र प्राप्त नहीं कर सका है। इस साप्ताहिक पत्र का संपादन का दायित्व पं. गुरुदयाल शर्मा को सौंपा गया और पं. शर्मा को इस पत्र का दायित्व संभालने से पहले 'वृद्धि' तथा 'वृद्धिवाणी' तथा 'पैसिपिफक प्रेस' नामक हिंदी पत्रों के संपादन का अनुभव पूर्व से था। शांतिदूत के प्रवेशांक में पं. शर्मा ने 'हमारा अभिप्राय' शीर्षक से एक प्रभावपूर्ण संपादकीय लिखा। जिसमें उन्होंने शांतिदूत के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली का संक्षिप्त परिचय दिया है। 'शांतिदूत' की बढ़ती लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा के कारण कुछ भारतीय पाठकों ने ईर्ष्यावश 'शांतिदूत' के विरुद्ध गंभीर आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी कि 'शांतिदूत' का प्रकाशन संकट में पड़ गया, किंतु भारत से आए सनातन धर्मोपदेशक पं. रामचंद्र शर्मा के हस्तक्षेप से यह विरोध खत्म हो गया। 'शांतिदूत' ने स्थानीय समाचारों को पत्र में अधिक स्थान दिया। रामायण मंडलियों की गतिविधियों को भी प्रधानता दी तथा शिक्षा के विस्तार के लिए भी प्रयास किया। हर त्यौहार पर सुंदर विशेषांक प्रकाशित कर सभी धर्मों के प्रति समभाव तथा पारम्परिक समझ का वातावरण बनाया। सन् 1939 ई. में छिड़े विश्वयुद्ध में भारतीय जनता को सचित्र समाचार देने वाला 'शांतिदूत' अकेला हिंदी पत्र था। पच्चीस वर्ष पूरे होते-होते शांतिदूत फीजी का सबसे सम्मानित पत्र बन गया। शांतिदूत ने 1960 ई. में अपनी रजत जयंती बड़े धूमधाम से मनाई।

फीजी शांतिदूत' समाचार पत्र की शुरुआत के पश्चात् चौथे दशक में फीजी में अनेक मासिक तथा साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन हुआ। अखिल फीजी कृषक महासंघ ने 'दीनबंधु', श्री ज्ञानीदास ने 'ज्ञान', पं. बी.डी. लक्ष्मण ने 'किसान' आर्य पुस्तकालय ने 'पुस्तकालय', श्री काशीराम कुमुद ने 'प्रवासिनी', श्री रामखेलावन ने 'प्रकाश' पत्रों का प्रकाशन किया। इसी दौरान 'जंजाल', 'सनातन प्रकाश' तथा मजदूर आदि पत्र भी प्रकाशित हुए। काशीराम कुमुद ने 'प्रवासिनी' पत्रिका में स्थानीय कवियों की रचना को स्थान देकर उनको प्रोत्साहित करने का काम किया। 'प्रवासिनी' पत्रिका अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका थी।

पाँचवे दशक में 'जागृति' पत्र का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण घटना थी। 'फीजी' के पश्चिमी जिलों के किसानों के मध्य यह पत्र अत्यंत लोकप्रिय हुआ। किन्तु 1975 में बंद हो गया। 1953 में 'आवाज' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी अल्पावधि के लिए हुआ। 'झंकार' पत्र का प्रकाशन श्री ज्ञानीदास के संपादन में हुआ। इस पत्र में संक्षिप्त समाचार, फिल्मी गाने, कविताएँ आदि होती थीं। आर्थिक साधनों की कमी के कारण यह पत्र 1958 में बंद हो गया। इसके पूर्व श्री ज्ञानीदास ने 'तारा' मासिक पत्रिका प्रकाशन भी किया था जो उनकी ही प्रेस में छपा करता था।

फीजी के प्रतिभाशाली कवि एवं विद्वान लेखक श्री कमला प्रसाद मिश्र के संपादन में 1956 ई. में 'जय फीजी' हिंदी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। आपके ही संपादन में 'जागृति' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रथम अंक 1958 ई. में प्रकाशित हुआ। संपादक के रूप में उन्होंने देश के समस्त उदीयमान लेखकों को अपने पत्र में लिखने के लिए प्रेरित किया। 'जागृति' के माध्यम से संपादक के रूप में मिश्र जी ने पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित की। उन्होंने अपने पत्र में सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक विषयों पर अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित कर फीजी के भारतीयों को विविध विषयों पर सोचने तथा समझने के लिए प्रेरित भी किया था। इस पत्र का गिरमिट शताब्दी अंक 11 मई 1979 ई. को प्रकाशित किया गया था। श्री मिश्र लगभग 35 वर्ष तक फीजी की हिंदी पत्रकारिता में सक्रिय रहे।

फीजी में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के प्रारंभ एवं बंद होने का सिलसिला लगातार चलता रहा। पं. नन्दकिशोर ने 1959 ई. में हिंदी साहित्य प्रचारिणी सभा की स्थापना करने के साथ ही 'किसान मित्र' साप्ताहिक पत्रिका का संपादकीय दायित्व भी संभाला। वे किसानों, मजदूरों, लेखकों तथा कवियों के मध्य बहुत लोकप्रिय हुए। इसी बीच श्री वी.एस. मोरिस ने 'फीजी-संदेश' पत्र भी निकाला। उनके संपादकीय राष्ट्रीय समस्याओं पर विश्लेषणात्मक एवं रचनात्मक होते हैं।

फीजी का 1947 ई. में सनातन धर्म महासभा के मुख पत्र के रूप में 'सनातन संदेश' नामक पत्रिका प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस महासभा के महासचिव एवं फीजी हिंदी महापरिषद् के प्रधान पं. विवेकानंद शर्मा 'सनातन संदेश' के संपादक थे। आप फीजी सरकार में मंत्री भी रह चुके थे। फीजी में हिंदी के प्रचार-प्रसार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। 'सनातन संदेश' एक मासिक पत्र था तथा उद्देश्य सनातन धर्म के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना था। किंतु यह पत्र कुछ अंक निकालने के बाद बंद हो गया।

फीजी सरकार की ओर से भी कुछ पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी में प्रकाशित की गई। 1926 ई. में 'राजदूत' तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 'विजय' के अंक भी प्रकाशित हुए। फीजी सरकार के सूचना मंत्रालय ने 'फीजी वृत्तांत' तथा 'शंख' पत्रों का प्रकाशन किया। इसके अतिरिक्त भी फीजी सरकार समय पर हिंदी पाठकों के लिए प्रपत्र तथा सूचना आदि हिंदी में प्रकाशित किया करती है। जनवरी 1986 में फीजी हिंदी साहित्य समिति द्वारा 'साहित्यकार' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इस पत्रिका के प्रथम अंक के मुख्यपृष्ठ पर भारत के प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचंद का चित्र प्रकाशित कर निम्नलिखित उदाहरण प्रकाशित हुआ -

साहित्यकार, मानवता, दिव्यता और भद्रता का बाना बाँधे होता है। जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है - चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, उसकी हिमायत करना और वकालत करना उसका फर्ज है। उसकी अदालत समाज है, इसी अदालत के सामने वह अपना इस्तगासा पेश करता है।

इस पत्रिका के सम्पादन मंडल में वी. सुधाकर, रामनारायण गोविंद, एम.सी. 'विनोद' एवं सलीम बख्श का नाम प्रकाशित था। यह पत्रिका कितनी अवधि तक प्रकाशित हुई, इसके प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

फीजी से एक और हिंदी साप्ताहिक का प्रकाशन सन् 1988 में 'सरताज' नाम से हुआ। इसमें फीजी, भारत तथा अन्य देशों के समाचार भी छपते रहे। श्री एम.एम. दास के संपादन में प्रकाशित इस पत्र को 'वॉयस ऑफ पीपल' के नाम से जाना जाता था।

फीजी में 21वीं शताब्दी की शुरुआत में ही 'संस्कृति' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन डॉ. विवेकानंद शर्मा के संपादन में प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका में अध्यात्म जैसे स्तम्भों के अलावा कहानी, कविताएँ आदि भी प्रकाशित होती थी।

इस प्रकार फीजी में हिंदी पत्रकारिता का दीर्घकालीन गौरवशाली इतिहास है। पिछले कई वर्षों से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने एक ओर दीर्घकाल तक प्रवासी भारतीयों को फीजी, भारत तथा विदेश के समाचारों से अवगत कराया है। समय पर उनका मार्गदर्शन किया है, वहीं दूसरी ओर फीजी के भारतवासियों को संगठित भी किया है। अपने देश, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के प्रति उनके मन में सम्मान जगाया है। फीजी सरकार द्वारा प्रकाशित पत्र 'फीजी फोकस' भी द्विभाषिक रूप में नियमित प्रकाशित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. गिरमिटया देश फीजी हिंदी पत्रकारिता के 103 वर्ष - डॉ. जवाहर कर्नावट, गगनांचल, जनवरी-अप्रैल 2017, पृ.सं. 31
2. उपरिवत्, पृ.सं. 32
3. उपरिवत्, पृ.सं. 33
4. उपरिवत् पृ.सं. 36

•••••

रागों की भाषा

*श्री रामलाल कुर्मी

लेख सार

भारत पुरातन दृष्टि में सर्वोच्च स्थान पर है। यहाँ पर संगीत का इतिहास बहुत पुराना है। भारत में अनेक प्रकार की भाषाओं का प्रचलन है, लेकिन सभी भाषाएँ हिन्दी भाषा की बहने है। अपने विचारों को प्रकट करने के लिए सभी जीवों की अपनी भाषा होती है और सभी विधाओं व शस्त्रों की अपनी भाषा होती है। इसी तरह संगीत भारत का अभिन्न शास्त्र है, इसकी भी अपनी भाषा है। इसमें रागों का योगदान है। रागों को अलापने के लिए या सीखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है जिसमें हिन्दी भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। रागों को जानने के लिए रागों की भाषा को जानना बहुत ही महत्वपूर्ण है। रागो का पुराने संगीतज्ञों के अनुसार है, इसका विवरण संक्षिप्त में दिया गया है।

कम से पाँच और अधिक से अधिक सात स्वरों की वह सुंदर कृति जो कानों में मीठे स्वर भर दे राग कहलाती है। आधुनिक युग में राग- गायन का प्रयोजन बहुत ही महत्वपूर्ण है और राग की प्रयोजनीयता से ही संगीत का अस्तित्व है। अभिनय राग मंजरी में परिभाषा कुछ इस तरह देखने को मिलती है:-

योअयं ध्वनि-विषेवस्तु स्वर-वर्ण-विभूषत:।
श्रंजकों जनचित्तनाम स रग कथितों बुधे।

अर्थात स्वर और वर्ण से विभूषित ध्वनि, जो मानुषी का मनोरंजन करे राग कहलाता है। राग में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर होने चाहिए। पाँच स्वरों से कम का राग नहीं होता। प्रत्येक राग किसी न किसी थाट से उत्पन्न होती है। जैसे राग भूपाली को कल्याण थाट से और राग बागेश्वरी काफी थाट से निर्मित हुई है।

प्राचीन काल में राग के दस लक्षण माने जाते थे, जो है- गृह, तार, उपन्या, षाडत्व, ओडत्व, गृह, अंश न्यास अल्पत्व बहुत्व मंद है। इनमें से कुछ आज भी प्रयोग किए जाते है। किसी भी राग में षडज अर्थात सा हमेशा साथ मे ही होता है, क्योंकि यह सप्तक का आधार स्वर होता है। प्रत्येक राग में 'म' और 'पष' में हसे कम से कम एक स्वर रहना जरूरी होता है। तीव्र 'म' भी अधिकतर साथ में होता है।

भूपाली राग में तो मालकोष में 'प' किन्तु कोई राग में 'म' और 'प' दोनों एक साथ अनुपस्थित हों ऐसा देखने को नहीं मिलता। राग में किसी स्वर के दोनों रूप एक साथ प्रयोग नहीं किए जाते। उदाहरण के लिए खसज राग के आरोह शुद्ध नि और अवरोह में कोमल नि प्रयोग किया जाता है।

राग की जातियाँ - राग - लक्षण के अंतर्गत पहले बता दिया गया है, कि राग में आरोह और अवरोह दोनों का होना जरूरी है। रागों में अधिकतर आरोह और अवरोह बराबर होते है। जैसे सात अवरोह होंगे तो सात आरोह होंगे। राग खगाज के अवरोह मे सात स्वर होंगे तो छह आरोह होते है। इसी प्रकार कुछ ऐसे भी है जिनमे अगर आरोह पाँच होगे तो अवरोह छह होते है। इसी प्रकार राग कि छह जातियों के आधार पर एक थाट से कुल 484 रागों की रचना हो सकती है। राग की तीन मुख्य जातियों के विभिन्न मिश्रण से छह जातियाँ बनी, इनके नाम है-

*शोध छात्र, रानी दुर्गावती वि.वि जबलपुर

(1) सम्पूर्ण – सम्पूर्ण आरोह व अवरोह दोनों में 7–7 स्वर

(2) षाडव – षाडव 6–6

(3) षाडव – ओडव – 6 और 5

(4) ओडव – सम्पूर्ण –5 और 7

(5) सम्पूर्ण – षाडव–आरोह मे सैट और अवरोह में 6

(6) सम्पूर्ण – ओडव – आरोह 7 और अवरोह में 5

(7) षाडव – सम्पूर्ण – आरोह में 6 ईउर अवरोह में 7 स्वर

(8) ओडव– षाडव – 5 और 6 स्वर

(9) ओडव– ओडव आरोह –अवरोह दोनों में 5–5 स्वर बिलावल थाट से स्पष्ट करते है रागों को ओर उसकी रचना को।

क्योंकि इसकी रचना विधि कठिन है यदि स्वरों के आरोह और अवरोह को ध्यान रखा जाए तो समझने मे सरलता हो जाएगी। बिलावल थाट को लेते है, तो इसके सातों स्वर शुद्ध होते है। सर्वप्रथम मुखी तीन जातियों के आरोहों की रचना करेंगे। सम्पूर्ण जाति का केवल एक आरोह बन सकता है। क्योंकि यह किसी थाट में अधिक से अधिक सात शुद्ध द्वार होते है और सम्पूर्ण जाति के आरोह में सातों स्वर प्रयोग होंगे।

रागों के प्रकार:–

राग खमाज

रे वर्जित कर अरोहन में, गावत राग खमाज।
द्वितीय पहर निषि गाइए, राखों नि–ग संवाद।।

राग का विवरण – राग खमाज की रचना विद्वानों ने खमाज थाट से मानी है। इस राग के आरोह में रिषभ का प्रयोग वर्जित है। और अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग अनिवार्य है। इसलिए जाति षाडव–संपूर्ण मानी जाती है। निशाद की बात की जाये तो आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल – निशाद प्रयोग किया जाता है। जिसमें बचे हुए स्वर शुद्ध लगा सकते है। रात्रि का द्वितीय पहर इसका गायन का समय है, इस समय अधिकतर कार्यक्रमों में इसका गायन किया जाता है।

आरोह – सा, ग,म, प, ध, नि, सां।

अवरोह – सां, नि, ध, प, म ग, रे, सा।

पकड़ – नि, घ, म, प, घ, कक म, ग, प, म, ग, रे, सा।

खूबियाँ:– (क) यह राम की खूबी है कि, यह चंचल प्रवृत्ति का है। इसमें विलम्बित और द्रुत दोनों प्रकार की धुन बजाई जाती है।

(ख) यह राग दूसरी रागों की अपेक्षा आश्रय है।

(ग) इसके अवरोह में 'ध' से 'प' पर ना जाकर मध्यम ही जाते है। ऊपर पहले ही हमने यह संकेत किया है कि

ऋषभ निषेद है लेकिन ठुमरी के आरोह में ऋषभ का प्रयोग कर लेते है। यदि अन्य रागों को आंशिक रूप से प्रयोग करते है तो सौन्दर्य में बढ़ोत्तरी झलकती है।

राग विहाग

रे, ध वर्जित आरोहन में, गाते राग बिहाग।
पहले पहर में गाइए, सोहत नि-ग संवाद।।

राम विवरण - राग बिहाग की रचना विद्धानों ने बिलावल थाट के अन्तर्गत मानी है। इसके अवरोह में भी राग खमाज की तरह सातों स्वर प्रयोग किये जा सकते है। परन्तु आरोह में रे, ध, निषेध होते है। तीव्र 'म' और श्रेष स्वर का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है। इसकी जाति औडव - सम्पूर्ण है।

आरोह - नि, सा, ग, मं, प, नि, सां।

अवरोह - सां, नि, ध, प, म, प, ग, म, ग, रे, सा।

पकड - नि, सा, ग, प म, ग, मं, ग, रे सा।

खूबियाँ :- (क) यह राग गंभीर राग है इसमें विलम्बित ख्याल, द्रुत ख्याल तथा तराना गाया जाता है। इसकी मन्द, मध्य या तार तीनों सप्तकों में सामान रूप से होती है।

(ख) प्रचार में तीव्र 'म' का प्रयोग अधिक होने से कुछ विद्धान इसे कल्याण थाट का राग मानने लगे है लेकिन पुराने ग्रंथों में इसकी मान्यता विलावल थाट की है।

(ग) कभी- कभी अवरोह के साथ तीव्र मध्यम का प्रयोग पंचम के साथ विवादी स्वर की तरह करके सुन्दरता में इजाफा कर लिया जाता है।

राग भैरवी

कोमल रहत है रे, ग, ध, नि, मानै मध्यम वादी।
प्रात: समय जाति सम्पूर्ण, सोहत सा संवादी।।

राग विवरण:- इसकी रचना भैरवी थाट से मानी गई है। इसमें रे, ग, ध और नि स्वर कोमल लगाने होते है। इसकी जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण है। प्रात: समय में इसको गाया जाता है।

आरोह - सा, रे, ग, म, प, ध नि, सां।

अवरोह - सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

पकड़ - म, ग, रे, ग, सा रे, ध, नि, सा।

खूबियाँ:- (क) यह राग चंचल है। इसके श्रोता एवं गायक में चंचल प्रवृत्ति विकसित होती है। इसमें छोटा ख्याल, तराना, ठप्पा - ठुमरी गाई बजाई जाती है।

(ख) राग विवरण के अन्तर्गत इसमें यह देखने को मिलता है और बताया भी गया है कि रे, ग, ध, और नि स्वर कोमल लगते है लेकिन प्रचार में इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) अवरोह में अधिकतर गंधार वक्र प्रयोग किया जाता है। जैसे ग, म, रे, ड, ऽ रे सा।

(घ) इसे संधिप्रकाश राग भी कहते है क्योंकि इसको प्रात:काल में गाया जाता है।

राग बहार

दो निशाद ग कोमल, गावत राग बहार।
मध्य रात्रि षाडव - षाडव, काफी थाट सुहाय।।

राग विवरण - इस राग की रचना काफी थाट से मानी जाती है। इसके आरोह में 'रे' और अवरोह में 'ध' स्वर निषेध है। इसलिए इसकी जाति षाडव-षाडव मानी जाती है। इसमें निशाध और गंधार कोमल लगता है। इसको गाने का समय मध्य रात्रि है।

आरोह - सा, म, म, प, ग, म, ध, नि, सां।

अवरोह - सां, नि, प, म, प, ग, म, रे, सा।

पकड़ - सा, म, म, प, ग, नि, ध, नि,सा।

खूबियाँ - (क) यह राग उत्तरांग प्रधान है। इसकी चलन ज्यादातर सप्तक के उत्तरांग तथा तार सप्तक में होती है।

(ख) इसका उल्लेख किसी प्राचीन ग्रंथों में नहीं है। यह स्पष्ट होता है कि इसकी रचना मध्यकाल के आस-पास हुई है। यह राग तीन रागों के मिश्रण से निर्मित हुआ है। इस बात का उल्लेख भातखण्डे जी की कृमिक पुस्तक भाग चार में है। बागेष्वरी, मल्हार सुम्मिलत... सुर अड़ाना बीच चमकत...।

(ग) इसके आरोह में पंचम तथा अवरोह में गंधार स्वर वक्र है। इस राग की प्रवत्ति चंचल है। इसमें बड़ा ख्याल तथा मसीतखानी गतें सुनने में कम आती है।

राग हमीर

ध, ग, वादी-संवादी मानत, प्रथम पहर निषि गावत।
दो मध्यम सब सुरन से हमीर राग सब जानत।।

राग का विवरण - कल्याण थाट से रग हमीर की उत्पत्ति मानी गई है क्योंकि इसमें दोनों माध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते है इसकी जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण है।

आरोह - सा,रे, सा, ग, म, प, ग, म, ध, ऽ, नि, ध, सां।

अवरोह - सां, नि, ध, प, म, प, ध, प, ग,म, रे सा।

पकड़- सा, रे, ग, म, प, म, नि, ध।

खूबियाँ - (क) तीव्र 'म' का अल्प प्रयोग केवल आरोह में पंचम के साथ और शुद्ध 'म' का प्रयोग आरोह - अवरोह दोनों में होता है। केदार, कामोद, ओर हमीर रागों मे तीव्र प्रयोग एक ही ढंग से किया जाता है।

(ख) ग या म से तार सप्तक को जाते समय आरोह मे पंचम छोड़ दिया जाता ऐसा विद्वानों का मत है। यह प्राचीन ग्रंथों में भी स्पष्ट किया गया है।

(ग) धैवत पर निशाद आस लेना इस राग की खूबी है। जैसे - ग, म, नि, ध, नि, ध, सां।

(घ) राग की रंजकता अवरोह में धैवत के साथ कोमल नि, का प्रयोग किया जाता है। कल्याण थाट में इसका प्रयोग किया जाता है।

राग गौंड़ सारंग

ग, ध स्वर संवाद करत कल्याण थाट सब जानै।
दो मध्यम मध्यान्ह काल, गौड़ सारंग सब जानैं।।

राग का विवरण - संगीतकारों राग गौड़ सारंग की उत्पत्ति रचना कल्याण थाट से मानते है। ऊपर दोहे के माध्यम से स्पष्ट भी किया गया हैं। इसके आरोह -अवरोह में सभी स्वर वक्र प्रयोग किये जाते है। इसलिए इसकी जाति वक सम्पूर्ण मानी गई है। वादी स्वर गंधार और संवती स्वर धैवत है।

आरोह - सा, ग, रे, म, ग, प, म, ध,प नि, ध, सां।

अवरोह - सां, ध, नि, प, ध म, प,ग, रे, म, प, ऽ, रे, सा।

पकड़ - सा, ग, रे, म, ग, प, ऽ, रे, सा।

खूबियों- (क) तीव्र मध्यम का अलग प्रयोग आरोह -अवरोह में केवल पंचम के साथ होता है लेकिन शुद्ध मध्यम आरोह - अवरोह दोंनों में प्रयोग किया जाता है।

(ख) इसमें प, ग, रे की संगती बहुत दिखाई जाती है। प्रत्येक आलाप के अंत में इसका प्रयोग देखने को मिलता है।

(ग) इसमें निशाद वक्र होने के साथ-साथ अल्प भी इस राग की चलन वक्र होने के कारण इसे वक्र सम्पूर्ण जाति का राग कहा गया है। साथ ही तीनों में वक्रता कम कर दी जाती है।

राग भूपाली

थाट कल्याण मनी वर्जित, मानस ग स्वर वादी।
प्रथम पहर निषि गाइये, धैवत स्वर संवादी।।

राग विवरण - विद्वानों में इस राग की रचना कल्याण थाट से मानी है। इसमें मध्यम और निशाद स्वर निषेध है। इसलिए इसकी जाति ओडव- ओडव है। रात्रि के प्रथम पहर में इसका गायन किया जाता है।

आरोह - सा, रे, ग, प, ध, सं।

अवरोह - सां, ध, प,ग,रे,स।

पकड़ - प,ग,रे,ग,स,रे,ध,स।

खूबियों- (क) इस राग में ध्रुपद बड़ा - बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल और तराना गाया जाता है। इसमें ठुमरी नहीं गाई जाती है। कुछ पुराने संगीतज्ञ इस राग में प, रे, की संगति करते है। किन्तु अधिकतर संगीतज्ञ ऐसा नहीं करते।

(ख) यह राग पूर्वांग प्रधान है। अर्थात इसका चलन अधिकतर मन्द और मध्य सप्तकों के प्रथम हिस्से में होती है।

(ग) दक्षिण भारतीय संगीत में जिसे कर्नाटक संगीत कहते है। इसे मोहन कहते है।

इस प्रकार संगीत की कुछ रागों की भाषा का संक्षिप्त में परिचय में दिया गया है। उपर्युक्त रागों की भाषा सीखने एवं सीखाने के साथ- साथ प्रयोग करने में भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है। रागों की भाषा संगीतज्ञ के प्रस्तुतीकरण में अहम योगदान रखती है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. सिक्ख धर्म अध्ययन प्राथमिक जानकारी भाग प्रथम संपादक जसबीर सिंघ साबर (डॉ.)
2. परम निधान श्री गुरू ग्रन्थ साहिब डॉ. सरूप सिंघ अलग
3. राग परिचय भाग 1 एवं 2 श्री हरीष चंद श्रीवास्तव
4. संगीत शास्त्र श्री एम वी मराठे
5. संगीत विषारद श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग

•••••

रेखा - चित्रगत आशुलिपि

*डॉ. साजन कुरियन मैथ्यू

शोध सार

हमारे जीवन में रेखा का बहुत महत्व है। रेखा के बिना किसी भी आकृति की कल्पना निराधार या बेमानी है। वातावरण में उपस्थित सभी वस्तुओं में रेखा देखी जा सकती है विज्ञान व गणित की कल्पना भी रेखा के बिना नहीं की जा सकती। रेखा सीधी वक्र- वलय आदि रूपों में हमारे जीवन में घुली मिली है। घरेलु समान, हो या हवाईजहाज, सभी का आधार रेखा है। कला जगत भी रेखा के महत्व को इंकार नही कर सकता अमूर्त हो या मूर्त दोनों अवस्था में रेखा रीढ़ की हड्डी का काम करती है।

अगणित बिन्दुओं का समुच्चय रेखा, शून्य से पूर्णता की ओर यात्रा की वाहिनी है। रेखा सदियों से मानव की बुद्धि का परिपाक संजोती रही है। भावों की प्रतीक, उमंगों की अनुगामिनी रेखा, नित नये रूप धर कर मानव मन-मस्तिष्क की गहराइयों और ऊँचाईयों का अद्‌भुत सौन्दर्य उद्घाटित करती आई है। यह संगीत से बंधी और गणित तो इसी पर आश्रित है। सच पूछों तो हमारा समस्त ज्ञान व अनुभव रेखा का मुखापेक्षी है। रेखा न हो तो हमारा ज्ञान, हमारे साथ ही नष्ट हो जाए किन्तु रेखाबद्ध ज्ञान कुछ स्थायित्व का आष्वासन तो देता ही है। आदिवासी, इजिप्शियन, भारतीय इन सभी संकेतबद्ध कलाओं ने यही प्रमाणित किया है।

जीवन संघर्ष का प्रतीकात्मक दर्शन व्यक्तिगत और सामूहिक आशा आकांक्षाओं का चित्रण, प्रकृति के प्रभाव का दर्शन, अतीत और वर्तमान अनुभव, इन सभी तानों-बानों से रेखा आलेखन करती है। इसकी प्रतीति सर्वप्रथम आदि मानव के चित्रों में होती है। आदि मानव ने चित्र रचना क्यों की होगी? अनुमानत: सौन्दर्य पिपासा की शंति हेतु? या कोई आवश्यकता? अथवा - मृत्यु-भय अथवा सहज खेल? इनमें से कोई भी कारण हो सकता है। मानव अन्तर में घुमड़ता भावनाओं का सागर, बुद्धि का विलास व उसकी गतिमय अभिव्यंजना से ही हमारी कला का इतिहास निर्मित होता है।

हर्बट रीड के अनुसार - ''पूर्व पाषाण काल में बुशमेन व स्पेन तथा भारत की रेखा में द्विपार्श्वता और त्रिपार्श्वता के गुण आ जाते हैं।''

मानव-मन में, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, शिक्त का प्रदर्शन एवं उसके संकलित अनुभव और मरणशील जगत को अमर बनाने की साध से मिलकर रेखा, इतिहास बनाती है। यही बात मिस्त्र की कला में दिखाई देती है जिसमें चित्रण, रेखा प्रधान ही है। अगणित मनोहर चित्रों का अंकन धर्म की पृष्ठ भूमि पर, अतीत से संकलित ज्ञान की अभिव्यक्ति, राजाओं की मृत्युंजयी आकांक्षा और नील नदी की लहरें सभी ने रंग-रेखाओं में अभिव्यक्ति पाई। इसी मृत्युंजय ने मानव जीवन में उत्कर्ष और पराक्रम की नींव रखी। मिस्त्र की चित्रलिपि रेखांकित अनुभूतियाँ ही तो हैं। इनकी रेखाएँ लचीली थीं लेकिन मेसोपोटामिया बेबीलोन में रेखाओं का रूप सीधा ठोस और संघर्षपूर्ण था।

इसके पश्चात् विश्व के क्षितिज पर बौद्ध और ईसाई कला का जन्म हुआ। शांति और प्रेम के सन्देशों को विश्व के अनेक भागों में रेखांकित किया गया। अजन्ता और बायजेन्टाईन में इसके जीवन्त प्रमाण उपलब्ध हैं। अजन्ता की कला में

***विभागाध्यक्ष - व्यावहारिक कला, एनिमेशन एवं गेम डिजाईन, राजा मानसिंह संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर**

रेखाओं को अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। **श्री सी. एल. झा लिखते हैं रेखाऐं प्रत्येक भाव की सूचक हैं। ये जोरदार, गहराई, आंखों की चितवन, अंगों की गठन, रसों की उद्दीपन, जैसे प्रेम, लज्जा, हर्ष, शोक-उत्साह, क्रोध, घृणा, भय, चिन्ता, आश्चर्य की सुन्दर अभिव्यक्ति, दर्शक को बड़ा प्रभावित करती है। राजा का ओज, सेवक की विनीत भावना, स्त्री की लज्जा आदि रेखाओं के द्वारा बड़े मनोरम ढंग से दिखाई गई है।''** इसलिए भारतीय चित्रकला को रेखा प्रधान कहा गया है।

गिरिराज किशोर लिखते हैं-

''आदिम चित्रकार ने परवर्ती सन्तति को रेखाओं का अमूल्य उपहार प्रदान किया जो आज तक चला आ रहा है।''

भारतीय चित्रों में आकार बहुभुजात्मक (Polygonal) अथवा दीर्घवृत्तात्मक (Ellyplical) नहीं होते वरन् गतिशील मनोवैज्ञानिक घनत्व (Dynamic Psychological Volume) से निर्मित होते हैं, इसी से भारतीय रेखाएँ आकार का इतना बोध नहीं कराती जितना भाव का। उनसे मांसलता का स्थूल अनुभव देने की अपेक्षा गतिमय भाव और सूक्ष्म सौन्दर्य का आनन्द अनुभव कराने की चेष्टा की जाती है। भारतीय रेखाओं में गति तो होती है किन्तु ईरानी रेखाओं की भॉति ये सपाटेदार नहीं होती। दूसरे यह सब स्थानों पर एक सी नहीं होती। शरीर के अंगों के अधिक कोमल स्थानों पर इन रेखाओं में विशिष्ट लोच आ जाती है। भारतीय रेखाओं में बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ गम्भीर से गम्भीर भाव भी बड़ी कुशलता से व्यक्त हुए हैं। इसके द्वारा गोलाई स्थितिजन्य लघुता (Foreshorting) तथा परिप्रेक्ष्य (Perspective) आदि सब कुछ प्रदर्शित कर दिया गया है।

कार्ल खण्डालावाला लिखते हैं-

"Of excellent continuity, vigorous of delicate as the occasion demands and always rhythmic."

अजन्ता की गुफा नं. 1 के पाद्मपाणि के चित्र का महत्व इन्हीं रेखाओं के कारण है।

ग्लेडस्टोन सोलोमन का कथन है-

"Line so far as motral has yet discovered it, the line that has guided Indian Art in safty for Thousands of years that will continue to guide it to even greater achievement. If Europe discovered line".

अजन्ता की इसी रेखा शैली ने चीन, जापान, सुदूरपूर्व व समस्त एशिया की कला को प्रभावित किया। चीन की चित्रकला और लिपि, सामग्री व सौन्दर्य सिद्धान्तों में समरूप है। ये सिद्धान्त है -

1. सप्राण, शिक्तमय तथा विविध शैली,
2. तूलिका स्पर्श का ओज
3. लय अथवा सन्तुलन
4. सौन्दर्य एवं रूचि।

'शीहो' ने छठी शताब्दी में कला के 6 अंगों का उल्लेख किया है (जो भारतीय मूल का प्रतीत होता है) जिसमें उसने सर्व प्रथम रेखा की प्राणवान गतिछन्द का उल्लेख किया है। चीन में रेखा के कुछ गुण बताए गये हैं जिसमें सरलता, शक्तिमान,

सद्यता, साज-सज्जा, व्यंजकता, बहुलता एवं कोमलता, (Smoothness), सघनता एवं स्थिरता तथा क्षण प्रतिक्षण नवीनता आदि उल्लिखित हैं।

तूलिका की चार कमजोरियाँ का भी उल्लेख आया है ये हैं, कठोरता, रूक्षता, अनर्गलता, तथा दुर्बलता। तीन बातें इसमें निषिद्ध हैं चपटापन, कुरूपता तथा भावहीनता। उपरोक्त सभी बातें रेखा के सन्दर्भ में भी उतनी ही सत्य हैं जितनी तूलिका के लिए, क्योंकि बिना रेखा के तूलिका प्रयोजन-हीन है।

रेखांकन का इतना महत्वपूर्ण स्थान चीन व जापान की कला में है कि कभी कभी ये कविता के रूप में चित्र का प्रमुख भाग बन जाते। जापान की कला का प्रेरणा स्त्रोत भी अजन्ता की कला ही रही है कोनोन और होरयूजी तथा कम्भोजी के चित्रें इसके स्पष्ट प्रमाण है।

अजन्ता की रेखा के विषय में सर जान मार्षल ने एक स्थान पर कहा है कि, इन चित्रों की शैली ही वस्तुतः वह मूलस्त्रोत थी जिसमें लगभग आधे एशिया की चित्रकला को प्रेरणा मिली है। उनकी लययुक्त रचना उनकी रेखाओं की स्वाभाविक सुन्दरता, उनके गरिमाशाली आकारों तथा उनमें अंकित असीम कल्पना शक्ति की साज-सज्जा का अध्ययन करने वाला यह जाने बिना नहीं रह सकता कि, उनकी शैली ने केवल भारत या भारत के अधीन देशों की ही नहीं वरन् बुद्धिमत से प्रभावित सभी देशों की चित्रकला शैली पर अत्यन्त गहरा प्रभाव डाला है। अजन्ता की रेखा शैली की तुलना केवल बाद में निर्मित गौथिक अथवा बाईजेन्टाईन चित्रकारी से की जा सकती है जो अत्याधिक रूढ़ है।

भारतीय कला में फिर एक मोड़ आया अमूर्त उपासना ने नए-नए प्रतीकों को जन्म दिया। यद्यपि रेखांकित प्रतीक तो प्रागैतिहासिक काल से ही किसी न किसी रूप में चले आ रहे थे। लेकिन अब उनमें नवजीवन का संचार हुआ और वे प्रवाहमान हो उठे। मथुरा कला की अपेक्षा, रेखाओं की स्वच्छन्द गति, ओज और उल्लास का स्थान संयम, रूप की कोमलता और गम्भीर आध्यात्मिक अनुभूति ने ले लिया। अब तक लेकिन रस प्रधान कला ने समस्त ध्यान ''राधाकृष्ण'' पर केंद्रित कर दिया। श्रृंगार रस के पश्चात् कला में ध्वन्यात्मक अथवा ध्वनित अर्थों की ओर ध्यान दिया गया। फलतः कला में गूढ़ता और अस्पष्टता आ गई। इसी समय तांत्रिक अर्थों का प्रचार हुआ। रहस्यात्मक साधना की तांत्रिक पद्धतियों का प्रचलन वाम मार्ग के अतिरिक्त प्राचीन मिश्र, मेसोपोटामिया, यूनान तथा भारत में व्यापक रूप से था।

रेखाओं के संकलन ने सिन्धु सभ्यता से ले आज तक की कला में भारी योगदान दिया है। आदिमानव प्राकृतिक रूपों के प्रतीक प्रयुक्त करता था लेकिन शनैः-शनैः काल्पनिक प्रतीकों का प्रचलन हुआ और आज प्रतीक सूक्ष्म रूप में आ गये हैं। प्रतीकों का प्रयोग तांत्रिक पूजा विधि में नितांत आवश्यक है। वैदिक काल में हवनकुण्ड एवं वेदियों के आसपास कुछ मांगलिक आलेखन किये जाते थे जो पूजन विधि में सहायक होते थे। इसका उदाहरण है, वे रेखाकृतियाँ जो चक्रमण्डल अथवा यंत्र के रूप में जैन व शैव धर्म में प्रयुक्त की जाती रही हैं। श्री यंत्र इनमें से एक हैं। इसमें ज्यामितिक आकारों का प्रयोग किया गया है जिसमें शिव और आदिशक्ति का अर्थ निहित है। इन रेखांकनों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनका चित्राधार किसी अन्य वस्तु पर आलंकित न होकर रेखा पर ही निर्भर है। आकृतियाँ शुद्ध रूप से ज्यामितिक हैं।

हिन्दू धर्म में स्वास्तिक और ॐ की आकृति का अत्यधिक महत्व है। ये शुभ सूचक चिन्ह हैं। स्वास्तिक जीवन चक्र की गति, क्रियात्मकता सातत्य का प्रतीक है व ॐकार आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा को छूने वाली ऊँचाई पर स्थित ''ब्रह्मानन्द'' का साक्षात रेखाबद्ध प्रतीक है। पुष्प की सुरभि की, या मधु की मिठास की अभिव्यक्ति कैसे सम्भव है? यह तो स्वानुभव व रसास्वादन की वस्तु है। फिर भी रेखा ने सूर्य को दीपक दिखाने का दुस्साहस किया है। लुप्त होती हुई अनेक स्वर लहरियों को पकड़कर इसने अपने बाहुपाश में बांध लिया है और इस प्रकार संगीत को लिखा, पढ़ा जा सकता है।

लेकिन इसे और कला को समझने के लिए तपस्या करके उसे समझने की क्षमता अपने आप में पैदा करनी होती है, तभी रेखा में निहित अलौंकिक सौन्दर्य का उद्घाटन हो सकता है।

गुप्तकला के पश्चात् समाज में बिखराव आ गया था किन्तु राजस्थानी कला में फिर एक नवजीवन के दर्शन होने लगते हैं। मुगल शासकों के साथ ईरानी कलम की नजाकत, नफासत भारत में आई। इन दोनों शैलियों के मेल से कांगड़ा की सुमधुर, सुकोमल रेखाओं का जन्म हुआ। इसके बाद फिर एक लम्बी बीमारी की शिकार हो गयी। बीमारी भुगतने के बाद भारतीय कला ने यूरोपीय कला के प्रभाव से, बंग भूमि पर, नया रूप धारण किया। इसके प्रणेता थे कलागुरू अवनीन्द्रनाथ ठाकुर। इनकी कला पर पष्चिमी, ईरानी, चीनी, जापानी, मुगल एवं अजन्ता का प्रभाव था। सब शैलियों के समन्वय से बंगाल की शैली का जन्म हुआ। इसकी विशेषता थी- सरलता, स्पष्टता और स्वाभाविकता। कोमल और गतिपूर्ण रेखांकन में इस शैली के चित्रकारों ने अजंता को छुने का प्रयास किया है। इनकी रंग योजना, रेखाओं की पूरक है। इनके चित्र प्राचीन इतिहास, पुराण एवं साहित्य का आचार लेकर बने हैं। घरेलू जीवन का अंकन भी रेखाबद्ध किया गया है।

बंगाल की ठाकुर शैली के प्रमुख चित्रकार थे नन्दलाल बसु, असितकुमार हालदार, सुरेन्द्र नाथ गुप्त, देवीप्रसाद रायचौधरी तथा उकील बन्धु। सभी पर अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव था। नन्दलाल बसु की रेखाओं में अत्यधिक जीवन प्रवाह है, और गति होते हुए भी तनाव नहीं। असित हाल्दार की कृतियों में स्पष्ट सरल रेखांकन, कोमल और माधुर्यपूर्ण है। इन रेखाओं में अजंता की लय की झलक दिखाई देती है। अब्दुर्रहमान चुगताई भी अवनीन्द्र नाथ के प्रमुख शिष्यों में थे। इनकी शैली में फारसी तथा भारतीय शैलियों का मिश्रण बहुत मधुर और सुकुमार दिखाई देता है।

उधर बम्बई स्कूल ऑफ आर्ट के कलाकार श्री रविशंकर रावल और सोमालाल शाह भी रेखांकन करने में सिद्धहस्त हैं। के.के. हेब्बर व श्री अहिवासी इसी श्रेणी के कलाकार हैं।

यहां रेखा की बात करते समय एक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान जाता है। शायद विश्व में इसका कोई सानी नहीं है। यह है हमारी लोक कला में प्रचलित माण्डपों, सांझी, मेंहदी, गुदना और छपाई की आकृतियाँ लोककलाओं में सहत्राब्दियों पूर्व से चली आ रही परम्पराओं और अभिप्रायों का अंकन होता चला आ रहा है। प्रत्येक सुअवसर व त्यौहार पर सरल रेखाओं में गेरू और खड़िया से, गोबर से, फर्श लीप कर, कुमकुम के छीटे व बिन्दी लगाकर आकृतियों का निर्माण होता है। ये सरल माध्यम से, सरल विधि से, सहज भाव से, सरल रेखाओं के द्वारा अंकित किए जाते हैं अत: इनकी अपील सीधी हृदय को छूने वाली है। जितनी आकृति सरल होती है उसका प्रभाव उतना ही व्यापक होता हैं।

किन्तु इन रेखाओं के अर्थ गूढ़ हैं। इनके दार्शनिक अर्थ हैं। वक्र रेखाऐं सक्रियता व गति की परिचायक है, आड़ी रेखा स्थिरता की, खड़ी रेखा शांति एवं आकांक्षा की द्योतक है, एक दूसरे को काटती रेखा युद्ध और अशांति की परिचायक हैं। धन की रेखा मित्रता व संग्रह की द्योतक है। वक्ररेखा चित्र में न केवल सौंदर्य एवं मधुरता की झंकार पैदा करती है वरन् भावनामय मृदुल संकेत भी प्रस्तुत करती है। शब्द, स्वर और रेखा के माध्यम से ही भावों की अभिव्यक्ति संभव है। रेखा की तरलता शून्य को रस, आनंद और सौंदर्य की लहर से आप्लावित करने में समर्थ है। रेखा के मनोहारी सीधे, सादे रूप ने सबको ऐसा मोहा कि आधुनिक कलाकार स्वत: ही इसकी ओर झुक गये। अल्मेलकर व हुसैन के अतिरिक्त विदेशी कलाकार पॉलक्ली, पिकासो, ग्रिस, एण्ड्री मेसन आदि कलाकारों ने साधारण रेखाओं के द्वारा ही चित्रांकन करना स्वीकार किया।

कला और संस्कृति की सीमा असीम है। ये एक दूसरे के सहयोग से पनपती हैं। जीवन का जैसा भी रूप होगा, इसका प्रतिबिम्ब कला में निखर आएगा। अतीत, वर्तमान और भविष्य सभी की यही नियति है। नितनूतन साधन सामग्री

चित्रों को सजाती है। कभी रेखा इनमें स्थान पाती हैं, कभी रंग। लेकिन दिखाई न देने पर भी यह सूक्ष्म रूप से कला से ऐसी जुड़ी हुई है, जैसी अदृश्य वायु हमारे प्राणों से। असित हाल्दर एक स्थान पर लिखते हैं – ''रेखा, चित्र कौशल की सबसे प्राचीनतम आविष्कार, अज्ञात रूप से मस्तिष्क में, सौन्दर्यमयी भावनाएँ जागृत करती है और इसीलिए चिरकाल तक, कलाकारों की भाव व्यंजना का मूल साधन बनी रहेगी।''

संदर्भ –

1. चित्रकला के मूल आधार, शुखदेव श्रोत्रिय
2. The Painters Eye, Maurice Grosser
3. Arts and Ideas, William Fleming
4. आधुनिक चित्रकला का इतिहास, र. वि सांखलकर
5. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, लोकेश चंद्र शर्मा

•••••

लोक कला हमारी संस्कृति की संवाहक

*श्रीमती शिवानी जैन

शोध सार

लोक कला परम्परागत कला होती है। यह कला भारतीय जनमानस के आँगन में पुष्पित एवं पल्लवित होती है। लोक कला इतिहास एवं अपनी ख्याति की अपेक्षा किये बिना हमारे पारिवारिक सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन की परम्पराओं के साथ सम्बद्ध होकर आगे बढ़ती है। भारत की लोक-कला सदैव से ही सम्पन्न और समृद्धिशाली रही है भारत वर्ष का कोई भी त्योहार या उत्सव या तो गीतों से आकर्षक बनता है या फिर भीतों के अर्थात् दीवारों से जिस पर उत्सवों और त्योहारों पर अनेक भिन्न-भिन्न प्रकार की आकृतियाँ बेल-बूटे मॉडने फूल पत्तियाँ ज्यामिति आकृतियाँ आदि निर्मित की जाती हैं। भारत के हरएक प्रान्त की अपनी एक लोक कला है जैसे मांडना, रांगोली, अल्पना, सांझी, चौक पूरना मधुबनी, वरली इत्यादि। ये सभी लोक कला के अंतर्गत आते है। इसे किसी के अवलम्बन, आश्रय, प्रोत्साहन और प्रलोभन की आवश्यकता नहीं होती।

'लोक शब्द' संस्कृत के लोकदर्शन धातु से धं प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ है-देखना। जिसका लट्लकार में एकवचन का रूप लोकते है। अत: लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। व्यवहार में लोक शब्द का प्रयोग संपूर्ण जनमानस के लिए होता है।'

डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार - 'लोक मनुष्य समाज का वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार,शास्त्रीय और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।'

सच पूछा जाये तो हमारा लोक वही है जो हमें देखता है और जिसे हम देखते हैं, जो लोक का मूल अर्थ है - देखना, मात्र जिज्ञासा के लिए नहीं, वरन देखना अपना समझकर, अपना मानकर, अपनेपन के भाव के साथ। आँखों के अपनेपन के भाव की झलक देखी जा सकती है, यह झलक मन की भाषा है जिसका अर्थ है लोक।'

शब्दकोशों में लोक शब्द के अर्थ हैं प्रदेश, संसार, समाज, जन आदि। पारिभाषिक रूप से इसका प्रयोग अंग्रेजी के फोक के पर्याय के रूप में किया जाता है। अंग्रेजी में फोक शब्द का प्रयोग अशिक्षित अथवा अर्द्धशिक्षित के लिए किया जाता है। किन्तु डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी लोक शब्द के अर्थ को ग्राम्य नही मानते बल्कि नगरों और गाँवों तक विस्तृत समूची जनता को वे लोक मानते है जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार उन्होंने पोथियों को नहीं माना है।

अंग्रेजी शब्द फोक लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद लोक साहित्य है। सामान्य अर्थ में लोक शब्द संसार की अभिव्यक्ति करता है, किंतु फोक के रूप में लोक साहित्य उस लोक का साहित्य है जिसे आधुनिकता की परिधि में नहीं रखा जा सकता है। फोक शब्द समाज के उस समूह की प्रतीति कराता है, जो आदिम रीति - रिवाजों को सुरक्षित रखे हुए है। सामान्य अर्थ में लोक साहित्य का अभिप्राय उस युगीन साहित्य से लिया जाता है, जिसका रचयिता अज्ञात होता है, और जिसे आधुनिकता से पृथक रहने वाला समाज अपनी वस्तु मानता है।

***शोधार्थी चित्रकला, रानी दुर्गावती विश्व विश्वविद्यालय, जबलपुर**

लोक कला की सांस्कृतिक भूमिका

लोक कला परम्परागत कला होती है। यह कला भारतीय जनमानस के आँगन में पुष्पित एवं पल्लवित होती है। लोक कला इतिहास एवं अपनी ख्याति की अपेक्षा किये बिना हमारे पारिवारिक सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन की परम्पराओं के साथ सम्बद्ध होकर आगे बढ़ती है। भारत की लोक- कला सदैव से ही सम्पन्न और समृद्धिशाली रही है भारत वर्ष का कोई भी त्योहार या उत्सव या तो गीतों से आकर्षक बनता है या फिर भीतों के अर्थात् दीवारों से जिस पर उत्सवों और त्यौहारों पर अनेक भिन्न-भिन्न प्रकार की आकृतियाँ बेल-बूटे मॉडने फूल पत्तियाँ ज्यामिति आकृतियाँ आदि निर्मित की जाती है। भारत के हर एक प्रान्त की अपनी एक लोक कला है जैसे मांडना, रांगोली, अल्पना, सांझी, चौक पूरना मधुबनी, वरली इत्यादि। ये सभी लोक कला के अंतर्गत आते है। इसे किसी के अवलम्बन, आश्रय, प्रोत्साहन और प्रलोभन की आवश्यकता नहीं होती।

लोक कला से तात्पर्य लोक कला अर्थात् जन मानस की कला जिसमें लोक जीवन से जुड़ी आस्थाएँ, भावनाएँ और विचार व्यक्त होते है। कला मानव जीवन का प्रतिविम्ब है। मानव के सौन्दर्यबोध की अभिव्यक्ति ही कला हे मानव की अतरंग प्रवृत्ति ही कला को जन्म देती है।

लोक कला के स्वरूप और क्षेत्र पर दृष्टिपात करने पर मानस पटल पर सीधे - सादे, सहज सरल जन साधारण के लिये सुलभ उपादान सिद्ध रूप रेखा उभर कर आती है इसमें सौंदर्य का समावेश और आनंद प्रदान करने का सहज गुण विद्यमान रहता है।

लोक कलाओं का लक्ष्य मानव मे छिपी हुई शक्ति और सक्रियता को उभारना है तथा जीवन की खटास में से मिठास निकालने का संदेश देना होता है। आड़ी तिरछी सीधी, रेखाओं से ये चित्र बनते है। ये रेखाएँ आदिम काल से ही मिलती है। रेखाओं से ही ज्यामितीय मानव आकृतियाँ बनती है। प्राय: इस मानव आकृतियों के कदम आगे बढ़े हुए बनाए जाते है यहाँ बढ़ा हुआ कदम गति को महत्व देता है इसलिये इन चित्रों में चेहरा नगण्य होता है, क्योंकि यहाँ गति को महत्व देना अभिप्रेरित होता है।

लोक कला सामान्य जन की कला होने के कारण भारत भूमि के कण-कण में व्याप्त है। लोक जीवन में होने वाले उत्सव व त्योंहारों पर दीवार, जमीन आदि पर अनेक प्रकार की ज्यामितिय आकृतियाँ अंकित की जाती है और इन्हें निर्मित करने के लिये किसी सिद्ध हस्त कलाकार होने की आवश्यकता नहीं होती अपितु कोमल भावनाओं रहित हृदय के होने की आवश्यकता होती है। वैदिक धर्म के अनुसार चार दिशाओं के लोकवसन माने जाते है। लोक कला में हर त्यौहार उत्सवों पर सांतिया बनाने की प्रथा सदैव रही है, जिसमें इसकी चारों भुजाएँ मानो विष्णु की चार भुजाओं की प्रतीक है।

परम्परा से परिवार में धरोहर के रूप में प्राप्त होने के कारण लोक कला में होने वाले उपादान और प्रतीक भी परम्परागत होते है। मंगल भावना से उत्पन्न होने के कारण प्रतीक भी मांगलिक अधिक होते है, जैसे साधारण या दिखने अथवा लगने वाला त्रिभुज अनेक मंगल कामनाओं से परिपूर्ण होता है ये तीन सीधी रेखाओं से मिलकर बनता है त्रिकोण त्रिअर्थी है जो तीन गुणों, तीन कालों, तीन प्रकार के आनन्दों का प्रतीक है यही त्रिमूर्ति है और यही महाशक्तियाँ भी है यह अत्याधिक मांगलिक चिन्ह है।

लोक कलाओं में प्राय: चित्रों को चारों ओर से धेरने के लिये लता या बेले बनाई जाती है। जो जीवन की निरन्तरता को व्यक्त करती है इसी प्रकार हाथी का चित्रांकन शक्ति ताकत गम्भीरता और संतान के अभिप्राय को व्यक्त करता है। घोड़ा गति और तीव्रता का ज्ञान करता है। इन सभी चित्रों के अनेक रूप है। यह एक गहन विचार का विषय है जहाँ एक ही प्रतीक

अथवा चित्र के कई-कई अर्थ निर्मित होते है।

लोक कलाएँ स्वयं तात्कालीन युग तथा परिस्थिति से नए-नए प्रतीक तथा बिम्ब लेती है राष्ट्र की शक्ति उस देश की लोक कला में प्रतिबिम्बत होती है।

लोककलाओं में लोक जन का सम्पूर्ण मन अंकित है। इन रेखाओं में हमारा सम्पूर्ण वातावरण चल- अचल जीवन आबाद होता है। ये कला मानव सभ्यता के विकास का विस्तृत इतिहास अपनी झोली मे समेटे है।

ये हमारी सांस्कृतिक परम्परा तत्व विचारों की धरा और हमारी जातीय स्मृतियों के आकार है। ये लोकजन की अनुष्ठानिक आस्था की विस्तृत अभिव्यक्ति है। ये हमारे जीवन के हर पहलू को छूते है व्रत पर्व, त्यौहार, उत्सव, संस्कार विवाह, रीति-रिवाजों, टोने-टोटके से भी सम्बन्ध है। लोककला लोकजन के जीवन का अभिन्न अंग है।

लोक कलाओं में कभी-कभी लगता है जैसे कुछ तत्व नदारत है, लुप्त है और नया स्वरूप हमारे समक्ष उभर कर आया है। पर ये तत्व सुप्तावस्था में रहते है और कभी न कभी पुनः बीजांकुरण सा फूटता जरूर है। यदि इसमें जीवित रहने का सामर्थ है। यही कारण है कि वेश-भूषा आभूषण और कारीगिरी के नमूनों में फिर से इतिहास दोहराया जाता है ये सामाजिक विरासत है जो परस्पर हमें एक दूसरे की ओर ले जाती है। सामूहिक मन की कल्पना यहीं साकार होती है।6

लोक कलाओं की विशेषता ये होती है कि, वह अपने मूल स्वरूप की ओर जाने पर भी नई ऊर्जा, नए परिवर्तन को ग्रहण करती जाती है। इनके द्वारा सामाजिक वर्चनाओं से उत्पन्न होने वाले तनावों से मुक्ति मिलती है।

अतः सामुहिक मन की कल्पनाओं के साथ व्यक्ति की अपनी पूर्णता का आभास भी हमारी लोक कलाएँ ही करा सकती है।

संदर्भ -

1. लोक साहित्य - डॉ. इन्दु यादव, पृ. 01
2. लोक साहित्य - डॉ. सत्येन्द्र, पृ 3
3. लोकवार्ता विज्ञान, भाग 1, डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा, पृ.13
4. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन डॉ. अनीता शुक्ला पृ. 48
5. शिक्षा में कला एवं नाटक राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. लि. पृ.36
6. उमेशचन्द्र शर्मा : ब्रज लोक सम्पदा: गुरूकुल रोड, वृन्दावन (उ. प्र.)

•••••

म.प्र. के चित्रित शैलाश्रय

*श्री अमित कुमार सिन्हा

शोध सार

विश्व की सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का जन्म इतिहास के धुंधलके में जनजातीय समाजों से हुआ है। विश्व की सभी महान सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के पूर्व मनुष्य पाषाण युगीन सभ्यता के स्तर में जीवन-यापन करता था। पाषाण युगीन सभ्यताओं की सबसे बड़ी पहचान उस काल में पाये गये पत्थरों के औजारों से की जाती है। पत्थरों के औजार आखेट में ही प्रयुक्त होते थे। दूसरा प्रमुख आजीविका का स्त्रोत संचयन था। वनों से प्राप्त कंद, मूल फलों से मनुष्य अपना निर्वाह करता था। अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिये उन्होंने चित्रण का सहारा लिया जिसमें पशुओं की चर्बी, वानस्पतिक रंग, गेरू, कोयला, आदि को लेकर चित्रांकन किया जो उनके दैनिक जीवन में होने वाले क्रियाकलापों का जीवन्त उदाहरण है।

विश्व की सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का जन्म इतिहास के धुंधलके में जनजातीय समाजों से हुआ है। विश्व की सभी महान सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के पूर्व मनुष्य पाषाण युगीन सभ्यता के स्तर में जीवन-यापन करता था। पाषाण युगीन सभ्यताओं की सबसे बड़ी पहचान उस काल में पाये गये पत्थरों के औजारों से की जाती है। पत्थरों के औजार आखेट में ही प्रयुक्त होते थे दूसरा प्रमुख आजीविका का स्त्रोत संचयन था। वनों से प्राप्त कंद, मूल फलों से मनुष्य अपना निर्वाह करता था। लौह युग के प्रारंभ होते- होते समूची मानवीय सभ्यता में परिवर्तन आया, यह परिवर्तन पशुपालन और कृषि के फलस्वरूप हुआ।

भारत में शैलाश्रयों के ज्ञाताओं मे जे. काकबर्न का नाम सबसे पहले लिया जाता है क्योंकि उन्होने ही सर्वप्रथम इस दिशा में ठोस कार्य किये। उन्होनें इस क्षेत्र में अन्वेषण प्रारंभ किया, साथ ही शोधपत्र लिखे। भारत में बीसवीं सदी के पहले और दूसरे दशक में इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों में सी.ए. सिलब्रेगार्ड (1907) एवं सी.डब्ल्यू एण्डरसन् (1910-1910) थे। जिन्होंने क्रमश उत्तरप्रदेश और सिंगनपुर शैलाश्रय खोजे। भारत में इसके बाद कुछ वर्षो तक शैलाश्रय की खोज में महत्वपूर्ण प्रगति नहीं हुई सिवा इसके के मनोरंजन घोष ने मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के आदमगढ़ शैलाश्रयों को खोज निकाला।

इसके बाद भारत के स्वतंत्र होने तक भारत में शैलाश्रयों को खोज निकाला। इसके बाद भारत के स्वतंत्र होने तक भारत में शैलाश्रयों की इक्का -दुक्का खोजे ही होती रहीं। इन्हीं वर्षो में प्रागैतिहासिक कारविंग (Carving) तथा इनग्रेविंग (Engraving) चित्रणों की भी खोज हुई है। भारतीय शैलाश्रय चित्रण में कारविंग एवं इनग्रेविंग (खुरचना) को भी शामिल किया जाता है। इनमें प्रथम वर्ग के चित्रण में लगभग 98 फीसदी या उससे भी अधिक चित्र है। शेष विधाओं में (अर्थात् कारविंग और इनग्रेविंग) में बहुत ही कम चित्रांकन है।

भारतीय शैलाश्रयों का अधिकांश क्षेत्र बलुआ पत्थर का होने के कारण भूमि क्षरण से प्रभावित है तथा चट्टानों के टूटने, गिरने या खिसक जाने के कारण अधिकांश शैलाश्रय पानी एवं धूप से प्रभावित हो रहे है, फलस्वरूप उनके चित्र नष्ट होते जा रहे है।

***शोध छात्र (चित्रकला), रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)**

ये शैलचित्र न केवल दीवारों पर तथा छत पर पाये जाने है बल्कि छोटी खोह व दरारों में भी पाये जाते है जिन्हें केवल लेटकर ही देखा जा सकता है। छतों पर बने चित्र अधिकांशत: प्रागैतिहासिक काल के है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सीढ़ी या किसी अन्यवस्तु का सहारा लेकर चढ़े होंगे तथा ये चित्र बनाये होंगे। कुछ चित्र अवश्य ही बनाने के काल में अधिक ऊँचे नहीं थे, परंतु कालांतर में चट्टानों के गिर जाने के कारण आज यें अत्याधिक ऊँचे दिखते है। ऐतिहासिक काल के चित्र शैलाश्रयों में आसानी से पहुँचे जाने वाले क्षेत्रों में बनाये जाते है। अधिकांश शैलाश्रय ऐसे है जहाँ कि प्रकाश प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता था। उल्लेखनीय बात यह है कि समतल सतह को छोड़कर अधिकांश शैलचित्र खुरदुरे, असमतल एवं अनुपयुक्त कोनों पर बनाये गये है। साथ ही पुराने चित्रों के ऊपर नये चित्र बनाये गये है, जबकि उन्ही शैलाश्रयों में चित्रण हेतु खाली स्थान उपलब्ध था।

म.प्र. के चित्रित शैलाश्रयों की खोज एवं अनुसंधान

भारतीय शैलाश्रयों की खोज और अनुंसंधान का कार्य लगभग साथ-साथ चलता रहा है। कालक्रम की दृष्टि से भारतीय चित्रित शैलााश्रयों की खोज और अनुसंधान को दो कालखंड के अंतर्गत रखा जा सकता है। प्रथम कालखंड स्वतंत्रतापूर्व का है इस कालखंड मे ंचित्रित शैलाश्रयों की खोज प्रारंभ हुई। मेक्सवेल 1882 पहले व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने भारतीय शैलाश्रयों की खोज को समझा। जे. काकबर्न 1889 पहले व्यक्ति थे जिन्होनें भारतीय शैलाश्रयों की खोज की या उनके महत्व को समझा अपितु उन्होंने तात्कालीन उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर शैलाश्रयों की प्राचीनता और उनमें चित्रित वन्य पशुओं एवं मानवीय सभ्यता की समीक्षा भी की। जे. काकर्बन की शोध ने मिर्जापुर के शैलाश्रयों का परिचय दुनिया को कराया। काकर्बन के उपरांत एन्डरसन 1918 मिश्रा 1927 ब्राउन 1927 एवं गार्डन 1939 ने भारतीय शैलाश्रय चित्रण पर शोधपरख निबंध लिखे।

स्वतंत्रता के पश्चात् शैलाश्रयों की खोज और अध्ययनों का दूसरा दौर प्रारंभ हुआ। इस काल के प्रारंभिक वर्षो में अनेक विदेशी विद्वानों ने भारतीय शैलाश्रयों के संदर्भ में विविध समीक्षायें लिखीं, जिनमें काल निर्धारण से लेकर सांस्कृतिक मूल्यों तक की चर्चा थी। इन विद्वानों में कुछ विद्वान तो वे ही थे जिन्होंने स्वतंत्रता काल में अध्ययन किया था। इस काल के विदेशी विद्वान चाइल्ड 1952 गार्डन 1958 ब्राउन 1960 अलचिन 1953 से 1975 एवं ब्रूक्स 1960 है।

शैलाश्रयों के संबंध में हिन्दी भाषा में पहला क्रमबद्ध विवरण जगदीश गुप्त 1965 ने लिखा, जो पुस्तक में प्रकाशित हुआ। तदनंतर विभिन्न विश्वविद्यालयों में शैलाश्रयों के विभिन्न पहलुओं पर शोध कार्य प्रारंभ हुआ और इनमें कुछ प्रकाशित भी हुए। इस श्रृंखला में पांडे 1968 और वर्मा 1970 के शोध प्रबंधों को प्रारंभिक माना जा सकता है जो क्रमश: सागर विश्वविद्यालय एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किये गये हैं सत्तर के दशक में वाकणकर ने शैलाश्रयों पर शोध कार्य सम्पन्न किया। वाकणकर का कार्य बढ़या मठपाल 1984 ने जिनकी पुस्तक प्रिहिस्टोरिक राक पेंटिंग्य ऑफ भीमबेटका उनके स्वयं के शोध प्रबंध पर आधारित है। इस पुस्तक में उन्होंने 6214 चित्रों का वर्णन किया है। यह एक उन्कृष्ट शोध ग्रंथ है। वर्ष 1992 में लटोरी लाल ने भोपाल क्षेत्र के शैलाश्रयों पर शोधकार्य किया।

प्रसिद्ध भारतीय शैलचित्र खोजी वाकणकर के अनेक शिष्यों ने भी शैलाश्रयों पर अनेक शोध पत्र लिखे। प्रसिद्ध इतिहास लेखक सांकलिया ने स्वयं एवं अन्य विद्वानों के साथ उत्खनन आदि के द्वारा शैलाश्रय सभ्यताओं के अध्ययन को जारी रखा।

शैलाश्रयों की खोंजों से संबंधित जो अनेक प्रकाशन हुए साधारण: ये ग्रंथ संकलित है। मध्यप्रदेश संदेश जो कि मध्यप्रदेश शासन का मुखपत्र है, ने भी पिछले 25 वर्षो में शैलाश्रयों के संबंध में उल्लेखनीय योगदान दिया, शंकर तिवारी का

नाम लिया जाता है जिन्होंने सातवें और आठवें दशक मे बेतवा क्षेत्र के अनेक शैलाश्रयों की खोज की। शैलाश्रयों के विभिन्न पहलुओं पर अन्य अनेक विद्वान ने प्रकाश डाला है। इसका मुख्य कारण तात्कालीन जनमानस में शैलाश्रयों की प्राचीनता को लेकर संदेह था।

किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् विशेषत: साठ और सत्तर के दशक में शैलाश्रयों के अनेक नये क्षेत्र खोज निकाले गये। जगदीश गुप्त 1967 में ऐसे अनेक क्षेत्रों का विवरण दिया है। वाकणकर 1975-76 में इन क्षेत्रों को शैलाश्रय प्रदेश (रीजन) कहना अधिक उपयुक्त समझा। जगदीश गुप्त 1967 में अपनी सुप्रसिद्ध कृति 'प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला' में भारत के निम्नलिखित शैलाश्रय क्षेत्रों का वर्णन किया है। मिर्जापुर, बांदा, पचमढ़ी, होशंगाबाद, भोपाल, रायसेन,रीवा-पन्ना छतरपुर, कटनी, सागर, नरसिंहपुर, बस्तर, ग्वालियर, चंबल, बिहार, उड़ीसा, उत्तरपश्चिम (अब पाकिस्तान में), हैदाराबाद-रायपुर। श्री गुप्त 1967 के शोधकार्य चित्रण के संदर्भ में मील का पत्थर माना जाता है। उनका कार्य अत्याधिक साहित्यिक मूल्य का है। चित्रण की शैलियों पर काफी कुछ साहित्य लिखा गया है और उसके आधार पर ऐतिहासिकता भी निर्धारित करने के प्रयास हुए है। भारतीय शैलाश्रय चित्रों को अनेक शैलियों में बाँटा गया है।

इनका वितरण असमान है। कुछ क्षेत्रों के शैलाश्रयों अत्याधिक चित्रित है। कुछ के अत्यंत कम शैलाश्रयों की सर्वाधिक संख्या बेतवा नदी के निचली घाटी में है। इसके अतिरिक्त चंबलघाटी, सोनघाटी, विंध्याचल के कगार प्रदेश में अनेक शैलाश्रय पाये जाते है।

मध्यप्रदेश के सभी शैलाश्रय चित्रों में विशेष समरूपता पाई जाती है, चाहे वे शैलाश्रय पन्ना जिले के हो या फिर रायसेन के हो।

मध्यक्षेत्र में शैलाश्रयों के चित्रों में 30 रंगों का प्रयोग हुआ है सबसे अधिक लाल रंग के 2639 चित्र है एवं सफेद, कत्थाई रंग के 602 चित्र है। प्राकृतिक ज्यामिति, भावानुसारी शैली प्रदर्शन के चित्र मिलते है।

इस काल के चित्र आखेटक तथा संग्राहक विषय के है। प्रारंभिक ऐतिहासिक एवं परवर्ती ऐतिहासिक काल के चित्र युद्ध एवं राजकीय जलूस के है। मानव एवं जानवर के चित्र बड़े तथा रेखानुकृति में अंकित दिखाई देते हैं जो कि अब प्राय: नष्ट होते जा रहे है। इस काल में आखेटक विषय के चित्र तो प्राप्त होते है, इस काल के औजारों के बाण एवं भाला प्रमुख है, जिन पर नुकीले माइक्रोलिथ लगे पाये जाते है। इस काल में अधिकत्तर जानवरों के चित्र सुअर एवं हिरण के मिलते है। कुछ मानवाकृतियाँ मुखौटा लगायें हुए अंकित की गई है। कुछ कटिवस्त्र पहने हुए हैं जो कि पीछे की ओर अथवा बाजू में लटकते दिखाये गये है। कुछ चित्रों में शिरोवस्त्र भी दर्शाये गये है। इस काल के चित्रों की संख्या 569 है तथा अधिकतर गहरे लाल रंग का प्रयोग हुआ है।

जानवरों के देह भाग को आड़ी तिरछी रेखाओं या सर्पाकार रेखाओं द्वारा अलंकृत किया गया है। कुछ चित्रों में सिर एवं पैर रंग से भरे है और बीच का भाग खाली है। पशुओं के चित्रों में सिर एवं पैर रंग से भरे है और बीच का भाग खाली है। पशुओं के चित्रों में उनकी प्राकृतिक गतिशीलता का आभास मिलता है। इस काल में स्त्री एवं पुरूष दोनों के नृत्य में भाग लेने वाले चित्र प्राप्त होते है स्त्रियों के चित्रों को अधिकतर लयमय गतिबद्ध स्थिति में दर्शाया गया है, जबकि पुरूष अधिकांशत: अनेक नुकीले पत्थरों वाले बाण के साथ दर्शाये गये है। अधिकतर चित्र लाल व सफेद रंग के बने हैं। इस काल के कुछ चित्रों की संख्या 1486 है।

मठपाल 1984 ने भीमबैठका के अध्ययन के उपरांत स्तनपोशी प्राणियों के चित्रों की प्रचुरता पाई। उन्होंने लगभग उन्तीस स्तनपोशी प्राणियों की जातियों की गणना की हालाँकि वास्तविक गणना में यह संख्या कुछ कम थी। ये उन्तीस प्राणी

वन्य प्राणी थे। इनके अतिरिक्त कुछ पक्षियों की जातियों की भी गणना की गई।

प्रारंभिक चित्रों में कहीं भी वस्त्रों का आभास नही है। परंतु कालांतर में छोटे कटिवस्त्र, बड़े कटिवस्त्र तथा अधोवस्त्र के चित्र मिलते है। ऐतिहासिक काल के चित्रों में वस्त्र अलंकृत हो गये है। यह विकास मध्यप्रदेश के सभी शैलाश्रयों में प्राय एक सा ही पाया गया है। गले में माला, चाहे वह नरमुंडो की ही क्यों न हो। हाथों में कड़ों का चित्रण स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक काल में पाया जाता है। सभी शैलाश्रयों मे मानव आकृतियाँ शिरोवस्त्र धारण नहीं किये है किंतु जूड़े और चोटी का आभास अवश्य मिलता है। योद्धाओं द्वारा अनेक प्रकार के त्रिभुजाकार, गोल अंडाकार, चौकोर, काँटेदार सींग के समान टोपियों का प्रयोग अवश्य मिलता है।

मानव की मनोरंजन व अभिव्यक्ति का मुख्य साधन वाद्य एवं नृत्य कलायें आदि रहे है। यह प्रवृति आज तक मानव में यथावत बनी हुई है। नृत्य के प्रमाण मध्यप्रदेश के सभी शैलाश्रयों के चित्रों में सभी कालखण्डों में मिलते है।

भोपाल क्षेत्र के फिरंगी पहाड़ी के एक शैलाश्रय समूह के एक शैलाश्रय में एक मानव आकृति के ऊपर दूसरी मानव आकृति उसके कंधे के ऊपर खड़ी नृत्य करते हुए अंकित है।

नृत्य के साथ वाद्यों का प्रयोग भी जुड़ा हुआ है जिसमें ढोल, युम्मवाद्य,बॉसुरी तुरही, दर्शायी गई। इन सब में सबसे उल्लेखनीय चित्र गनेशघाटी नामक पहाड़ी के एक शैलाश्रय मे सितार का चित्रण पाया गया है। सितार का चित्रण मध्यप्रदेश के कारियाखोह (पचमढ़ी) के अलावा और कहीं नहीं मिलता।

प्रारंभिक काल में मानव की उदरपूर्ति का मुख्य साधन शिकार रहा है और इस शिकार के दृश्य काफी संख्या में मिलते है। सामान्यत हिरण, बायसन, मोर,शेर आदि को मारते हुए शिकार के दृश्य मिलते है।

मध्यप्रदेश के शैलचित्रों में मुखौटा युक्त मानव के काफी चित्र मिलते है। रायसेन क्षेत्र में जिस प्रकार का मुखौटा मनुष्य लगाये है उसी प्रकार के पशु मनुष्य के पीछे दौड़ते दर्शाये भालू आदि के मुखौटा युक्त मानव चित्रित है।

सभी शैलाश्रयों में सर्वाधिक चित्रण युद्ध क्षेत्रों के दृश्यों का है। युद्ध में गतिशीलता के लिए अश्व सर्वोत्तम साधन था और सभी क्षेत्रों में अश्वारोहियों के चित्र काफी संख्या में मिलते है। घोड़ों के चित्रण में कल्पना का काफी प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार डमरू के आकार के आयताकार, वर्गाकार, बहुत लंबे, घोड़ों के चित्रण मिलते है।

1. एकाकी पशु चित्रण

शैलाश्रय चित्रण में कुछ स्थानों पर एकांकी पशुओं का चित्रण हुआ। इन चित्रों में पशुओं में कुछ चित्रों में हिरण बाघ, कुछ भी हो सकता है। अधिकांश चित्रों में किसी भी प्रकार का कोई अनुपात नहीं है।

2. पशु समूहों का चत्रिण

शैलाश्रय चित्रों मे वन्य पशुओं के समूह चित्रों की अधिकता है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि चित्रकारों ने उन्हीं पशुओं के समूह चित्र बनाये है जो समूहों में पाये जाते है। यह एक संयोग ही है कि हिरण साधारणत: झुण्डों में पाये जाते है और शैलाश्रयों में सर्वाधिक चित्र भी हिरणों के ही है।

अधिकतर एक ही स्थान पर अनेक चित्रों के ऊपर दूसरी परत और दूसरी परत के ऊपर तीसरी परत के रूप में बनाये गये है। एक परत में बने हुए चित्रों में कुछ चित्र वास्तविक पशु समूह के है जहाँ अनेक परतों (या सुपरइंपोज्ड) पर चित्र है वहाँ जादू टोने या अंधविश्वास की साफ झलक हैं।

3. आखेट दृश्यों का चित्रण

शैलाश्रयों में दो प्रकार के आखेट दृश्य चित्रित किये गये है। पहले चित्र वे हैं जिनमें मनुष्य अकेले ही शिकार करने में सन्नबद्ध है। साधारणत: ऐसे चित्रों में शिकारी भाला या तीर कमान के द्वारा शिकार करने हुए दिखलाये गये है।

शैलाश्रयों में अधिकत्तर आखेट किये जाने वाले पशुओं में मृग एन्टीलव (कृष्णमृग,नीलगाय, आदि) ही प्रमुख है। किंतु कुछ विद्धानों ने भेड़िया रीछ, तेंदुये, हाथी आदि के शिकार के दृश्य भी खोजे है।

4. पालतू पशुओं का चित्रण

शैलाश्रयों में बड़ी संख्या में पालतू पशुओं को चित्रित किया गया है। इन पशुओं में गाय, बैल, बकरी, ऊँट, हाथी, घोड़े, गधे के अतिरिक्त अनेक पक्षी जैसे मुर्गे आदि के चित्रण भी है। इन पशुओं में से कब कौन या पशु पालतू होना प्रारंभ हुआ, इसका आभास शैलाश्रय चित्रण से नहीं मिलता।

5. अजनबी पशुओं का चित्रण

शैलाश्रयों में अनेक ऐसे चित्रों का अंकन मिलता है जिनकी पहचान कठिन है। चित्रांकन में यूरोपीय चित्रांकन की तरह प्राकृतिक चित्रण की परंपरा नहीं रही वरन् अनेक शैलियों- (स्टाइल्स) के प्रयोगों ने पशुओं की छवि को बहुत अधिक बदला है। वाकरणकर 1976 ने ऐसे चित्रों को अपने ग्रंथ में उद्धृत किया है।

म.प्र. के शैलाश्रय चित्रणों मे जनजातीय संस्कृति के प्राचीनतम बीज देखने मिलते हैं।

संदर्भ -

1. द्विमासिक रचना अंक 66-67 मई से अगस्त 2007
2. डॉ. शिवकुमार तिवारी, मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करण - तृतीय 2010
3. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, अनिल वर्मा, संगीता वर्मा भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रथम संस्करण 1986, प्रकाश बुक डिपों मुख्य कार्यालय, बड़ा बाजार, बरेली 243003
4. डॉ. कुमार स्वामी, भारतीय कला और कलाकार, प्रथम संस्करण - जून 1986, द्वितीय संस्करण - नवम्बर 1996, निदेशक प्रकाशन सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
5. मध्य प्रदेश संदेश, मई 2006, कपिल तिवारी।
6. लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, गोयल पब्लिशिंग हाऊस 11, शिवाज रोड मेरठ 250001

•••••

EMERGING RESEARCH JOURNAL

A Multidisciplinary Peer Reviewed (Refereed/Juried) International Journal

SUBSCRIPTION FORM TEMPLATE

I wish to subscribe to Emerging Research Journal for [1] [2] [3] Year(s). A Bank D.D. Bearing No. ..... Dated ..... for Rs./$ ..... drawn in favour Of "JABALIPUR PUBLIC COLLEGE" payble at Jabalpur, towards subscription has been enclosed herewith.

Name : .....

Designation : ..... Qualification : .....

Subscription Year : 1 Year [ ] 2 Years [ ] 3 Years [ ]

Subscription Type : Individual [ ] Institutional [ ]

Delivery Address : .....

.....

Contact No. : ..... E-mail : .....

SUBSCRIPTION RATES

DURATIOON	INDIVIDUAL	INSTITUTIONAL	ROW (USD)
One Year	Rs. 1000	Rs. 1200	$ 50
Two Year	Rs. 1500	Rs. 1800	$ 75
Three Year	Rs. 2000	Rs. 2500	$ 100

Note :

1. Subscriptions are available for a whole volume (June & Dec.) only.
2. No cancellations are permitted.
3. Claims for missing issues can be made only within 45 days of publication date.
4. All legal disputes subject to Jabalpur Jurisdiction only.

SUBSCRIPTION ADDRESS

Subscription Manager
Emerging Research Journal
Jabalpur Public College
49, Karmeta Patan Road, Jabalpur
Madhaya Pradesh Pin-482002
erj.jpc@gmail.com
Cont : 0761-2688838, 9425154312

Get it photocopied for more subscription

OUR EDUCATIONIST

Since 1995

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

Shape your career with us

Facilities & Highlights

- Conference Hall
- Well Equipped Lab
- Library
- Wi-Fi Campus
- Canteen
- Career Guidance
- Sports & Games
- Campus Selection

- D.El.Ed.
- B.Ed.
- M.Ed.
- B.A.B.Ed.
- D.C.A.
- P.G.D.C.A.
- B.Sc. Nursing
- B.Sc. (Computer Science)
- B.Com. (Computer Application)
- B.A.LL.B.
- LL.B.

For More Information Contact

49, Karmeta, Patan Road, Ahead of Radio Station
Near R.T.O. Office, Jabalpur - 482002 (M.P.)
Ph. : 0761-2688838/9425154312/9826826822/
9425867903/9407359729
E-mail : erj.jpc@gmail.com
Website : www.erjjpc.org.in